विद्यालय

शिक्षक मार्गदर्शिका

सामाजिक अध्ययन

कक्षा 6

लेखिका :

रजनी गुप्ता

विद्यालय प्रकाशन

दिल्ली • मेरठ

© प्रकाशक

New Edition

मूल्य : ₹ 30:00

विषय-सूची

इकाई - I : विश्व

1. पृथ्वी और हमारा सौर परिवार 3
2. ग्लोब और मानचित्र 7
3. पृथ्वी पर स्थानों की स्थिति 13
4. दिन-रात का होना 18
5. पृथ्वी की संरचना 25
6. भारत का भौतिक स्वरूप 31
7. भारत की जलवायु, प्राकृतिक वनस्पति तथा वन्य-जीवन 36

इकाई II : विश्व और भारतीय समाज

1. हमारा अतीत 43
2. आदिमानव-I 48
3. आदिमानव-II 54
4. सिंधु घाटी की सभ्यता 60
5. वैदिक काल (1500 ई.पू. - 600 ई.पू.) 66
6. भारत के प्राचीन राज्य (600 ई.पू. - 100 ई.पू.) 73
7. मौर्य साम्राज्य 78
8. गुप्त साम्राज्य (319 ई.पू. - 550 ई.पू.) 84
9. गुप्त शासकों के बाद का भारत 91
10. भारत के प्रमुख धर्म 96
11. भारत का विदेशों से सांस्कृतिक संबंध 100
12. प्राचीन काल में व्यापार, शिल्पकला और नगर 105
13. प्राचीन भारतीय स्थापत्य कला, चित्रकारी, विज्ञान एवं पुस्तकें 109

इकाई III : हमारा सामाजिक एवं राजनीतिक जीवन

1. विविधता के विषय में जानिए 115
2. विविधता और भेदभाव 120
3. हमारी सरकार 123
4. प्रजातंत्रात्मक सरकार के प्रमुख तत्त्व 126
5. ग्रामीण भारत में स्थानीय स्वशासन 129
6. ग्रामीण और शहरी भारत में जीविकोपार्जन के साधन 136

आदर्श प्रश्न-पत्र : I, II व III **141**

1

इकाई 1 : विश्व

पृथ्वी और हमारा सौर परिवार

रचनात्मक कार्य

1. सही विकल्प पर सही (✓) का निशान लगाइए :

(i) (a) 8 (ii) (b) पीला (iii) (c) शुक्र

(iv) (a) मंगल (v) (b) 365¼ दिन में (vi) (b) 365¼

2. उचित शब्दों के द्वारा निम्नलिखित वाक्यों को पूरा कीजिए :

(i) तारा (ii) प्रोक्सिमा सेंचुरी (iii) पुच्छल तारा

(iv) नीहारिकाएँ (v) प्लूटो

3. निम्नलिखित का सही मिलान कीजिए :

'अ'	'ब'
भोर का तारा	बुध
संध्या का तारा	शुक्र
सबसे छोटा ग्रह	बुध
सबसे बड़ा ग्रह	बृहस्पति
सबसे चमकीला ग्रह	शुक्र
चंद्रमा	उपग्रह

संकलित निर्धारण

1. निम्नलिखित प्रश्नों का उत्तर एक पंक्ति में दीजिए :

(i) हमारा सौरमंडल ग्रहों, क्षुद्रग्रहों, नीहारिकाओं, पुच्छल तारों, सूर्य, उपग्रहों तथा उल्काओं से मिलकर बना है। यह सौरमंडल ही 'सौर परिवार' कहलाता है।

(ii) सौर परिवार में आठ ग्रह हैं।

(iii) सबसे छोटा ग्रह बुध है।

(iv) सबसे बड़ा ग्रह बृहस्पति है।

(v) छोटे आकार वाले आकाशीय पिंड जो सूर्य तथा अपने ग्रहों के चारों ओर घूमते हैं, उपग्रह कहलाते हैं।

(vi) बुध ग्रह को भोर का तारा कहते हैं।

(vii) चमकीला गैसीय पिंड, जो तारा पुंजकों के सदृश दिखाई पड़ती है, नीहारिका कहलाती है।

(viii) पृथ्वी सूर्य का एक पूरा चक्कर लगाने में 365¼ दिन का समय लेती है।

2. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर लगभग चार पंक्तियों में दीजिए :

(i) पृथ्वी के उपग्रह का नाम चंद्रमा है। चंद्रमा पृथ्वी के काफी समीप है, इसलिए हम इसे स्पष्ट रूप से देख सकते हैं। चंद्रमा पृथ्वी का पूरा एक चक्कर लगाने में लगभग 271/3 दिन का समय लेता है। चंद्रमा पर कोई हवा और पानी नहीं है, इसलिए वहाँ कोई वातावरण भी नहीं है। इसका धरातल चट्टानों के टुकड़ों तथा धूल से आच्छादित है।

(ii) बृहस्पति और मंगल की कक्षाओं के मध्य, सूर्य के चारों ओर घूमने वाली छोटी-छोटी चट्टानों को क्षुद्रग्रह कहते हैं। इन्हें छोटे ग्रहों के नाम से भी जाना जाता है। लेकिन सही मायने में ये ग्रह नहीं हैं। ये आकाशीय पिंड आकाश में हजारों की संख्या में उपस्थित हैं। इनका व्यास 1 किमी से 6 किमी तक होता है।

(iii) लंबी पूँछ वाली तारों जैसी रचनाएँ पुच्छल तारे कहलाती हैं। ये गैसीय पदार्थों से बने होते हैं। ये अंडाकार पथ पर परिक्रमा करते हैं। रात्रि के समय आकाश में चमकते हुए ये अत्यंत सुंदर दिखाई पड़ते हैं।

(iv) उल्का पिंड पृथ्वी के वातावरण के समीप आते ही जलने शुरू हो जाते हैं और प्रकाश की चमक के साथ नीचे गिर पड़ते हैं। इन्हें टूटने वाले तारे या उल्काएँ कहा जाता है।

(v) **सौर परिवार के सदस्यों के नाम :** ग्रह, क्षुद्रग्रह, नीहारिकाएँ, पुच्छल तारे, सूर्य, उपग्रह तथा उल्काएँ।

किन्हीं दो का वर्णन :

ग्रह : जिन आकाशीय पिंडों का अपना कोई प्रकाश नहीं होता, वे तारों और सूर्य के प्रकाश से प्रकाशित होते हैं तथा साथ ही उनका ताप भी बढ़ता है। ऐसे आकशीय पिंडों को ग्रह कहते हैं। यह संख्या में आठ हैं तथा अपनी कक्षाओं में सूर्य के चारों ओर घूमते रहते हैं।

उपग्रह : ग्रहों के चारों ओर चक्कर लगाने वाले आकाशीय पिंड उपग्रह कहलाते हैं। ये केवल अपने ग्रहों के ही चक्कर नहीं लगाते बल्कि सूर्य की परिक्रमा भी करते हैं। चंद्रमा, पृथ्वी का एकमात्र उपग्रह है।

3. निम्नलिखित प्रश्नों का उत्तर लगभग 8 पंक्तियों में दीजिए :

(i) **पुच्छल तारे :** लंबी पूँछ वाली तारों जैसी रचनाएँ पुच्छल तारे कहलाती हैं। ये गैसीय पदार्थों से बने होते हैं। ये अंडाकार पथ पर परिक्रमा करते हैं। रात्रि के समय आकाश में चमकते हुए ये अत्यंत सुंदर दिखाई पड़ते हैं।

क्षुद्रग्रह : बृहस्पति और मंगल की कक्षाओं के मध्य, सूर्य के चारों ओर घूमने वाली छोटी-छोटी चट्टानों को क्षुद्रग्रह कहते हैं। इन्हें छोटे ग्रहों के नाम से भी जाना जाता है। लेकिन सही मायने में ये ग्रह नहीं हैं। ये आकाशीय पिंड आकश में हजारों की संख्या में उपस्थित हैं। इनका व्यास 1 किमी से 6 किमी तक होता है।

उपग्रह : छोटे आकार वाले आकाशीय पिंड जो सूर्य तथा अपने ग्रहों के चारों ओर घूमते हैं, उपग्रह कहलाते हैं।

(ii) पृथ्वी को अनोखा ग्रह कहा जाता है, क्योंकि पृथ्वी ही एकमात्र ऐसा ग्रह है जिस पर जीवन पाया जाता है। पृथ्वी पर जल और वायु की उपस्थिति के कारण ही हम जीवित रह पाते हैं। वायु में ऑक्सीजन और कार्बन डाइऑक्साइड पायी जाती है, जिनके कारण पृथ्वी पर जीवन संभव है। इसका दो-तिहाई भाग जल से भी ढका है, इसीलिए इसे नीला ग्रह भी कहते हैं।

(iii) **चंद्रमा की विभिन्न कलाएँ :** चंद्रमा पृथ्वी का एक प्रकाशविहीन उपग्रह है और यह सूर्य के प्रकाश से प्रकाशमान है, इसलिए जब सूर्य का प्रकाश इसके आधे भाग पर पड़ता है तो इसके आकार के कारण इसका आधा भाग अँधेरे में डूबा रहता है तथा हम इसके प्रकाशित भाग को घटते या बढ़ते हुए देख सकते हैं। कभी-कभी यह अर्द्धचंद्र या पूर्णचंद्र की तरह दिखाई देता है। चंद्रमा के बढ़ते और घटते हुए आकारों को कलाएँ कहते हैं। उन्हें नवचंद्र या द्वितीय का चंद्रमा, अर्द्धचंद्र तथा पूर्ण चंद्र के रूप में देखा जा सकता है।

(iv) सूर्य एक विशाल आकार वाला, दहकने वाला तथा चमकने वाला तारा है। यह पृथ्वी के समीप स्थित है। यह गर्म गैसों से बना है, जिसके कारण प्रकाश और ऊष्मा उत्सर्जित करता रहता है। इसका व्यास 14,00,000 किमी है।

ऐसा विश्वास किया जाता है कि सूर्य का निर्माण अंतरिक्ष में विद्यमान नीहारिकाओं के कारण हुआ है।

(v) मानव-निर्मित उपग्रह को कृत्रिम उपग्रह के नाम से भी जाना जाता है।म ानवन ेस् वनिर्मितउ पग्रहोंक ोअ ंतरिक्षत थाब्र ह्मांडस ंबंधी गतिविधियों की सूचनाएँ एकत्रित करने के लिए या संचार सक्रियता हेतु आकाश में प्रक्षेपित किया। इसे रॉकेट द्वारा पृथ्वी की कक्षा में ले जाया जाता है। इनसेट 1ए, 1बी, आई.एस.एस. इसी प्रकार के उपग्रह हैं। इन उपग्रहों की सहायता से मौसम संबंधी भविष्यवाणियाँ की जाती हैं।

(vi) **आकाश गंगा :** आकाश में कहीं-कहीं तारों के मध्य बहुत ही कम स्थान होता है, जिसमें वे सफेद रंग के चमकीले मार्ग की भाँति दिखाई पड़ते हैं और इसे आकाश गंगा कहते हैं।

तारे : वे आकाशीय पिंड जो स्वयं के प्रकाश से प्रकाशित होते हैं, तारे कहलाते हैं। वे भी ऊष्मा उत्पन्न करते हैं। आकाश में असंख्य तारे हैं। रात्रि में स्वच्छ आकाश में हम उन्हें स्पष्ट रूप से आकाश में

देख सकते हैं। यद्यपि दिन के समय में भी तारे आकाश में रहते हैं, परंतु सूर्य के प्रकाश के कारण हम उन्हें नहीं देख पाते। वे आकाश में बहुत बड़े होते हैं तथा ये अत्यधिक गर्म गैसों से युक्त होते हैं। इसलिए वे अधिक मात्रा में ऊष्मा और प्रकाश उत्सर्जित करते हैं। कुछ तारे आकाश में सूर्य से छोटे होते हैं, जबकि कुछ बड़े।

2 ग्लोब और मानचित्र

रचनात्मक निर्धारण

1. सही विकल्प पर सही (✓) का निशान लगाइए :

(i) (a) अक्ष (ii) (d) अनेक (iii) (a) पैमाना
(iv) (d) इन सभी से (v) (c) भौतिक

2. उचित शब्दों द्वारा निम्नलिखित वाक्यों को पूरा कीजिए :

(i) ग्लोब (ii) अक्ष (iii) एटलस
(iv) योजना

3. निम्नलिखित भौगोलिक प्रतीकों (चिह्नों) को पहचानिए तथा इनका नाम लिखिए :

राजधानी (राज्य), नेरोगेज रेलवे लाइन, प्रकाश घर, वृक्ष, गाँव।

4. सत्य या असत्य बताइए :

(i) सत्य (ii) सत्य (iii) सत्य (iv) सत्य
(v) सत्य

5. निम्नलिखित को सुमेल कीजिए :

'अ'	'ब'
मानचित्र/रेखाचित्र	भौतिक लक्षणों की ड्राइंग
एटलस	मानचित्रों की एक पुस्तक
पर्वत	चट्टानी उच्च भू-आकृतियाँ
दूरी	दो स्थानों के बीच की खाली जगह
खाका	स्मृति पर आधारित ड्राइंग

संकलित निर्धारण

1. निम्नलिखित प्रश्नों का उत्तर एक पंक्ति में दीजिए :

(i) ग्लोब पृथ्वी का छोटा गोलाकार प्रतिरूप (मॉडल) है।

(ii) पृथ्वी या उसके किसी भाग का समतल कागज, प्लास्टिक या धरातल पर एक विशेष अनुपात में पैमाने पर आधारित लघु चित्रण मानचित्र कहलाता है।

(iii) मानचित्रप र ि कन्हींद ो ि बंदुओंव ेब ीचक ीद ूरीअ ौरप ृथ्वीव े धरातल पर उन्हीं दो बिंदुओं के बीच की वास्तविक दूरी का अनुपात पैमाना कहलाता है।

(iv) पृथ्वी पर कोई भी स्थान, क्षेत्र, मार्ग, इत्यादि का पता लगाने के लिए जिस इकाई का प्रयोग किया जाता है, दिशा कहलाती है।

(v) दिशाएँ चार होती हैं—पूरब, पश्चिम, उत्तर, दक्षिण।

(vi) चिह्न या छोटे आकार के चित्र प्रतीक कहलाते हैं।

(vii) बड़े पैमाने पर छोटे क्षेत्र का खाका योजना कहलाता है।

2. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर लगभग चार पंक्तियों में दीजिए :

(i) मानचित्र के तीन महत्त्वपूर्ण घटक हैं—दूरी, दिशा एवं प्रतीक।

दूरी : मानचित्र पर दो शहरों या शहरों तथा शहरों, तथा गाँवों तथा गाँवों के बीच की दूरी को पैमाने के द्वारा दर्शाया जाता है। मानचित्र पर दूरी तथा भूमि पर दूरी के अनुपात को पैमाना कहते हैं।

दिशा : पृथ्वी पर चार दिशाएँ होती हैं—पूरब, पश्चिम, उत्तर, दक्षिण। मानचित्र में सीधे हाथ के कोने पर 'N' अक्षर उत्तर दिशा को दर्शाता है, इसे उत्तरी रेखा कहते हैं। 'N' की सहायता से हम अन्य दिशाओं को भी ज्ञात कर सकते हैं।

प्रतीक : नदियों, झीलों, रेल लाइनों, शहरों, पर्वतों इत्यादि विभिन्न प्रकार के चिह्नों एवं प्रतीकों के द्वारा इन भौगोलिक रचनाओं को मानचित्र में यथास्थान दर्शाया जाता है।

(ii) पृथ्वी पर चार दिशाएँ होती हैं–पूरब, पश्चिम, उत्तर, दक्षिण। मानचित्र में सीधे हाथ के कोने पर 'N' अक्षर उत्तर दिशा को दर्शाता है। इसे उत्तरी रेखा कहते हैं। 'N' की सहायता से हम अन्य दिशाओं को भी ज्ञात कर सकते हैं और इन्हें हम मुख्य बिंदु भी कहते हैं। चारों दिशाओं के मध्य चार उपदिशाएँ हैं–दक्षिण-पूर्व, उत्तर-पश्चिम, उत्तर-पूर्व तथा दक्षिण-पश्चिम।

(iii)

क्र.सं.	छोटे पैमाने के मानचित्र	बड़े पैमाने के मानचित्र
1.	बड़े क्षेत्र की भू-आकृतियों को दिखाने के लिए इन पैमानों का प्रयोग किया जाता है।	इन मानचित्रों पर छोटे क्षेत्रों केभ ौतिकत थास ांस्कृतिक लक्षणों को एक साथ प्रदर्शित किया जा सकता है।
2.	इन मानचित्रों के द्वारा महाद्वीपोंय ाद ेशोंव ेस मूहों को प्रदर्शित किया जा सकता है।	इन पैमानों की सहायता से छोटे क्षेत्रों को बड़े आकार में प्रदर्शित किया जा सकता है।
3.	ये मानचित्र भौगोलिक तथ्यों को अधिक स्पष्टता के साथ प्रदर्शित नहीं करते हैं।	ये मानचित्र भौगोलिक तथ्यों को अधिक स्पष्टता के साथ प्रदर्शित करते हैं।

(iv) स्थानीय परीक्षण और स्मृति पर आधारित बिना पैमाने की सहायता के बनाई गई रचना रेखाचित्र या खाका कहलाती है। कच्चा/खाका किसी पैमाने पर आधारित नहीं होता और इस रेखाचित्र या खाके को रेखा मानचित्र कहते हैं।

3. निम्नलिखित प्रश्नों का उत्तर लगभग 8 पंक्तियों में दीजिए :

(i) पृथ्वी पर चार दिशाएँ होती हैं–पूरब, पश्चिम, उत्तर, दक्षिण। मानचित्र में सीधे हाथ के कोने पर 'N' अक्षर उत्तर दिशा को दर्शाता है। इसे उत्तरी रेखा कहते हैं। 'N' की सहायता से हम अन्य दिशाओं को भी ज्ञात कर सकते हैं और इन्हें हम मुख्य बिंदु भी कहते हैं। चारों दिशाओं के मध्य चार उपदिशाएँ हैं–दक्षिण-पूर्व, उत्तर-पश्चिम, उत्तर-पूर्व तथा दक्षिण-पश्चिम।

इन उपदिशाओं को मध्यवर्ती दिशाएँ कहते हैं।

(ii) मानचित्र कई प्रकार के होते हैं, जिनमें प्रमुख प्रकार के मानचित्र निम्नलिखित हैं–

(क) भौतिक मानचित्र : जिन मानचित्रों में पर्वत, पहाड़, मैदान, पठार,न दियाँ,ख ाड़ियाँ,स मुद्रअ ादिप्रदर्शित कएज ातेह ैं,उ न्हें भौतिक या उच्चावच मानचित्र कहते हैं। ये हमें पृथ्वी के भौतिक लक्षणों का ज्ञान कराते हैं।

(ख) राजनीतिक मानचित्र : जिन मानचित्रों में गाँव, कस्बे, शहर, राष्ट्र, राज्य, राज्यों एवं राष्ट्रों की राजधानियाँ तथा उनकी सीमाएँ प्रदर्शित की जाती हैं, वे राजनीतिक मानचित्र कहलाते हैं।

(ग) विषयक मानचित्र : वे मानचित्र, जो जलवायु, मौसम, दाब, मानसून, वर्षा, पवनों की दिशाएँ, वन, फसल, खनिज संपदा, औद्योगीकरण आदि को प्रदर्शित करते हैं, विषयक मानचित्र कहलाते हैं।

(घ) चिह्न या छोटे आकार के चित्र प्रतीक कहलाते हैं।

बड़ी रेलवे लाइन :

मंदिर :

मसजिद :

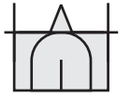

बाँध :

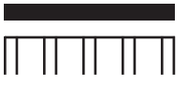

4. निम्नलिखित में अंतर स्पष्ट कीजिए :

(i) **मानचित्र और ग्लोब**

क्र.सं.	मानचित्र	ग्लोब
1.	पृथ्वी या उसके किसी भाग से समतल कागज, प्लास्टिक या धरातल पर एक विशेष अनुपात में पैमाने पर आधारित लघु चित्रण मानचित्र कहलाता है।	ग्लोब पृथ्वी का छोटा गोलाकारप्रतिरूप(मॉडल) है, जो पृथ्वी के भौतिक लक्षणों को प्रदर्शित करता है।
2.	मानचित्र को एक जगह से दूसरी जगह आसानी से ले जाया जा सकता है।	ग्लोब को एक जगह से दूसरी जगह आसानी से नहीं ले जाया जा सकता।
3.	मानचित्र में अधिक सूचनाएँ एकत्रित होती हैं।	ग्लोब अनेक महत्त्वपूर्ण भौगोलिक तथ्यों को प्रदर्शित नहीं करते।

(ii) खाका और योजना :

	खाका	योजना
	स्थानीय परीक्षण और स्मृति पर आधारित बिना पैमाने की सहायता के बनाई गई रचना रेखाचित्र या खाका कहलाती है।	बड़े पैमाने पर आधारित छोटे क्षेत्र का चित्रांकन योजना कहलाती है।

(iii) वृहद् पैमाने वाले मानचित्र और लघु पैमाने वाले मानचित्र

क्र.सं.	छोटे पैमाने के मानचित्र	बड़े पैमाने के मानचित्र
1.	बड़े क्षेत्र की भू-आकृतियों को दिखाने के लिए इन पैमानों का प्रयोग किया जाता है।	इन मानचित्रों पर छोटे क्षेत्रों के भौतिकत थास ंस्कृतिक लक्षणों को एक साथ प्रदर्शित किया जा सकता है।
2.	इन मानचित्रों के द्वारा महाद्वीपोंय ादेशोंवेन्स मूहों को प्रदर्शित किया जा सकता है।	इन पैमानों की सहायता से छोटे क्षेत्रों को बड़े आकार में प्रदर्शित किया जा सकता है।
3.	ये मानचित्र भौगोलिक तथ्यों को अधिक स्पष्टता के साथ प्रदर्शित नहीं करते हैं।	ये मानचित्र भौगोलिक तथ्यों को अधिक स्पष्टतया के साथ प्रदर्शित करते हैं।

(iv) राजनीतिक मानचित्र और प्रकरण संबंधी मानचित्र

राजनीतिक मानचित्र	प्रकरण संबंधी मानचित्र
जिन मानचित्रों में गाँव, कस्बे, शहर, राष्ट्र, राज्य, राज्यों एवं राष्ट्रों की राजधानियाँ तथा उनकी सीमाएँ प्रदर्शित की जाती हैं, वे राजनीतिक मानचित्र कहलाते हैं।	वे मानचित्र, जो जलवायु, मौसम, दाब, मानसून, वर्षा, पवनों की दिशाएँ, वन, फसल, खनिज संपदा, औद्योगीकरण आदि को प्रदर्शित करते हैं, विषयक मानचित्र प्रकरण संबंधी मानचित्र कहलाते हैं।

5. निम्नलिखित के उचित कारण दीजिए :

(i) मानचित्रों में परंपरागत चिह्नों का प्रयोग विभिन्न भौगोलिक रचनाओं को उनकी छोटी अवस्था में प्रदर्शित करने के लिए किया जाता है।

(ii) मानचित्र में सीधे हाथ के कोने पर 'N' अक्षर उत्तर दिशा को

दर्शाता है। इसे उत्तरी रेखा कहते हैं। 'N' की सहायता से मानचित्र में हम अन्य दिशाओं को भी ज्ञात कर सकते हैं। अत: मानचित्रों में स्थानों की जानकारी को आसानीपूर्वक ज्ञात करने के लिए दिशाओं का प्रयोग किया जाता है।

(iii) बड़ी भू-आकृतियों को लघु पैमाने वाले मानचित्रों से दिखाया जाता है, क्योंकि इन बड़ी-भू-आकृतियों ; जैसे–महाद्वीप, महासागर, देश, रेगिस्तान आदि को एक साथ बड़े पैमाने वाले मानचित्र पर प्रदर्शित नहीं किया जा सकता।

3 पृथ्वी पर स्थानों की स्थिति

रचनात्मक निर्धारण

1. सही विकल्प पर सही (✓) का निशान लगाइए :

(i) (a) 180° (ii) (b) 360 (iii) (c) भूमध्य रेखा

(iv) (b) लंदन (v) (a) 180° याम्योत्तर

(vi) (a) 23½° उ. समान्तर

2. निम्नलिखित को सुमेल कीजिए :

'अ'	'ब'
मकर रेखा	23½° द.
कर्क रेखा	23½° उ.
उत्तरी ध्रुव वृत्त	66½° उ.
दक्षिणी ध्रुव वृत्त	66½° द.
भूमध्य रेखा	0°

3. सत्य या असत्य बताइए :

(i) असत्य (ii) असत्य (iii) असत्य (iv) सत्य

(v) असत्य

4. निम्नलिखित कथनों के लिए नाम लिखिए :

(i) देशांतर रेखाएँ (ii) अक्षांशीय रेखाएँ

(iii) स्थानीय समय (iv) नामक समय

(v) अत्युष्ण कटिबंध

संकलित निर्धारण

1. एक पंक्ति में उत्तर दीजिए :

(i) पृथ्वी को दो बराबर गोलार्द्धों में विभाजित करने वाली काल्पनिक रेखा भूमध्य रेखा कहलाती है।

(ii) उत्तर से दक्षिण की ओर खींची जाने वाली काल्पनिक रेखा देशांतर कहलाती है।

(iii) उत्तरी गोलार्द्ध में भूमध्य रेखा के 23½° अक्षांश उत्तर में कल्पित रेखा कर्क रेखा कहलाती है।

(iv) दक्षिणी गोलार्द्ध में भूमध्य रेखा के 23½° अक्षांश दक्षिण में कल्पित रेखा मकर रेखा कहलाती है।

(v) कर्क रेखा और मकर रेखा का मध्य भाग अत्युष्ण कटिबंध कहलाता है।

(vi) कर्क रेखा और उत्तरी ध्रुव वृत्त तथा मकर रेखा और दक्षिणी ध्रुव वृत्त के बीच वाला भाग, जहाँ की जलवायु शीतोष्ण है, शीतोष्ण कटिबंध कहलाता है।

(vii) किसी निश्चित स्थान पर सूर्य के द्वारा बनाए गए कोण से निर्धारित समय स्थानीय समय कहलाता है।

(viii) विशेष देशांतर के स्थानीय समय को मानक समय कहते हैं।

(ix) कर्क रेखा उत्तरी गोलार्द्ध से होकर गुजरती है।

(x) विश्व में 24 समय कटिबंध हैं।

(xi) रूस में 11 मानक समय हैं।

2. चार पंक्तियों में उत्तर :

(i) उत्तरी ध्रुव और दक्षिणी ध्रुव के मध्य सभी क्षैतिज रेखाएँ अक्षांशीय रेखाएँ हैं तथा ये सभी भूमध्य रेखा के समानान्तर हैं। इसलिए इन्हें

अक्षांशीय समांतर रेखाएँ कहते हैं।

(ii) कर्क रेखा और मकर रेखा के मध्य भाग में वर्ष भर सूर्य की किरणें सीधी पड़ती हैं, जिससे यह भाग अत्यधिक गर्मी प्राप्त करता है और अत्युष्ण कटिबंध कहलाता है। इसे उष्ण कटिबंध के नाम से भी जानते हैं।

(iii) रेखा, जो पृथ्वी को पूर्वी गोलाद्‌र्ध तथा पश्चिमी गोलाद्‌र्ध में विभाजित करती है, शून्य देशांतर कहलाती है।

(iv) देशांतर विशेष के स्थानीय समय को मानक समय कहते हैं। मानक समय एक प्रामाणिक देशांतर का स्थानीय समय होता है। भारत में 82½° पूर्वी देशांतर, जो इलाहाबाद के निकट नैनी से गुजरती है, के समय को मानक समय माना गया है।

(v) अक्षांश रेखाओं के एक-दूसरे को पार करने से बने जाल को ग्रिड कहते हैं। इस ग्रिड में वह बिंदु, जहाँ अक्षांशीय रेखा तथा देशांतर याम्योत्तर एक-दूसरे को पार करते हैं; किसी शहर, कस्बे या गाँव की स्थिति को दर्शाता है।

(vi) 180°य ाम्योत्तर,अ ंतर्राष्ट्रीय तिथि रेखाक हलातीह ै।अ ंतर्राष्ट्रीय तिथि रेखा अक्षांश याम्योत्तर से 180 पूर्व या पश्चिम के अनुरूप है, जो ग्रीनविच मेरिडियन के सामने पड़ती है।

(vii) यूनाइटेड किंगडम का मानक समय, ग्रीनविच मध्यमान समय (GMT) कहलाता है, जो याम्योत्तर (लंदन के पास ग्रीनविच नामक शहर से गुजरने वाली) के स्थानीय समय पर आधारित है।

(viii) उत्तरी ध्रुव और दक्षिणी ध्रुव के भागों के समीप 66½° अक्षांश रेखा से ध्रुवों तथा सूर्य की किरणें बहुत तिरछी पड़ती हैं, जिससे यह क्षेत्र बर्फ से जमा रहता है तथा जलवायु शीत होती है। इन्हें शीत कटिबंध के नाम से जाना जाता है।

3. 8 पंक्तियों में उत्तर :

(i) **अक्षांशीय रेखाएँ :** उत्तरी ध्रुव और दक्षिणी ध्रुव के मध्य सभी क्षैतिज रेखाएँ अक्षांशीय रेखाएँ हैं तथा ये सभी भूमध्य रेखा के समानान्तर हैं। इसीलिए इन्हें अक्षांशीय रेखाएँ कहते हैं। अक्षांशीय

रेखाएँ दो प्रकार की होती हैं–प्रथम उत्तरी अक्षांश रेखाएँ; दूसरी, दक्षिणी अक्षांश रेखाएँ।

देशांतरीय रेखाएँ : धरातल पर उत्तरी ध्रुव से दक्षिणी ध्रुव तक काल्पनिक भूमध्य रेखा के लम्बवत् रेखाओं को देशांतरीय रेखाएँ कहते हैं। ये सभी देशांतर ध्रुवों पर एक साथ मिलते हैं।

(ii) **स्थानीय समय :** किसी स्थान पर समय को ज्ञात करने के लिए देशांतर अक्षांश बहुत सहायक हैं। सूर्य जब किसी स्थान के ग्रीनविच समय के ठीक करीब होता है तो स्थानीय समय इस बात पर निर्भर करता है कि स्थान ग्रीनविच के पूर्व में स्थित है या पश्चिम में।

वे स्थान, जो ग्रीनविच के पूर्व में स्थित हैं, सर्वप्रथम सूर्य का प्रकाश प्राप्त करते हैं। पृथ्वी अपनी धुरी पर ग्रीनविच से 360 देशांतर को पार करती हुई एक चक्कर 24 घंटे में पूरा करती है या 15° 1 घंटे में या 1° देशांतर 4 मिनट में पूरा करती है।

(iii) अंक्षाशों के प्रमुख प्रकार निम्नलिखित हैं–

(क) मकर रेखा : दक्षिणी गोलार्द्ध में भूमध्य रेखा को 23½° अक्षांश दक्षिण में कल्पित रेखा मकर रेखा कहलाती है।

(ख)क र्कर ेखा: उत्तरी गोलार्द्ध में भूमध्य रेखा के 23½° अक्षांश उत्तर में कल्पित रेखा कर्करेखा कहलाती है।

(ग) उत्तरी ध्रुव वृत्त : उत्तरी गोलार्द्ध में भूमध्य रेखा के 66½° अक्षांश उत्तर में कल्पित रेखा उत्तरी ध्रुव वृत्त कहलाता है।

(घ) दक्षिणी ध्रुव वृत्त : दक्षिणी गोलार्द्ध में भूमध्य रेखा के 66½° अक्षांश दक्षिण में कल्पित रेखा दक्षिणी ध्रुव वृत्त कहलाती है।

(iv) विश्व में तीन उष्ण कटिबंध पाए जाते हैं, जिनका वर्णन निम्नलिखित है–

(क) अत्युष्ण कटिबंध : कर्क रेखा और मकर रेखा के मध्य भाग में वर्षभर सूर्य की किरणें सीधी पड़ती हैं, जिससे यह भाग

अत्यधिक गर्मी प्राप्त करता है और अत्युष्ण कटिबंध कहलाता है। इसे उष्ण कटिबंध के नाम से भी जानते हैं।

(ख) शीतोष्ण कटिबंध : सूर्य की किरणें, उत्तरी गोलार्द्ध में कर्क रेखा, से उत्तरी ध्रुव वृत्त तक तथा दक्षिणी गोलार्द्ध में मकर रेखा से दक्षिणी ध्रुव वृत्त तक कभी भी लम्बवत् नहीं पड़ती, जिसके कारण इन भागों का ताप स्थिर रहता है और इस भाग को शीतोष्ण कटिबंध कहते हैं।

(ग) शीत कटिबंध : उत्तरी ध्रुव और दक्षिणी ध्रुव के भागों के समीप 66½° अक्षांश रेखा से ध्रुवों तथा सूर्य की किरणें बहुत तिरछी पड़ती हैं, जिससे यह क्षेत्र बर्फ से जमा रहता है तथा जलवायु शीत होती है। इन्हें शीत कटिबंध के नाम से जाना जाता है।

(v) पृथ्वी पर 360 देशांतर रेखाएँ हैं। पृथ्वी अपने अक्ष पर 24 घंटे में एक पूरा चक्कर लगाती है। इसका तात्पर्य है कि 360 देशांतरों के बीच से 24 घंटे में एक बार गुजरती है। दो देशांतरों के मध्य समयांतर को निम्नलिखित प्रकार से आंकलित करेंगे–

$$\frac{360^\circ}{24} = 15^\circ/\text{घंटा}$$

$$\frac{60^\circ}{15} = 4^\circ \text{ मिनट} = 1^\circ \text{ में } 4 \text{ मिनट}$$

$$\frac{24\times60^\circ}{360} = 4 \text{ मिनट}$$

(∴ 1 घंटा = 60 मिनट)

4. निम्नलिखित की व्याख्या कीजिए :

(i) **अक्षांश :** ग्लोब पर पश्चिम से पूरब की ओर खींची गई काल्पनिक रेखा जिसे अंश में प्रदर्शित किया जाता है, अक्षांश कहलाता है।

(ii) **देशांतर :** उत्तर से दक्षिण की ओर खींची जाने वाली काल्पनिक रेखा देशांतर कहलाती है।

(iii) **मानक समय :** विशेष देशांतर के, स्थानीय समय को मानक समय कहते हैं।

(iv) **स्थानीय समय :** किसी निश्चित स्थान पर सूर्य के द्वारा बनाए गए कोण से निर्धारित समय स्थानीय समय कहलाता है।

(v) **ग्रीनविच मिन टाइम :** यूनाइटेड किंगडम का मानक समय, ग्रीनविच मध्यमान समय (GMT) कहलाता है, जो याम्योत्तर (लंदन के पास ग्रीनविच नामक शहर से गुजरने वाली) के स्थानीय समय पर आधारित है।

4 दिन-रात का होना

रचनात्मक निर्धारण

1. सही विकल्प पर सही (✓) का निशान लगाइए :

(i) (a) 24 घंटे (ii) (a) 21 जून

(iii) (d) इनमें से कोई नहीं (vi) (d) फरवरी

(v) (c) 23 सितंबर

2. निम्नलिखित को सुमेल कीजिए :

'अ'	'ब'
सबसे लंबा दिन	21 जून
सबसे लंबी रात	2 दिसंबर
लौंद का वर्ष	366 दिन
विषुव	बराबर दिन-रात
दिन-रात का होना	पृथ्वी का घूर्णन

3. निम्नलिखित को पूरा कीजिए :

(i) 365¼ (ii) 24 (iii) 66½° (iv) पश्चिम

4. सत्य या असत्य बताइए :

(i) सत्य (ii) असत्य (iii) सत्य (iv) सत्य

(v) सत्य (vi) सत्य

संकलित निर्धारण

1. एक पंक्ति में उत्तर :

(i) पृथ्वी 24 घंटे में अपनी धुरी पर एक पूरा चक्कर लगाती है, जिसे पृथ्वी का घूर्णन कहते हैं।

(ii) पृथ्वी का सूर्य के चारों ओर अपने कक्षा-तल में घूमना परिक्रमण कहलाता है।

(iii) 21 मार्च तथा 23 सितंबर की तिथियाँ जब दिन-रात समान अवधि के होते हैं, विषुव कहलाता है।

(iv) पृथ्वी के घूर्णन का परिणाम दिन-रात का बनना है।

(v) परिक्रमण का परिणाम दिन-रात का छोटा-बड़ा होना तथा ऋतु परिवर्तन है।

(vi) लौंद के वर्ष में 366 दिन होते हैं।

(vii) 21 जून को उत्तरी ध्रुव सूर्य की ओर झुका रहता है। इस समय सूर्य की किरणें कर्क रेखा पर सीधी पड़ती हैं। यह स्थिति कर्क संक्रांति कहलाती है।

2. चार पंक्ति में उत्तर :

(i) **पृथ्वीक ाघ ूर्णन:** पृथ्वी 24 घंटे में अपनी धुरी पर एक पूरा चक्कर लगाती है, जिसे पृथ्वी का घूर्णन कहते हैं।

पृथ्वी का परिक्रमण : पृथ्वी का सूर्य के चारों ओर अपने कक्षा-तल में घूमना परिक्रमण कहलाता है।

(ii) वह स्थिति जब दिन-रात बराबर होते हैं, विषुव कहलाती है। इन दिनों सूर्य की किरणें भूमध्य रेखा पर सीधी पड़ती हैं, जिसके कारण दिन-रात समान होते हैं। 21 मार्च तथा 23 सितंबर को दिन-रात बराबर होते हैं।

(iii) पृथ्वी एक प्रकाशहीन ग्रह है, जो सूर्य के प्रकाश से प्रकाशित होती है। चूँकि यह अपनी धुरी पर घूमती है, इसलिए इसका जो आधा भाग सूर्य के सामने पड़ता है, वह प्रकाशित होता है तथा यह घटना दिन कहलाती है। इसके विपरीत, जिस आधे भाग पर प्रकाश नहीं पड़ता, वहाँ अंधेरा होता है तथा यह घटना रात कहलाती है। यह

भौगोलिक प्रक्रिया लगातार चलती रहती है तथा दिन के पश्चात् रात तथा रात के पश्चात् दिन होता रहता है।

(iii) पृथ्वी अपने कक्ष-तल पर 66½° कोण पर झुकी हुई है, जिसके कारण पृथ्वी सूर्य के चारों ओर घूमते हुए विभिन्न स्थितियों में रहती है। वर्ष के प्रथम छह माह तक उत्तरी गोलार्द्ध सूर्य की ओर झुका रहता है, जिसके परिणामस्वरूप दिन लंबे और गर्म होते हैं। इस क्षेत्र कीऋ तुक ोग र्मीक ित्रऋ तुक हाज ताह ै।इ सके विपरीत,इ सी समय दक्षिणी गोलार्द्ध में ठंड का प्रकोप जारी हरता है, जिसे शरद ऋतु के नाम से जाना जाता है। वर्ष के दूसरे छह माह के दौरान दक्षिणी गोलार्द्ध सूर्य की ओर झुका रहता है तथा यह गर्मी का अनुभव करता है। यह ऋतु ग्रीष्म ऋतु कहलाती है; जबकि उत्तरी गोलार्द्ध में इसी समय शरद ऋतु होती है।

3. आठ पंक्तियों में उत्तर :

(i) पृथ्वी के घूर्णन के मुख्य परिणाम निम्नलिखित हैं–

(क) दिन-रात का होना : पृथ्वी एक प्रकाशहीन ग्रह है, जो सूर्य के प्रकाश से प्रकाशित होती है। चूँकि यह अपनी धुरी पर घूमती है, इसलिए इसका जो आधा भाग सूर्य के सामने पड़ता है, वह प्रकाशित होता है तथा यह घटना दिन कहलाती है। इसके विपरीत, जिस आधे भाग पर प्रकाश नहीं पड़ता, वहाँ अंधेरा होता है तथा यह घटना रात कहलाती है। यह भौगोलिक प्रक्रिया लगातार चलती रहती है तथा दिन के पश्चात् रात तथा रात के पश्चात् दिन होता रहता है।

(ख) समय का मापन : पृथ्वी के घूर्णन के कारण समय की माप संभव हो पाती है। पृथ्वी अपनी धुरी पर एक पूरा चक्कर लगाने में 24 घंटों का समय लेती है, जो एक दिन-रात के बराबर है।

(ग) समय के विभिन्न काल : पृथ्वी का वह भाग, जो सूर्य के समक्ष आने को होता है, सूर्योदय का तथा जो भाग सूर्य के सामने से छिपने को होता है, वह सूर्यास्त का अनुभव करता है। पृथ्वी का वह भाग, जो सूर्य के ठीक सामने होता है, मध्याह्न तथा सूर्य के ठीक पीछे का भाग मध्यरात्रि कहलाता है।

(घ) ज्वार-भाटा का आना : सागरीय तटों पर स्थित स्थानों पर प्रतिदिन ज्वार-भाटा आता है; परंतु इसके आने का समय निश्चित नहीं होता। प्रत्येक ज्वार-भाटे के मध्य 132 मिनट का अंतर रहता है। इस अंतर का कारण पृथ्वी का घूर्णन है।

(ii) पृथ्वी पर मुख्यत: चार प्रकार की ऋतुएँ होती हैं, जिनका वर्णन निम्नलिखित है :

(क) बसंत : 21 मार्च को सूर्य भूमध्य रेखा के ठीक ऊपर होता है तथा उत्तरी शीतोष्ण कटिबंध में बसंत ऋतु होती है।

(ख) ग्रीष्म : 21 जून का सूर्य कर्क रेखा के ठीक ऊपर होता है तथा उत्तरी शीतोष्ण कटिबंध में ग्रीष्म ऋतु होती है।

(ग) पतझड़ : 23 सितंबर को सूर्य की किरणें भूमध्य रेखा की ओर पड़ने लगती हैं और उत्तरी शीतोष्ण कटिबंध में पतझड़ ऋतु होती है। पेड़ अपनी पत्तियों को नीचे गिरा देते हैं।

(घ) शरद : जब सूर्य मकर रेखा के ठीक ऊपर रहता है तो ताप की मात्रा में कमी होती है। इस ऋतु को उत्तरी शीतोष्ण कटिबंध में शीत ऋतु कहा जाता है।

(iii) **कर्क संक्रांति :** 21 जून को उत्तरी ध्रुव सूर्य की ओर झुका रहता है। इस समय सूर्य की किरणें कर्क रेखा पर सीधी पड़ती हैं। यह स्थिति कर्क संक्रांति कहलाती है।

इस दौरान उत्तरी गोलार्द्ध में दिन सबसे लंबे तथा रातें सबसे छोटी होती हैं।

मकर संक्रांति : 22 दिसंबर को पृथ्वी अपनी कक्षा के सिरे के विमुख होती है तथा दक्षिणी ध्रुव सूर्य के सम्मुख होता है। यह स्थिति मकर संक्रांति कहलाती है। उत्तरी गोलार्द्ध में दिन छोटे और रातें बड़ी होती हैं। दक्षिणी गोलार्द्ध में इसके ठीक विपरीत होता है।

(iv) **घूर्णन और परिक्रमण में अंतर :**

क्र.सं.	घूर्णन	परिक्रमण
1.	पृथ्वी 24 घंटे में अपनी धुरी परए कप ूराच क्करल गाती है, जिसे घूर्णन कहते हैं।	पृथ्वी का सूर्य के चारों ओर अपने कक्षा-तल में घूमने को परिक्रमण कहते हैं।
2.	पृथ्वी 24 घंटे (23 घंटे 56 मिनट तथा 40.91 सेकंड) में घूर्णन का एक चक्कर पूरा करती है।	परिक्रमण का एक पूरा चक्कर लगाने में पृथ्वी 365¼ दिन का समय लेती है।
3.	पृथ्वी के घूर्णन के परिणाम-स्वरूप दिन-रात बनते हैं। समय का मापन होता है, समय के विभिन्न काल बनते हैं तथा ज्वार-भाटा आता है।	परिक्रमण के परिणामस्वरूप दिन-रात छोटे-बड़े होते हैं तथा ऋतुएँ बनती हैं।

4. उचित कारण दीजिए :

(i) पृथ्वी पश्चिम से पूर्व की ओर घूमती है, अत: इसका अँधेरा भाग धीरे-धीरेस ूर्यव ेस ामनेअ ाताह ैत थाअ ाधाप्रकाशितभ ागद ूर चला जाता है। इस कारण दिन के बाद रात होती है।

(ii) प्रकाश वृत्त, विषुवत रेखा को सदैव दो बराबर भागों में विभाजित करता है, अत: विषुवत रेखा का प्रत्येक आधा भाग प्रकाशित रहता है। विषुवत रेखा के अतिरिक्त उत्तरी गोलार्द्ध तथा दक्षिणी गोलार्द्ध की सभी अक्षांश रेखाओं को प्रकाश वृत्त दो समान भागों में विभाजित नहीं करता। इसी कारण भूमध्य रेखा पर वर्षभर दिन-रात समान होते हैं।

(iii) पृथ्वी अपने कक्षा-तल पर सूर्य की परिक्रमा करती है, जिसके कारण पृथ्वी की स्थिति परिवर्तित होती रहती है। 22 दिसंबर को

सूर्य दक्षिणी गोलाद्ध में लम्बवत् चमकता है। इसलिए दक्षिणी गोलार्द्ध में अक्षांश रेखाओं का आधे से अधिक भाग प्रकाशित होता है। इसीलिए यहाँ रातों की अपेक्षा दिन अधिक लंबे होते हैं, जबकि उत्तरी गोलार्द्ध में रातें, दिनों की अपेक्षा अधिक लंबी होती हैं।

5. निम्नलिखित में अंतर स्पष्ट कीजिए :

(i) **घूर्णन और परिक्रमण :**

क्र.सं.	घूर्णन	परिक्रमण
1.	पृथ्वी 24 घंटे में अपनी धुरी परए कप ूराच क्करल गाती है, जिसे घूर्णन कहते हैं।	पृथ्वी का सूर्य के चारों ओर अपने कक्षा-तल में घूमने को परिक्रमण कहते हैं।
2.	पृथ्वी 24 घंटे (23 घंटे 56 मिनट तथा 40.91 सेकंड) में घूर्णन का एक चक्कर पूरा करती है।	परिक्रमण का एक पूरा चक्कर लगाने में पृथ्वी 365¼ दिन का समय लेती है।
3.	पृथ्वी के घूर्णन के परिणाम-स्वरूप दिन-रात बनते हैं। समय का मापन होता है, समय के विभिन्न काल बनते हैं तथा ज्वार-भाटा आता है।	परिक्रमण के परिणामस्वरूप दिन-रात छोटे-बड़े होते हैं तथा ऋतुएँ बनती हैं।

(ii) उपसौर और अपसौर

क्र.सं.	उपसौर	अपसौर
1.	पृथ्वी और सूर्य के मध्य दूरी वर्ष भर एक समान नहीं रहती। दिसंबर के महीने में यह दूरी सबसे कम होती है	जून माह में पृथ्वी सूर्य से अपेक्षतया ज्यादा दूर होती है। यह स्थिति अपसौर कहलाती है।

	तथा इस समय पृथ्वी सूर्य के सबसे समीप होती है। पृथ्वी की इस स्थिति को उपसौर कहते हैं।	
2.	इस स्थिति को रविनीच भी कहते हैं।	यह स्थिति रविच्च भी कहलाती है।

(iii) अयनकाल और विषुव

	अयनकाल	विषुवकाल
	वह समय जब सूर्य भूमध्य रेखा से अधिकतम दूरी पर रहता है, अयनकाल कहलाता है।	21 मार्च तथा 23 सितंबर की तिथियाँ जब दिन-रात समान अवधि के होते हैं, विषुव कहलाता है।

(iv) बसंत और पतझड़

क्र.सं.	बसंत	पतझड़
1.	21 मार्च को सूर्य भूमध्य रेखा के ठीक ऊपर होता है तथा उत्तरी शीतोष्ण कटिबंध में बसंत ऋतु होती है।	23 सितंबर को सूर्य की किरणें भूमध्य रेखा की ओर पड़ने लगती हैं और उत्तरी शीतोष्णक टिबंधम ंप तझड़ ऋतु होती है। पेड़ अपनी पत्तियों को नीचे गिरा देते हैं।

5 पृथ्वी की संरचना

रचनात्मक निर्धारण

1. सही विकल्प पर सही (✓) का निशान लगाइए :

(i) (d) निकिल तथा लोहा (ii) (a) प्रशांत महासागर में

(iii) (a) अफ्रीका में (iv) (b) उत्तरी अमेरिका में

(v) (d) समतापमंडल में

2. सत्य या असत्य बताइए :

(i) सत्य (ii) असत्य (iii) सत्य (iv) सत्य

(v) सत्य (vi) सत्य

3. रिक्त स्थानों की पूर्ति कीजिए :

(i) मोटाई (ii) सात (iii) यूरेशिया

(iv) अफ्रीका (v) मरुस्थल (vi) माउंट एवरेस्ट

4. निम्नलिखित को सुमेल कीजिए :

'अ'	'ब'
एशिया	विश्व का सबसे बड़ा महाद्वीप
ऑस्ट्रेलिया	विश्व का सबसे छोटा महाद्वीप
प्रशांत महासागर	सबसे बड़ा महासागर
माउंट एवरेस्ट	विश्व की सबसे ऊँची चोटी
सहारा	विश्व का सबसे बड़ा रेगिस्तान

संकलित निर्धारण

1. एक पंक्ति में उत्तर :

(i) मेंटल की सबसे परी परत, जो चट्टानों तथा खनिज पदार्थों से मिलकर बना है, स्थलमंडल कहलाता है।

(ii) पृथ्वी पर सात महाद्वीप हैं। ये महाद्वीप हैं–एशिया, यूरोप, अफ्रीका, उत्तरी अमेरिका, दक्षिणी अमेरिका, ऑस्ट्रेलिया तथा अंटार्कटिका।

(iii) पृथ्वी पर पाँच महासागर हैं। ये महासागर हैं–प्रशांत महासागर, हिंद महासागर, अटलांटिक महासागर, आर्कटिक महासागर, अंटार्कटिक महासागर।

(iv) पृथ्वी के चारों ओर मिश्रित गैसों और जलवाष्प का आवरण, जो 480 किमी की ऊँचाई तक फैला है, वायुमंडल कहलाता है।

(v) वह पर्यावरण जिसमें भूमि, जल और वायु सहित जीवों का निवास होता है तथा वे पर्यावरण के साथ क्रिया-प्रतिक्रिया करते हैं, जीवमंडल कहलाता है।

(vi) सबसे बड़ा महाद्वीप एशिया है।

(vii) सबसे छोटा महाद्वीप ऑस्ट्रेलिया है।

(viii) वायुमंडल की चार प्रमुख परतें हैं–क्षोभमंडल, मध्यमंडल, समताप मंडल तथा तापमंडल।

2. चार पंक्तियों में उत्तर :

(i) एशिया विश्व का सबसे बड़ा महाद्वीप है, जो संपूर्ण भू-भाग का 1/3 है। यह पूर्वी गोलार्द्ध में स्थित है तथा कर्क रेखा उसके बीच से गुजरती है। इसका विस्तार 10° दक्षिण सी 80° उत्तरी अक्षांशों तक तथा 25° पूर्वी से 170° पूर्वी देशांतर रेखाओं तक है। विश्व की सबसे ऊँची चोटी माउंट एवरेस्ट इसी में स्थित है। एशिया की प्रमुख नदियाँ गंगा, ब्रह्मपुत्र, यांग-टी, सिक्यांग तथा ह्वांग-हो हैं।

(ii) ऑक्सीजन वायुमंडल का एक घटक है, जो वायु में पाया जाता है। सभी जीव जीने के लिए ऑक्सीजन को सांस द्वारा अपने शरीर में ले जाते हैं; जबकि नाइट्रोजन जीवों की वृद्धि में सहायक है। कार्बन डाइऑक्साइड को पौधे भोजन के रूप में ग्रहण करते हैं तथा बदले में ऑक्सीजन छोड़ते हैं, जिसे जंतु सांस लेने में उपयोग में लाते हैं। पृथ्वी द्वारा विशिष्ट ऊष्मा का शोषण भी कार्बन डाइऑक्साइड द्वारा होता है। सूर्य किरणों के कारण ही वायुमंडल कोहरे, हवा, बादलों तथा वर्षा को जन्म देता है।

(iii) पृथ्वी का 70.8 प्रतिशत से भी ज्यादा भाग जल प्लवित है। इस तरह सेज लमंडलध रातलक ाज लस ेि घराह ुआए कब ड़ाभ ाागह ै। जलराशियों; जैसे–नदियाँ, झीलें, महासागर, समुद्र, ग्लेशियर, भूमिगत जल तथा जलवाष्प आदि सभी जलमंडल में सम्मिलित हैं।

(iv) महाद्वीपों के चारों ओर स्थित विशाल जलराशि को महासागर कहते हैं। महासागरों में विश्व में विद्यमान कुल जल का 97 प्रतिशत भाग पायाज ाताह ै।प ृथ्वीप रप ाँचम हासागरह ैं,ि जनकेन ाम–प्रशांत महासागर, हिंद महासागर, अटलांटिक महासागर, आर्कटिक महासागरत थाअ ंटार्कटिकम हासागरह ैं।प्र शांतम हासागरवि श्व का सबसे बड़ा और सबसे गहरा महासागर है।

(v) जैवमंडल का पौधों और जंतुओं के लिए बहुत ही ज्यादा महत्त्व है। इस परत में भूमि, जल और वायु सहित पेड़-पौधे निवास करते है तथा पर्यावरण के साथ क्रिया-प्रतिक्रिया करते हैं। इस मंडल में जीवन की समस्त प्रक्रियाएँ क्रियांवित होती हैं। हाथी और व्हेल जैसे विशालकाय प्राणियों से लेकर जीवाणु और सूक्ष्मजीव इसी मंडल में पाए जाते हैं। सभी पेड़-पौधों और जीव-जंतुओं का जीवन जैवमंडल पर ही निर्भर करता है और वे सभी एक-दूसरे से किसी-न-किसी प्रकार जुड़े हैं।

3. आठ पंक्तियों में उत्तर :

(i) पृथ्वी एक अनोखा ग्रह है। यह गोलाकार है तथा ध्रुवों पर वृत्ताकार एवं थोड़ी चपटी है। पृथ्वी का निर्माण तीन आंतरिक परतों से हुआ है। ये परतें हैं–भू-मंडल, मेंटल, बाह्य अंतरम तथा आंतरिक अंतरम। पृथ्वी की चार स्पष्ट परतें हैं–स्थलमंडल, वायुमंडल, जलमंडल तथा जैवमंडल। पृथ्वी पर भू-भाग की सबसे बड़ी इकाई को महाद्वीप कहते हैं। पृथ्वी पर सात बड़े महाद्वीप हैं। ये महाद्वीप हैं–एशिया,य ूरोप,अ फ्रीका,उ त्तरीअ मेरिका,द क्षिणीअ मेरिका, ऑस्ट्रेलिया तथा अंटार्कटिका। पृथ्वी पर स्थित स्थलमंडल का कुल

धरातलीय क्षेत्र 51,01,99,500 वर्ग किमी तथा भू-क्षेत्रफल 14,89,50,800 वर्ग किमी है। पृथ्वी का 70.8 प्रतिशत से भी ज्यादा भाग जलाप्लावित है। पृथ्वी पर पाँच महासागर स्थित हैं, जिनके नाम–प्रशांत महासागर, हिंद महासागर, अटलांटिक महासागर, आर्कटिक महासागर, अंटार्कटिक महासागर हैं।

(ii) अफ्रीका विश्व का दूसरा सबसे बड़ा महाद्वीप है, जो 2,97,85,000 वर्ग किमी में विस्तृत है। यह महाद्वीपों में अनोखा है क्योंकि इससे कर्क रेखा, मकर रेखा तथा भूमध्य रेखा तीनों गुजरती हैं। विश्व का सबसे बड़ा मरुस्थल सहारा अफ्रीका में ही स्थित है। नील, जम्बेजी, जायरे, नाइजर तथा कांगो अफ्रीका की प्रमुख नदियों में हैं। तंजानिया स्थिति किलिमंजारो नामक पर्वत चोटी अफ्रीका की सबसे ऊँची चोटी है। इसका विस्तार 37° उत्तरी तथा 35° दक्षिणी अक्षांशों और 18° पश्चिमी तथा 51° पूर्वी देशांतर रेखाओं के मध्य है। यह हिंद महासागर, लाल सागर, भूमध्य सागर तथा अटलांटिक महासागर से घिरा है। किम्बरले, सोने की प्रसिद्ध खाने भी यहीं हैं।

(iii) वायु में विभिन्न घनत्वों के कारण वायुमंडल को कई परतों में बाँटा गया है। वायुमंडल की चार स्पष्ट परतें निम्नलिखित हैं–

(क) क्षोभमंडल : यह परत धरातल के सबसे निकट की परत है तथा इसका विस्तार समुद्र तल से ऊपर की ओर 15 किमी तक है। इसमें जलवावाष्प, धूल कण तथा आर्द्रता आदि सीमित हैं।

(ख) समतापमंडल : यह परत समुद्र तल से 15 किमी तथा 50 किमी की ऊँचाई के बीच विस्तृत है। इसमें कोई जलवाष्प, धूल कण एवं बादल आदि नहीं पाए जाते। इसे ओजोन गैस की अधिकता के कारण ओजोन संपन्न परत भी कहते हैं।

(ग) आयनमंडल :य हप रतब हिर्मंडलअ ौरस मतापमंडलव ेे बीच स्थित है। यह परत 60 किमी से 400 किमी की ऊँचाई तक सीमित है।

(घ)तापमंडल: यह आयनमंडल के बीच की परत है तथा इसका तापमान 100° से. से अधिक होता है।

(iv) **जैवमंडल :** वह पर्यावरण जिसमें भूमि, जल और वायु सहित जीवों का निवास होता है तथा वे पर्यावरण के साथ क्रिया-प्रतिक्रिया करते हैं, जीवमंडल कहलाता है।

4. ऐसा क्यों है–

(i) पृथ्वी की आंतरिक अंतरम परत में निकिल तथा लोहा पाया जाता है, जिसके कारण यह चुंबक की भाँति व्यवहार करती है।

(ii) ब

(iii) बहुत वर्षों तक दुनिया के अन्य देशों अफ्रीका महाद्वीप के विषय में कोई ज्ञान नहीं था इसलिए इसे अँधेरा महाद्वीप कहा जाता था।

(iv) वैश्विक उष्णता हानिकारक प्रक्रिया है क्योंकि इसके कारण पर्यावरण में कार्बन डाइऑक्साइड तथा अन्य दूसरी हानिकारक गैसों का आयतन बढ़ रहा है।

5. निम्नलिखित में अंतर स्पष्ट कीजिए :

(i) **जलमंडल और स्थलमंडल**

क्र.सं.	जलमंडल	स्थलमंडल
1.	पृथ्वी का जल से घिरा हुआ भाग जलमंडल कहलाता है।	मेंटल की सबसे परी परत, जो चट्टानों तथा खनिज पदार्थों से मिलकर बना है, स्थलमंडल कहलाता है।
2.	पृथ्वी का 70.8 प्रतिशत से भी ज्यादा भाग जलाप्लावित है।	स्थलमंडल का कुल धरातलीय क्षेत्रफल 51,01,99,500 वर्ग किमी तथा भू-क्षेत्रफल 14,89,50,800 वर्ग किमी है।

(ii) समुद्र और झीलें

क्र.सं.	समुद्र	झीलें
1.	समुद्रए कि वशालर शिह, जिसका जल लवणीय होता है। इसमें विभिन्न प्रकार के घुलनशील तथा अघुलनशील लवण पाए जाते हैं।	धरातल पर रूके हुए पानी की विशाल जलराशि को झील कहते हैं।
2.	महासागरों में विश्व के कुल जल का 97.3 प्रतिशत भाग भरा पड़ा है।	विश्व में विद्यमान कुल जल का 0.0019 प्रतिशत भाग झीलों में पाया जाता है।

(iii) पर्यावरण और वातावरण (वायुमंडल)

पर्यावरण	वातावरण (वायुमंडल)
मानव जीवन को चारों ओर से घेरने वाली प्राकृतिक वस्तुओं के समूह को पर्यावरण कहते हैं।	पृथ्वी के चारों ओर मिश्रित गैसों और जलवाष्प का आवरण, जो 480 किमी की ऊँचाई तक फैला है, वातावरण (वायुमंडल) कहलाता है।

(iv) जलमंडल और जैवमंडल

क्र.सं.	जलमंडल	जैवमंडल
1.	पृथ्वी का जल से घिरा हुआ भाग जलमंडल कहलाता है।	वह पर्यावरण, जिमसें भूमि, जल और वायु सहित जीवों का निवास होता है तथा वे पर्यावरण के साथ क्रिया-प्रतिक्रिया करते हैं, जैवमंडल कहलाता है।

2.	पृथ्वी का 70.8 प्रतिशत से भी ज्यादा भाग जलाप्लावित है।	हाथी और व्हेल जैसे विशालकाय प्राणियों से लेकर जीवाणु और सूक्ष्मजीव इसी मंडल में पाए जाते हैं।

6 भारत का भौतिक स्वरूप

रचनात्मक निर्धारण

1. सही विकल्प पर सही (✓) का निशान लगाइए :

(i) (a) एशिया (ii) (b) ऑस्ट्रेलिया (iii) (d) 28

(iv) (b) रेगिस्तान (v) (b) K2 (vi) (c) स्पंज से

2. निम्नलिखित को सुमेल कीजिए :

'अ'	'ब'
गॉडविन ऑस्टिन	भारत की सर्वोच्च पर्वत चोटी
सुंदरवन	भारत का सबसे बड़ा डेल्टा
लक्षद्वीप	संघशासित प्रदेश
राजस्थान	क्षेत्रफल की दृष्टि से भारत का सबसे बड़ा राज्य
उत्तर प्रदेश	जनसंख्या की दृष्टि से भारत का सबसे बड़ा राज्य
सुनामी	समुद्र की विकराल लहरें

3. रिक्त स्थानों की पूर्ति कीजिए :

(i) हिमालय (ii) उपजाऊ (iii) मालवा

(iv) ताप्ती नदियाँ (v) सुंदरवन (vi) बंगाल की खाड़ी

4. सत्य या असत्य बताइए :

(i) सत्य (ii) सत्य (iii) असत्य

(iv) सत्य (v) सत्य (vi) सत्य

6. निम्नलिखित का नाम लिखिए :

(i) सुंदरवन (ii) गंगा-ब्रह्मपुत्र का मैदान

(iii) पश्चिमी घाट (iv) इलायची पहाड़ियाँ

(v) अंडमान और निकोबार द्वीप समूह

संकलित निर्धारण

1. एक पंक्ति में उत्तर :

(i) तीन ओर से जल से घिरा भू-खंड प्रायद्वीप कहलाता है।

(ii) गंगा, सिंधु, ब्रह्मपुत्र और इनकी सहायक नदियाँ।

(iii) K2

(iv) थार

(v) सुंदरवन डेल्टा

(vi) राजस्थान

2. चार पंक्तियों में उत्तर :

(i) विश्व मानचित्र पर एशिया महाद्वीप में उत्तरी गोलार्द्ध में स्थित है। इसका क्षेत्रफल लगभग 32 लाख 87 हजार 263 वर्ग किमी है जो विश्व के क्षेत्रफल का लगभग 2.42 प्रतिशत है। भारत का कश्मीर से कन्याकुमारी अर्थात् उत्तर से दक्षिण में विस्तार 3200 किमी तथा पूर्व से पश्चिम में विस्तार अर्थात् अरुणाचल प्रदेश से मध्य केरल तक 2900 किमी है।

भारतउ त्तरीग ोलार्द्धम ें 8°4'उ त्तरीअ क्षांशअ ौर 37°6'उ त्तरी अक्षांश के मध्य विस्तृत है। यह 68°7' पूर्वी देशांतर और 97°25' पूर्वी देशांतर के मध्य स्थित है। संपूर्ण भारत का अक्षांशीय विस्तार 6°4' - 37°6' उत्तरी अक्षांश के मध्य है। कर्क रेखा इसके मध्य से गुजरती है।

(ii) भारत के पश्चिम में बहुत विस्तृत रेगिस्तान है। इसे थार का रेगिस्तान कहते हैं। इसका निर्माण सूखे और गर्म रेत से हुआ है। वनस्पति के नाम पर यहाँ अधिकतर कँटीली झाड़ियाँ पाई जाती हैं।

यह बहुत ही कम उपजाऊ है, इसीलिए जनसंख्या का घनत्व निम्न है।

(iii) गंगा, सिंधु, ब्रह्मपुत्र और इनकी सहायक नदियों ने हिमालय के दक्षिण में जलोढ़ मिट्टी के जमाव से समतल तथा उपजाऊ मैदान का निर्माण किया है, जिसे उत्तर का विशाल मैदान कहते हैं। इस मैदान में उत्तर प्रदेश, पंजाब तथा हरियाणा राज्यों का विस्तार है।

(iv) गंगा, यमुना, ब्रह्मपुत्र, महानदी, गोदावरी, दामोदर तथा स्वर्ण रेखा नदियाँ बंगाल की खाड़ी में गिरती हैं तथा उत्तर-पश्चिम से पूर्व की ओर बहती हैं। गंगा और ब्रह्मपुत्र विश्व के सबसे बड़े डेल्टा सुंदरवन डेल्टा का निर्माण करती है। केवल नर्मदा और ताप्ती पश्चिम की ओर बहकर अरब सागर में गिरती है।

(v) भारत में लगभग 609 द्वीप हैं, जिनमें 573 द्वीप बंगाल की खाड़ी में तथा 36 द्वीप अरब सागर में हैं। अंडमान और निकोबार द्वीप समूह, दमन और द्वीव, पांडिचेरी (पुडुचेरी), दादर और नागर हवेली द्वीप समूह, बंगाल की खाड़ी में लक्षद्वीप, मिनिकॉम, अमनदीवी द्वीप समूह, अरब सागर में, मूंगे के द्वीप बंगाल की खाड़ी में पाए जाते हैं।

3. आठ पंक्तियों में उत्तर :

(i) **उत्तर का विशाल मैदान :** गंगा, सिंधु, ब्रह्मपुत्र और इनकी सहायक नदियों ने हिमालय के दक्षिण में जलोढ़ मिट्टी के जमाव से समतल तथा उपजाऊ मैदान का निर्माण किया है, जिसे उत्तर का विशाल मैदान कहते हैं। इस मैदान में उत्तर प्रदेश, पंजाब तथा हरियाणा राज्यों का विस्तार है।

इस मैदान की मिट्टी उपजाऊ है, जिसमें अनेक फसलों का उत्पादन बड़े पैमाने पर होता है। यह पूरे देश को खाद्यान्न की पूर्ति करता है। लोगों का मुख्य व्यवसाय कृषि है। किसान यहाँ गेहूँ, गन्ना, धान तथा दालों का उत्पादन बड़े पैमाने पर करते हैं और यही कारण है कि जनसंख्या का सबसे ज्यादा घनत्व इसी क्षेत्र में पाया जाता है।

(ii) दक्कन का पठार ताप्ती नदी के दक्षिण में स्थित पश्चिमी घाट और पूर्वी घाट के मध्य स्थित है। इसका क्षेत्रफल लगभग 3 लाख वर्ग किमी है। महाराष्ट्र तथा गुजरात और मध्य प्रदेश के कुछ हिस्से दक्कन के पठार में स्थित हैं। नर्मदा नदी विंध्याचल और सतपुड़ा पर्वत श्रेणियों के बीच स्थित गहरी घाटियों से होकर बहती है। इस पठार की पश्चिमी सीमा को पश्चिमी घाट के नाम से जानते हैं जो सहयाद्रि पहाड़ियों से बना है। इन पहाड़ियों की सबसे ऊँची चोटी दोदाबेटा (2637 मीटर) है। नीलगिरि पहाड़ियाँ पश्चिमी घाट और पूर्वी घाट को पश्चिम में जोड़ती हैं। इस पठार की पूर्वी सीमा को पूर्वी घाट कहते हैं। यह महानदी की घाटी से नीलगिरि, पालाकोण्डा, जावादी और शिवरा पहाड़ियों से पूर्वी तटीय मैदान के समानान्तर फैला है। महानदी, गोदावरी और कृष्णा नदियाँ इससे होकर बहती हैं, जो उपजाऊ डेल्टा भी बनाती हैं।

(iii) समुद्र के पश्चिमी और पूर्वी तटों के समीप प्रायद्वीप भारत में समुद्री लहरों की क्रिया तथा नदियों द्वारा लाए गए निक्षेपों से निर्मित मैदान तटीय मैदान कहलाते हैं। ये तटीय मैदान पश्चिमी घाट के पश्चिमी में तथा पूर्वी घाट के पूर्व में स्थित हैं। पश्चिमी तटीय मैदान गुजरात, कोंकण, मालाबार तथा कच्छ की दलदली भूमि में फैले हुए हैं। पूर्वी तटीय मैदान पश्चिमी तटीय मैदान की अपेक्षा ज्यादा चौड़े हैं तथा गंगा के मुहाने से कुमारी अंतरीप तक फैले हैं। महानदी, गोदावरी, कृष्णा आदि नदियाँ इसके निचले भाग में बहकर डेल्टाओं का निर्माण करती हैं। चिल्का तथा पुलीकट झीलें, जो लैगूनों के अच्छे उदाहरण हैं, भी इसी मैदान में स्थित हैं। उत्तरी बंगाल इसका उत्तरी भाग तथा दक्षिणी भाग कोरोमंडल तट कहलाता है।

(iv) भारत एक विशाल देश है, जिसमें 28 राज्य तथा 7 संघशासित प्रदेश हैं। क्षेत्रफल की दृष्टि से राजस्थान सबसे बड़ा राज्य है जबकि

जनसंख्या की दृष्टि से उत्तर प्रदेश सबसे बड़ा राज्य है। दिल्ली राष्ट्रीय राजधानी क्षेत्र है। गोवा सबसे छोटा राज्य है। संघशासित प्रदेशों में अंडमान एवं निकोबार द्वीप समूह, जो बंगाल की खाड़ी में हैं, सबसे बड़ा तथा लक्षद्वीप (अरब सागर में) सबसे छोटा है। राज्य मंडलों में, मंडल जनपदों में, जनपद तहसीलों में तथा तहसील ब्लॉकों में विभाजित हैं। इस प्रकार का विभाजन प्रशासन के लिए अति आवश्यक है।

4. अंतर स्पष्ट कीजिए :

(i) पश्चिमी घाट के मैदान और पूर्वी घाट के मैदान

क्र.सं.	पश्चिमी घाट के मैदान	पूर्वी घाट के मैदान
1.	पश्चिमी घाट के मैदान भारत के पश्चिम में विस्तृत हैं।	पूर्वी घाट के मैदान भारत के पूर्व में विस्तृत हैं।
2.	ये मैदान गुजरात, कोंकण, मालाबार तथा कच्छ की दलदली भूमि में फैले हुए हैं।	ये मैदान गंगा के मुहाने से कुमारी अंतरीप तक फैले हैं।
3.	पश्चिमी तटीय मैदान कम चौड़े हैं।	पूर्वी तटीय मैदान पश्चिमी तटीय मैदानों की अपेक्षा ज्यादा चौड़े हैं।

(ii) पहाड़ियाँ और पर्वत

पहाड़ियाँ	पर्वत
निम्न ऊँचाई वाले पर्वत पहाड़ियाँ कहलाते हैं।	पर्वत धरातल के ऊँचे भाग हैं। ऊँची संरचना वाली भूमियाँ, जिनमें तीव्र ढलान वाली सतहों में चोटियाँ और शिखर बने होते हैं, पर्वत कहलाते हैं।

(iii) डेल्टा और पठार

डेल्टा	पठार
त्रिकोणीय भू-खंड जिसका निर्माण नदी अपने मुहाने पर जलोढ़ मिट्टी को निक्षेपित करके करती है, डेल्टा कहलाता है।	पर्वतों और मैदानों के मध्य ऊँची भूमि को पठार कहते हैं।

(iv) मरुस्थल और मैदान

मरुस्थल	मैदान
शुष्क, गर्म तथा रेतीली भूमि वाला विशाल क्षेत्र मरुस्थल कहलाता है।	नीची और समतल भूमि मैदान कहलाती है।

5. निम्नलिखित प्रत्येक के लिए भौगोलिक शब्द लिखिए :

(i) प्रायद्वीप (ii) पर्वत (iii) नदी

(iv) मरुस्थल (v) बालू के टिब्बे

7 भारत की जलवायु, प्राकृतिक वनस्पति तथा वन्य-जीवन

रचनात्मक निर्धारण

1. सही विकल्प पर सही (✓) का निशान लगाइए :

(i) (c) शुष्क मानसूनी वनों में (ii) (a) ग्रीष्म

(iii) (c) अक्तूबर (iv) (d) सुन्दरी

(v) (c) गुजरात (vi) (a) 28

2. निम्नलिखित को सुमेल कीजिए :

'अ'	'ब'
शीत ऋतु	दिसंबर से जनवरी
ग्रीष्म ऋतु	मार्च, अप्रैल, मई तथा जून
वर्षा ऋतु	जुलाई तथा अगस्त
लू	अत्युष्ण सूखी पवन
पतझड़	वृक्ष अपने पत्तों को गिरा देते हैं

3. सत्य या असत्य बताइए :

(i) सत्य (ii) सत्य (iii) असत्य

(iv) असत्य (v) असत्य (vi) सत्य

4. निम्नलिखित प्रत्येक के लिए केवल एक भौगोलिक शब्द लिखिए :

(i) मानसून (ii) लू (iii) डेल्टा

(iv) प्राकृतिक वनस्पति (v) अभयारण्य

संकलित निर्धारण

1. एक पंक्ति में उत्तर :

(i) किसी क्षेत्र विशेष की अधिक लंबी अवधि की वायु दशाओं; जैसे– तापमान, वायुदाब, वायु वेग, दिशा, बादल, धूप, वर्षा तथा आर्द्रता की औसत अवस्था जलवायु कहलाती है।

(ii) भारत में मानसूनी जलवायु पायी जाती है।

(iii) भारत में शेर गिर फॉरेस्ट (गुजरात) में पाए जाते हैं।

(iv) हिमालय, नीलगिरि, अन्नामलाई, पलनी और शिवराम पहाड़ियों पर।

(v) उष्ण कटिबंधीय सदाबहार वन।

(vi) मरुस्थलीय तथा अर्द्ध-मरुस्थलीय वनस्पति।

(vii) सुनीता नारायण टाइगर टास्क फोर्स की अध्यक्ष हैं।

(viii) कागज, दियासलाई, लाख व रेशम उत्पादन तथा खेल के सामान बनाने के लिए उपयोगी कच्चा माल वनों से मिलता है।

(ix) देहरादून (उत्तराखंड) में।

(x) 28 टाइगर प्रोजेक्ट।

2. चार पंक्तियों में उत्तर :

(i)

क्र.सं.	मौसम	जलवायु
1.	वायुमंडल में प्रतिदिन होने वाले परिवर्तन को मौसम कहते हैं।	किसी क्षेत्र विशेष की अधिक लंबी अवधि की वायु दशाओं; जैसे–तापमान, वायुदाब, वायु वेग, दिशा, धूप, वर्षा तथा आर्द्रता की औसत अवस्था जलवायु कहलाती है।
2.	मौसम को प्रभावित करने वाले कारक तापमान, धूप और वर्षा हैं।	जलवायु को प्रभावित करने वाले कारक तापमान, वायुदाब, वायु वेग, दिशा, बादल, धूप, वर्षा तथा आर्द्रता हैं।

(ii) सदाबहार वन सदा हरे-भरे बने रहते हैं तथा वृक्षों की सघनता के कारण सूर्य की किरणें धरातल तक नहीं पहुँचतीं तथा यहाँ वार्षिक वर्षा का औसत लगभग 200 सेमी है। इसलिए इन वनों को उष्ण कटिबंधीय वन कहा जाता है।

(iii) पर्वतीय वन हिमालय, नीलगिरि, अन्नामलाई, पलनी और शिवराम पहाड़ियों पर उगते हैं। इन्हें कोणधारीय वन भी कहते हैं। भिन्न-भिन्न ऊँचाइयों पर भिन्न-भिन्न प्रकार के वृक्ष पाए जाते हैं। अधिकतर वृक्ष शंक्वाकार हैं। चीड़, पाइन, देवदार, साल, शीशम, जामुन, बेर, मैगनोलिया, स्प्रूस, ऑक, पोपलर, बर्च, जूनीपर, फर,

सिल्वर फल आदि वृक्ष प्रमुखता से पाए जाते हैं।

(iv) **वन्य जीव संरक्षण के उपाय :**

(1) वन्य जीवों के संरक्षण के लिए हमारी सरकार ने कई योजनाएँ चलाई हैं; जैसे–टाइगर प्रोजेक्ट, हाथी प्रोजेक्ट आदि।

(2) राष्ट्रीय पशु 'बाघ' के संरक्षण के लिए भारत सरकार ने 17 राज्यों के 37,761 वर्ग किमी क्षेत्रफल में 28 टाइगर रिजर्व स्थापित किए हैं।

(3) भारत सरकार ने बाघों, शेरों, हिरनों तथा मोर के शिकार पर पूरी तरह प्रतिबंध लगा दिया है। इसका उल्लंघन करने पर कड़ी सजा का प्रावधान है।

(4) विभिन्न राज्यों और केंद्रशासित प्रदेशों में भारत सरकार ने वन्य जीवों के संरक्षण हेतु 513 अभ्यारण्य भी स्थापित किए हैं।

(5) अभ्यारण्यों या राष्ट्रीय पार्कों के पास स्थित गाँवों को सरकार ने दूसरे स्थानों पर बसाने का प्रयास किया है ताकि वन्य जीवों को किसी प्रकार का व्यवधान न हो।

(v) वनों के दो लाभ निम्नलिखित हैं–

(1) वन बाढ़ नियंत्रण तथा मृदा अपरदन को रोककर मृदा संरक्षण का कार्य करते हैं।

(2) वन वर्षा कराने में अहम भूमिका निभाते हैं।

3. आठ पंक्तियों में उत्तर :

(i) भारत में मुख्यत: चार ऋतुएँ होती हैं, जिनका वर्णन निम्नलिखित है–

(1) शरद ऋतु : दिसंबर के शुरू से तथा फरवरी के मध्य तक का समय शरद ऋतु का समय है। इस ऋतु में पहाड़ों पर हिमपात होता है, जिससे सर्द हवाएँ पहाड़ी क्षेत्रों से मैदानों की ओर चलती हैं। इस ऋतु में मैदानों में औसत ताप 10° से. से 12° से. तथा तटीय मैदानों में 24° से. और पहाड़ी क्षेत्रों में –4° से. तक पहुँच

जाता है। पाला तथा कोहरा पड़ना इस ऋतु में आम बात है।

(2) ग्रीष्म ऋतु : यह ऋतु मार्च से जून तक रहती है तथा हम लोग भीषण गर्मी का सामना करते हैं। मैदानी क्षेत्रों में तापमान 45° से. तक पहुँच जाता है। सूर्य की किरणें भूमध्य रेखा पर लम्बवत पड़ती हैं, इसीलिए पंजाब, राजस्थान, बिहार और उत्तर प्रदेश राज्यों में भयंकर गर्मी पड़ती है। धरती सूख जाती है। लोग इस ऋतु में सूती वस्त्र पहनना पसंद करते हैं। जून के महीने में अति गरम हवाएँ, जिन्हें 'लू' कहते हैं, चला करती हैं।

(ii) **ज्वारीय वन :** ज्वारीय वन गंगा, ब्रह्मपुत्र, गोदावरी, महानदी एवं कावेरी नदियों के डेल्टाओं में उगते हैं। इन स्थानों की भूमि दलदली होती है। इनमें प्रमुख वृक्ष मैंग्रोव, ताड़, फोनिक्स, केसुरीना, नीन, सुंदरी आदि हैं। इन वृक्षों की लकड़ी चमड़े की रंगाई में उपयोगी है तथा पानी का असर बहुत देर से होने के कारण नाव बनाने के काम आती है। गंगा और ब्रह्मपुत्र के डेल्टा में सुंदरी वृक्षों की अधिकता है इसीलिए इसे सुंदरवन डेल्टा के नाम से जाना जाता है।

शुष्क मानसूनी वन : ये वन उत्तर-पूर्वी राजस्थान, हरियाणा, पंजाब, दक्षिण-पश्चिम उत्तर प्रदेश, गुजरात और देश के प्रायद्वीपीय भागों में पाए जाते हैं। यहाँ औसत वार्षिक वर्षा 50 से 100 सेमी के मध्य होती है। प्रमुख वृक्षों में बबूल, कँटीली झाड़ियाँ, काँस, मूँज आदि घासें हैं।

(iii) **भारत में वन्य जीवन :** प्राचीन काल में भारत की अधिकांश भूमि पर वन खड़े थे, जो जंगली जीवों का शरण स्थल थे। आबादी कम होने के कारण जीव अबाध रूप से इन वनों में एक स्थान से दूसरे स्थान पर विचरण किया करते थे। इन वनों में चीते, हाथी, शेर, लोमड़ी, रीछ, लकड़बग्घे, भेड़िये, सियार, हिरन जैसे अनेक जंगली जंतु बड़ी संख्या में विद्यमान थे।

वन्य जीवों के शरणस्थल नष्ट हो गए तथा उनके सामने भोजन की

समस्या भी खड़ी हो गई। भारत के विभिन्न हिस्सों में विभिन्न प्रकार के वन्य जीव पाए जाते हैं। बाघ हमारा राष्ट्रीय पशु है, जो उत्तराखंड के जंगलों और सुंदरवन डेल्टा में पाया जाता है। शेर गिर फॉरेस्ट (गुजरात) में, हाथी (उत्तराखंड, केरल, कर्नाटक और असोम में), जंगली बकरियाँ, स्नो तेंदुए व रीछ (हिमालय के वनों में), जंगली गधे (कच्छ के रन में), ऊँच (थार रेगिस्तान व राजस्थान में), इंडियन बस्टर्ड पक्षी (राजस्थान के जोधपुर व बीकानेर में) तथा गैंडे (असोम में) पाए जाते हैं।

पक्षियों में हमारा राष्ट्रीय पक्षी मोर तथा तोते, कबूतर, हंस, गोरैया, किंगफिशर, बगुले, सारस, तीतर, बटेर, कौवा आदि भी हमारे देश में पाए जाते हैं। इनके अतिरिक्त रेंगने वाले जंतु; जैसे– साँप, मगरमच्छ, कछुए, घडियाल, अजगर, अनाकोंडा आदि भी भारत के प्रत्येक राज्य में पाए जाते हैं।

(iv) वन्य जीव संरक्षण के लिए हमारी सरकार ने निम्नलिखित उपाय किए हैं–

वन्य जीव संरक्षण के उपाय :

(1) वन्य जीवों के संरक्षण के लिए हमारी सरकार ने कई योजनाएँ चलाई हैं; जैसे–टाइगर प्रोजेक्ट, हाथी प्रोजेक्ट आदि।

(2) राष्ट्रीय पशु 'बाघ' के संरक्षण के लिए भारत सरकार ने 17 राज्यों के 37,761 वर्ग किमी क्षेत्रफल में 28 टाइगर रिजर्व स्थापित किए हैं।

(3) भारत सरकार ने बाघों, शेरों, हिरनों तथा मोर के शिकार पर पूरी तरह प्रतिबंध लगा दिया है। इसका उल्लंघन करने पर कड़ी सजा का प्रावधान है।

(4) विभिन्न राज्यों और केंद्रशासित प्रदेशों में भारत सरकार ने वन्य जीवों के संरक्षण हेतु 513 अभ्यारण्य भी स्थापित किए हैं।

(5) अभ्यारण्यों या राष्ट्रीय पार्कों के पास स्थित गाँवों को सरकार

ने दूसरे स्थानों पर बसाने का प्रयास किया है ताकि वन्य जीवों को किसी प्रकार का व्यवधान न हो।

(6) वन्य प्राणी सुरक्षा अधिनियम 1972 सभी राज्यों में (जम्मू एवं कश्मीर को छोड़कर) लागू है।

(7) प्रति वर्ष अक्तूबर माह का प्रथम सप्ताह वन्य जीव सप्ताह के रूप में मनाया जाता है, जो लोगों को वन्य जीवों के प्राकृतिक आवासों के संरक्षण के प्रति जागरूक कराता है।

4. निम्नलिखित प्रश्नों का उत्तर केवल एक शब्द में ही दीजिए :

(i) बाघ (ii) मौसम (iii) शरद ऋतु

(iv) पहाड़ी स्थानों पर (v) 14 प्रतिशत

(vi) 28

5. ऐसा क्यों है?

(i) राष्ट्रीय पशु 'बाघ' के संरक्षण के लिए भारत सरकार ने 1973 ई. में बाघ परियोजना को शुरू किया था।

(ii) भारत के विभिन्न हिस्सों में राष्ट्रीय उद्यान और अभयारण्यों की स्थापना की गई है क्योंकि ऐसे क्षेत्रों में वानिकी, पशुचारण या कृषि जैसे कार्यों पर सरकारी रोक लगी होती है।

(iii) जंगल जंगली पशुओं के लिए सर्वोत्तम आवास हैं क्योंकि यहाँ जंगली जीव अबाध रूप से एक स्थान से दूसरे स्थान पर विचरण कर पाते हैं तथा यहाँ उन्हें अपने भोजन के रूप में अन्य जंगली जीव-जंतु भी आसानी से मिल जाते हैं, जिससे प्रकृति में संतुलन बना रहता है।

(iv) प्रतिवर्ष अक्तूबर माह का प्रथम सप्ताह वन्य जीव सप्ताह के रूप में मनाया जाता है ताकि लोगों को वन्य जीवों के प्राकृतिक आवासों के संरक्षण के प्रति जागरूक किया जाए।

1

इकाई II : विश्व और भारतीय समाज

हमारा अतीत

रचनात्मक निर्धारण

1. सही विकल्प पर सही (✓) का निशान लगाइए :

(i) (c) इतिहास (ii) (c) पुरातत्वशास्त्र

(iii) (b) ईसा मसीह के जन्म के बाद से

(iv) (a) यूनानियों ने (v) (c) मध्य प्रदेश में

(vi) (a) 5वीं शताब्दी में

2. निम्नलिखित को सुमेल कीजिए :

'अ'	'ब'
हेरोडोटस	इतिहास का जनक
सुभासिन	प्रथम चीनी इतिहासकार
इलाहाबाद स्तंभ	समुद्रगुप्त
महरौली स्थित लौह स्तंभ	चंद्रगुप्त विक्रमादित्य
ह्वेनसांग	चीनी यात्री
अकबरनामा	अबुल फजल

3. सत्य अथवा असत्य बताइए :

(i) सत्य (ii) असत्य (iii) असत्य

(iv) असत्य (v) सत्य (vi) असत्य

4. रिक्त स्थानों की पूर्ति कीजिए :

(i) लेखा-जोखा (ii) अन्वेषण

(iii) घाटियों (iv) सीमाएँ

(v) सुभासिन

5. प्रत्येक कथन के लिए एक शब्द लिखिए :

(i) पांडुलिपि (ii) अभिलेख (iii) पुरातात्विक स्रोत

(iv) लिपि (v) स्मारक

संकलित निर्धारण

1. एक पंक्ति में उत्तर :

(i) इतिहास हमारे अतीत का क्रमबद्ध तथा वैज्ञानिक अध्ययन है।

(ii) हेरोडोटस को इतिहास का जनक कहा जाता है।

(iii) ई.पू. उन ऐतिहासिक घटनाओं के लिए प्रयुक्त होती है, जो ईसा मसीह के जन्म से पूर्व घटित हुई हैं तथा ई. ईसा मसीह के जन्म के बाद घटने वाली घटनाओं के लिए प्रयुक्त होती है।

(iv) प्राचीनकाल में आदिमानव वनों में निवास करता था।

(v) फाहियान चीन का निवासी था।

(vi) प्राचीन इमारतें व खंडहर।

2. चार पंक्तियों में उत्तर :

(i) अधिकांश आधुनिक क्रियाकलाप अतीत को जानने में हमारी मदद करते हैं। इन क्रियाकलापों में भोजन, वेशभूषा, मकान, कृषि, पूजा-स्थल, विभिन्न वर्गों के लोगों; जैसे-शिकारी, गडरियों, किसान, शासक, व्यापारी, शिल्पकार, कलाकार, पुजारी आदि की पारिवारिक प्रणाली सम्मिलित है।

(ii) प्राचीनकाल में मनुष्य नदी-घाटियों के समीप या गुफाओं में निवास करते थे। वहाँ मानव को जल स्रोतों की उपस्थिति आकर्षित करती थी। इससे पूर्व मानव वनों में निवास किया करते थे, जहाँ वह भोजन के लिए पेड़ों की जड़ों, फलों तथा अन्य पादप उत्पादों को खाने के लिए इकट्ठा किया करता था।

(iii) 2500 वर्ष पूर्व ईरानी और यूनानी भारत में आए। उन्होंने हमारे देश को 'इण्डस' कहकर पुकारा, क्योंकि सिंधु (Indus) नदी भारत से होकर बहती है तथा इसके पूर्वी भाग को 'इंडिया' कहकर पुकारा। इसकेउ त्तर-पश्चिमम ेर हनेव ालेल ेगइ से' भारतवर्ष'क हकर पुकारते थे। तत्पश्चात् हमारे देश को 'भारत' का नाम दिया गया।

मध्यकालीन मुस्लिम इतिहासकारो ने इसे 'हिंद' अथवा 'हिंदुस्तान' कहकर पुकारा।

(iv) ऐतिहासिक अभिलेखों की धर्मनिरपेक्ष पुस्तकें इतिहास के धर्म निरपेक्ष स्रोत हैं। कौटिल्य का अर्थशास्त्र; कल्हण की राजतरंगिणी, अबुल फजल का अकबरनामा; कालिदास के अभिज्ञानशाकुन्तलम, मेघदूत, ऋतु संहार आदि; चंद्रबरदाई का पृथ्वीराजरासो, विशाखादत्त का मुद्राराक्षस आदि इतिहास के ऐसे ही धर्मनिरपेक्ष स्रोत हैं।

(v) सिक्के भी इतिहास जानने में बहुत सहायक सिद्ध हुए हैं। खुदाई में प्राप्त सिक्के बीते हुए इतिहास को जानने में सहायता प्रदान करते हैं। सिक्के विभिन्न वंशों के राजाओं तथा उनकी राजनीतिक दशा का वर्णन भी करते हैं। वे अवधि विशेष के देवी-देवताओं के विषय में भी ज्ञान कराते हैं। ये सिक्के चाँदी, सोने तथा ताँबा धातु के बने होते हैं।

3. आठ पंक्तियों में उत्तर :

(i) **लोगों के मध्य विचारों का आदान-प्रदान :** प्राचीन समय में लोगों को एक जगह से दूसरी जगह भोजन और आवास की तलाश में भटकना पड़ता था या अन्य शब्दों में उन्हें एक भाग से दूसरे भाग की यात्रा भोजन और आवास की खोज के लिए करनी पड़ती थी। यद्यपि उनकी यात्रा जोखिम भरे पर्वतों, मरुस्थलों, नदियों और सागरों से होकर चलती थी तथापि लोग कठिनाइयों का सामना साहसपूर्वक किया करते थे। इसलिए बाढ़ तथा सूखे जैसी प्राकृतिक आपदाएँ भी उन्हें डरा न सकीं। प्राचीन समय में व्यापारियों के काफिले या जहाजी बेड़े कीमती सामानों के साथ जगह-जगह की यात्राएँ करते थे। धार्मिक संत गाँव-गाँव तथा कस्बे-कस्बे घूमकर धार्मिक प्रवचन देने का कार्य किया करते थे। कुछ लोगों ने नई जगहों की खोज करने के लिए यात्राएँ कीं और इन सभी क्रियाकलापों ने लोगों के मध्य विचारों का आदान-प्रदान कराया।

(ii) अतीत या इतिहास के स्रोतों को जानने के साधन निम्नलिखित हैं :

(अ) साहित्यिक स्रोत : लिखित दस्तावेजों के रूप में प्राचीन इतिहास के अभिलेखों में से एक को पांडुलिपि कहा जाता है। संस्कृत, प्राकृत, पाली और तमिल भाषाओं में लिखे गए ग्रंथ, कविताएँ, धार्मिक पुस्तकें तथा नाटक सभी साहित्यिक स्रोत हैं। इन सभी साहित्यिक कृतियों के विषय राजा, उनका प्रशासन, विज्ञान, औषधियाँ, धार्मिक विश्वास और रीति-रिवाज हैं।

(ब) धर्मनिरपेक्ष स्रोत : ऐतिहासिक अभिलेखों की धर्मनिरपेक्ष पुस्तकें इतिहास के धर्म निरपेक्ष स्रोत हैं। कौटिल्य का अर्थशास्त्र; कल्हण की राजतरंगिणी, अबुल फजल का अकबरनामा; कालिदास के अभिज्ञानशाकुन्तलम, मेघदूत, ऋतु संहार आदि; चंद्रबरदाई का पृथ्वीराजरासो, विशाखादत्त का मुद्राराक्षण आदि इतिहास के ऐसे ही धर्मनिरपेक्ष स्रोत हैं।

(स) यात्रियों के विवरण : अनेक विदेशी यात्रियों ने समय-समय पर भारत का भ्रमण किया। उन्होंने प्राचीन इतिहास के विभिन्न सोपानों के दौरान यहाँ के लोगों की सामाजिक, धार्मिक, आर्थिक और राजनीतिक दशाओं का वर्णन किया है। इन सभी विदेशी यात्रियों ने भारत का भ्रमण किया तथा अपनी खोजों का वर्णन अपने द्वारा रचित पुस्तकों में किया।

(द) पुरातात्विक स्रोत : प्राचीन स्मारकों के भग्नावशेष, प्राचीन इमारतों व खंडहरों की खुदाई में प्राप्त सामग्री, प्राचीन सिक्कों पर उत्कीर्ण विवरण आदि से प्राप्त स्रोत पुरातात्विक स्रोत कहलाते हैं। खुदाई या खोज के दौरान अभिलेख तथा सिक्के पुरातात्विक स्रोतों के रूप में पाए गए, जो कि इतिहास को जानने में बहुत सहायक सिद्ध हुए हैं।

(iii) अनेक विदेशी यात्रियों ने समय-समय पर भारत का भ्रमण किया। उन्होंने प्राचीन इतिहास के विभिन्न सोपानों के दौरान यहाँ के लोगों

की सामाजिक, धार्मिक, आर्थिक और राजनीतिक दशाओं का वर्णन किया है।

हेरोडोटस ने 5वीं शताब्दी में भारत का भ्रमण किया तथा अपनी खोजों का वर्णन अपने द्वारा रचित पुस्तक 'इंडिया' में किया। चंद्रगुप्त मौर्य के समय मेगस्थनीज, एक यूनानी यात्री भारत आया, जिसने अपनी पुस्तक इण्डिका में उसके प्रशासन का बड़ा ही मार्मिकव र्णनि कयाह ै।स ुभासिन,ए क च ीनीइ तिहासकारप ्रथम शताब्दी में सर्वप्रथम भारत यात्रा पर निकला तथा अपनी यात्रा का वर्णन लिखा। कुछ अन्य चीनी यात्रियों; जैसे–फाहियान, ह्वेनसांग तथा इत्सिंग ने भारत यात्रा की तथा बौद्ध धर्म का अध्ययन किया तथा अपने वर्णन में तत्कालीन भारत की सामाजिक, आर्थिक और राजनीतिक दशाओं का वर्णन किया।

(iv) **इतिहासव ेस ाहित्यिकस ्रोतः** लिखित दस्तावेजों के रूप में प्राचीन इतिहास के अभिलेखों में से एक को पांडुलिपि कहा जाता है। ताड़ के पत्तों, बर्च की छाल तथा कागज से प्राचीन काल में पांडुलिपियाँ तैयार की जाती थीं। इनमें से कुछ पांडुलिपियाँ मंदिरों और बौद्ध मठों में सुरक्षित पाई गई हैं, जबकि कुछ अन्य चूहों और कीटों द्वारा नष्ट कर दी गई हैं। संस्कृत, प्राकृत, पाली और तमिल भाषाओं में लिखे गए ग्रंथ, कविताएँ, धार्मिक पुस्तकें तथा नाटक सभी साहित्यिक स्रोत हैं। इन सभी साहित्यिक कृतियों के विषय राजा, उनका प्रशासन, विज्ञान, औषधियाँ, धार्मिक विश्वास और रीति-रिवाज हैं। इन धार्मिक ग्रंथों में वेद, उपनिषद्, पुराण, त्रिपिटिक, जातक कथाएँ रामायण, महाभारत, गीता आदि हैं।

2 आदिमानव-I

रचनात्मक निर्धारण

1. सही विकल्प पर सही (✓) का निशान लगाइए :

(i) (d) (a) तथा (b) (ii) (b) चार अवस्थाओं में
(iii) पुरापाषाण काल में (iv) (a) पुरापाषाण काल में
(v) (a) कुत्ता (vi) (a) मध्य प्रदेश
(vii) (a) कांस्य युग
(viii) (a) लघु आकार वाले त्रिकोणीय औजार (ix) (b) मध्य प्रदेश

2. रिक्त स्थानों की पूर्ति कीजिए :

(i) जंगली जानवरों (ii) व पेड़
(iii) कपियों (iv) पुरातत्ववेत्ताओं, भारत
(v) पत्थर

3. निम्नलिखित को सुमेल कीजिए :

'अ'	'ब'
पुरापाषाण काल	पेलियोलिथिक युग
मध्य पाषाण काल	मिजोलिथिक युग
नव पाषाण काल	नियोलिथिनक
कांस्य युग	चालकोलिथिक युग

4. सत्य या असत्य बताइए :

(i) सत्य (ii) सत्य (iii) सत्य
(iv) सत्य (v) असत्य (vi) सत्य

संकलित निर्धारण

1. एक पंक्ति में उत्तर :

(i) संग्राहक जंगल से फल, जड़ें, बीज, पत्तियाँ, अंडे तथा काष्ठ फल

इकट्‌ठा करते थे।

(ii) 'पेलियोलिथिक' शब्द ग्रीक भाषा का शब्द है, जो 'पोलियो'; जिसकात त्पर्यं पुराना'त था' लिथोस';ि जसकात त्पर्यं पत्थर' (पाषाण) से मिलकर बना है। इसे ही पुरापाषाण काल या पुरापाषाण युग कहा गया।

(iii) तेज धार वाली हाथ कुल्हाड़ी, चौड़ी छेनी, धार वाली फाड़ने वाली छोटी कुल्हाड़ी, गँडासा, वज्र तथा तीर के सिरों वाले औजार।

(iv) आग की खोज पुरापाषाण काल में हुई।

(v) प्राचीन स्मारकों के भगनावशेष, प्राचीन इमारतों व खंडहरों की खुदाई में प्राप्त सामग्री, प्राचीन सिक्कों पर उत्कीर्ण विवरण आदि का अध्ययन पुरातत्व विज्ञान कहलाता है।

(vi) पुरातात्विक स्रोतों का अध्ययन करने वाला व्यक्ति पुरातत्ववेक्ता कहलाता है।

(vii) लगभग 2000 वर्ष पूर्व विश्व अनेक प्रमुख जलवायवीय परिवर्तनों से गुजरा, जिन्हें पर्यावरणीय परिवर्तन भी कहा गया। इस काल को मध्य पाषाण काल कहा गया।

(viii) भारत में पंजाब, उत्तराखंड, गुजरात, मध्य प्रदेश, कर्नाटक तथा बिहार राज्य।

2. चार पंक्तियों में उत्तर :

(i) पाषाण काल में आदि मानव कपियों की भाँति चला करता था। बाद मेंउ सनेअ पनेप ैरोंप रख ाड़ाह ाेकरच लनास ाेखात थाह ाथोंस े वस्तुओं को पकड़ना सीखा। उसने जंगली जानवरों पर पत्थर के टुकड़े फेंककर उनसे अपनी रक्षा की। जब उसने स्वयं को सूर्य की तपती धूप या अतिशीतल कँपाने वाली सर्दी या ओलों के साथ होने वाली भारी वर्षा से असुरक्षित पाया तो वह पर्वतों में बनी गुफाओं के अंदर रहने लगा। इस प्रकार पाषाणकाल में आदि मानव ने पत्थर की गुफाओं को अपना निवास स्थान बनाया।

(ii) पाषाण काल को चार भागों में विभाजित किया गया है। ये चार वर्ग हैं–(1) पुरापाषाण काल (2) मध्य पाषाण काल (3) नवपाषाण काल (4) कांस्य पाषाण काल।

(iii) **पुरापाषाण काल :** 'पेलियोलिथिक' शब्द ग्रीक भाषा का शब्द है, जो 'पोलियो'; जिसका तात्पर्य 'पुराना' तथा 'लिथोस'; जिसका तात्पर्य 'पत्थर' (पाषाण) से मिलकर बना है। इसे ही पुरापाषाण काल या पुरापाषाण युग कहा गया।

20 लाख वर्ष पूर्व से लगभग 12,000 वर्ष पूर्व तक की अवधि पुरापाषाण काल है। मानव इतिहास का लगभग 99 प्रतिशत भाग इसी अवधि द्वारा पूर्ण हुआ है। इस युग का मानव आदिम मानव जीवनयापन किया करते थे। वह शिकारी और भोजन संग्राहक था। उसके औजार पत्थर, हड्डियों, सींगों तथा लकड़ी के बने होते थे। अब उसने आग का आविष्कार कर लिया था और वह आग में पके भोजन का स्वाद लेने लगा।

(iv) पुरापाषाण युग में मानव ने पत्थर के दो टुकड़ों को परस्पर रगड़कर चिंगारी उत्पन्न की। जैसे ही पत्थरों की रगड़ से उत्पन्न चिंगारी पास पड़ी हुई सूखी पत्तियों पर पड़ी तो आग लपटों के रूप में जल उठी। इस प्रकार आग की खोज हुई।

(v) पुरापाषाण कालीन मानव भीमबेटका (मध्य प्रदेश), हंसगी (कर्नाटक), कुर्नूल गुफओं आदि में निवास किया करता था। ये सभी स्थान नदियों और झीलों के किनारे स्थित थे। मानव जीवन यापन तथा औजारों के लिए पत्थर पर निर्भर करता था, इसलिए उसे उन स्थानों की ओर प्रस्थान करना पड़ा, जहाँ पत्थर तथा फैक्ट्री स्थल मौजूद थे। इन फैक्ट्रियों में लोग पत्थरों के औजार बनाते थे तथा लंबे समय से निवास कर रहे थे। इसलिए इन्हें निवास सह-स्थलों के रूप में जाना गया।

(vi) आदि मानव गुफाओं में निवास करता था। मध्य पाषाण की कुछ

चित्रकारियाँ मध्य प्रदेश और दक्षिणी उत्तर प्रदेश में पाई गई हैं। इन चित्रकारियों में जंगली जानवरों का चित्रण किया गया है। चट्टानों पर बनाई गई चित्रकारियों में मुख्य रूप से लाल और सफेद रंगों को भरा गया है। इन चित्रकारियों का विषय शिकार करना, मछली पकड़ना तथा धार्मिक विश्वास आदि हैं।

(vii) मध्य पाषाण काल में लोग अपने मृतकों का अंतिम संस्कार उन्हें जमीन में खाद्य वस्तुओं तथा आभूषणों के साथ दफनाकर किया करते थे।

3. आठ पंक्तियों में उत्तर :

(i) प्राचीन समय में शिकारी तथा संग्राहक स्थान-स्थान निम्नलिखित कारणों से घूमते थे :

(1) जब किसी स्थान विशेष पर भोजन के स्रोत समाप्त हो जाते थे तो उन्हें अन्य स्रोत को खोजने के लिए अन्य स्थान पर जाना पड़ता था।

(2) आदि मानव को जंगली जानवरों का शिकार करने के लिए उनके पीछे दौड़ना पड़ता था। परिणामस्वरूप वह अन्य स्थानों की ओर निकल जाता था क्योंकि जानवर जहाँ जाते थे, उसे उसी ओर उनके पीछे भागना पड़ता था।

(3) भिन्न-भिन्न प्रकार के पेड़-पौधे एक साथ अर्थात् एक ही ऋतु में फलोत्पादन नहीं करते। कुछ पौधों में सर्दी में, कुछ में वर्षा में तथा कुछ पौधों में गर्मी में फल लगते हैं। इसीलिए आदि मानव को ऋतु के अनुसार भोजन की खोज में एक जगह से दूसरी जगह का भ्रमण करना पड़ता था।

(4) पेड़-पौधे तथा मानव सहित सभी जीव-जंतु जीने के लिए पानी की आवश्यकता महसूस करते हैं। ग्रीष्म ऋतु के दौरान कुछ नदियाँ, झीलें और तालाब सूख जाते हैं या उनमें पानी की कमी हो जाती है परंतु दूसरी ओर कुछ नदियाँ वर्षभर पानी से लबालब रहती

हैं। इसलिए मानव वर्तमान निवास स्थानों को छोड़कर पानी की तलाश में एक स्थान से दूसरे स्थान के लिए पलायन कर जाते थे। जब ऋतु उनके सापेक्ष हो जाती थी तो वे पुनः अपने पूर्व निवास स्थानों पर लौट आते थे।

(ii) 'पेलियोलिथिक' शब्द ग्रीक भाषा का शब्द है, जो 'पोलियो'; जिसकात ात्पर्य' पुराना'त था' लिथोस';ि जसकात ात्पर्य' पत्थर' (पाषाण) से मिलकर बना है। इसे ही पुरापाषाण काल या पुरापाषाण युग कहा गया।

20 लाख वर्ष पूर्व से लगभग 12,000 वर्ष पूर्व तक की अवधि पुरापाषाण काल कहलाती है। मानव इतिहास का लगभग 99 प्रतिशतभ ागइ सीअ वधिद्व ाराप ूर्णह ुआह ै।इ सय ुगक ाम ानव आदिम जीवनयापन किया करता था। वह गुफाओं में या शिलाओं के आश्रम में रहता था। वह शिकारी और भोजन संग्राहक था, इसीलिए भोजन की तलाश में एक जगह से दूसरी जगह घूमता रहता था। वह जंगली जानवरों, पक्षियों और मछलियों के शिकार तथाप ऺलों,ज ड़ों,भ ूमिगतत नोंत थाव ंदोंव ेस ंग्रहणप रि नर्भर करता था। उसके औजार पत्थर, हड्डियों, सीगों तथा लकड़ी के बने होते थे। तेज धार वाली हाथ कुल्हाड़ी, चौड़ी छेनी, धार वाली फाड़ने वाली छोटी कुल्हाड़ी, गंड़ासा, बज्र तथा तीर के सिरों वाले औजार उसके मुख्य औजार थे। पुरापाषाण काल में मानव ने आग का आविष्कार कर लिया था और वह आग में पके भोजन का स्वाद लेने लगा।

मानव झुंड बनाकर रहने लगा था, जिससे उसे खूँखार जंगली जानवरों से सुरक्षा मिली। झुंडों में निवास करने की इस प्रवृत्ति का उपयोग आदि मानव ने भोजन के लिए जंगली जानवरों का आसानी से शिकार करने में किया।

(iii) **मध्य पाषाण काल के दौरान औजार :** मध्य पाषाणकालीन मानव ने भी औजारों और हथियारों में महत्त्वपूर्ण सुधार किए।

उसके औजार पुरापाषाण कालीन औजारों की अपेक्षा सुथरे, नुकीले, परिष्कृत तथा आकार के छोटे थे। इन औजारों को माइक्रोलिथ कहते थे। कुल्हाड़ियाँ पत्थर की बनायी जाती थीं तथा जानवरों की हड्डियों तथा सींगों से औजार बनाए जाते थे।

मध्यप ाषाणक ालव ेद ैरानप ऩसलें: आदि मानव झुंडों में रहकर जमीन को हल से जोतकर खेती करने लगा तथा कृषि में विभिन्न फसलों को उगाने लगा ताकि भोजन की जरूरतों को पूरा किया जा सके।

चित्रण : आदि मानव गुफाओं में निवास करता था। मध्य पाषाण की कुछ चित्रकारियाँ मध्य प्रदेश और दक्षिणी उत्तर प्रदेश में पाई गई हैं। इन चित्रकारियों में जंगली जानवरों का चित्रण किया गया है। चट्टानों पर बनाई गई चित्रकारियों में मुख्य रूप से लाल और सफेद रंगोंक ाे‍भ ाराग याह ै।इ नर्ि चत्रकारियोंक ार्ि वषयर्ा शकारक रना, मछली पकड़ना तथा धार्मिक विश्वास आदि हैं।

अंतिम संस्कार :म ध्यप ाषाणक ालम ेंल ोगअ पनेम ृतकोंक ा अंतिम संस्कार उन्हें जमीन में खाद्य वस्तुओं तथा आभूषणों के साथ दफनाकर किया करते थे।

4. निम्नलिखित शब्दों की व्याख्या कीजिए :

(i) **माइक्रोलिथ :** छोटे आकार वाला तिकोना औजार, जिसे मध्य पाषाण कालीन मानव ने बनाया था, माइक्रोलिथ कहलाया।

(ii) **आवास :** किसी के रहने का स्थान आवास कहलाता है।

(iii) **क्लीवर :** फाड़ने वाला औजार, जो धार वाली चौड़ी छेनी के आकार का होता था। यह मध्य पाषाण कालीन मानव के द्वारा लकड़ी को विभिन्न उपयोगों के लिए काटने में प्रयुक्त किया जाता था।

(iv) **भित्तिचित्र :** मध्य पाषाण कालीन मानव द्वारा चट्टानों पर बनाई गई चित्रकारियाँ।

3 आदिमानव-II

रचनात्मक निर्धारण

1. सही विकल्प पर सही (✓) का निशान लगाइए :

(i) (b) मध्य पाषाण काल (ii) (a) नवपाषाण काल
(iii) (b) असोम में (iv) (a) नवपाषाण काल
(v) (d) इनमें से कोई नहीं (vi) (a) भारतीय पुरातत्व विभाग
(vii) (a) आंध्र प्रदेश में (viii) (a) नवपाषाण काल में

2. निम्नलिखित को सुमेल कीजिए :

'अ'	'ब'
मेहरगढ़	पाकिस्तान
दाओजली हादिंग	असोम
पहिए का आविष्कार	नवपाषाण काल
मेगालिथ्स	कब्र का मुँह ढकने के लिए बड़ा पत्थर
काँसा	टिन और ताँबे का मिश्रण

3. सत्य या असत्य बताइए :

(i) सत्य (ii) असत्य (iii) असत्य (iv) असत्य
(v) सत्य

4. निम्नलिखित वाक्यों को पूर्ण कीजिए :

(i) खाद्य भंडार (ii) कुम्हार का चाक (iii) पत्थरों
(v) पुरातत्ववेत्ताओं (vi) मेगालिथ्स

संकलित निर्धारण

1. एक पंक्ति में उत्तर :

(i) नवपाषाण काल समयावधि 8000–40000 ई.पू. मानी गई है।

(ii) नवपाषाण काल में आदि मानव के जीवन में कृषि कार्य शुरू हुआ।

(iii) बैल, घोड़ा, ऊँट, भेड़, बकरी, कुत्ता, भैंस, सुअर।

(iv) पत्थर की कुल्हाड़ी, दराँती (हँसिया), धनुष–बाण।

(v) मेहरगढ़, कोल्डिहोवा, माहगारा, गुफकराल, बुरजाहोम, चिरन्द, हल्लुर, पायमपल्ली।

(vi) काँसा बनाने में टिन और ताँबा धातुओं का प्रयोग किया जाता था।

2. चार पंक्तियों में उत्तर :

(i) नवपाषाण काल में मानव ने जंगली घास की भूमि की घास काटकर साफ किया और उस जमीन में पशुपालन के साथ–साथ उन बीजों की फसल बोने लगा। रहने के लिए उसने झोंपड़ियाँ बनाईं तथा झोंपड़ी के आस–पास सब्जियाँ, दानों की फसलें तथा फलदार वृक्षों को उगाने लगा। पालतू पशुओं से मांस, दूध एवं खाल तथा गोबर मिला, जिससे वह ईंधन के लिए उपले (कंडे) तथा खाद बनाने लगा। बैल, घोड़ा तथा ऊँट जैसे मजबूत जानवरों ने उसे एक स्थान से दूसरे स्थान के लिए बोझा ढोने तथा पकी हुई फसलों को घर लाने में सहायता प्रदान की। भेड़ तथा बकरी जैसे मवेशियों से उसे ऊन, खाल, मांस आदि प्राप्त हुई। इन कारणों से पशुपालन की शुरूआत हुई।

(ii) आदि मानव ने जंगल में गोल पत्थरों को जमीन पर लुढ़कते हुए देखा और उसका यह निरीक्षण पहिए के आविष्कार में बदल गया।

(iii) **नवपाषाण काल के औजार :** नवपाषाण कालीन मानव के औजार संख्या में अधिक तथा उपयोगी सुधारों से निर्मित थे। इस काल में भी औजार पत्थर से बनाए जाते थे। उन पर पॉलिश की जाती थी तथा वे तेज धार वाले व मानव की जरूरतों के अनुसार बनाए गए थे। दराँती (हँसिया), धनुष–बाण आदि सभी इस युग के महत्त्वपूर्ण औजार थे।

नवपाषाण काल के बर्तन : पुरातत्ववेत्ताओं को खुदाई में मिट्टी के बहुत–से बर्तन प्राप्त प्राप्त हुए हैं। इनमें कुछ बर्तनों पर सजावट

की गई है तथा उनका उपयोग अनाज या भंडारण के लिए किया जाता होगा। कुछ बर्तनों को भोजन के लिए अनाज के दाने; जैसे–गेहूँ,च ावल,म सूरत थाम ांसप कानेव ेि लएप्र योगि कया जाता था।

(iv) मेहरगढ़अ ाधुनिकप ाकिस्तानम ेंब ोलनद रेंव ेि नकटि स्थतह ै। यहाँ जमीन उपजाऊ थी तथा लोग गेहूँ और जौ की खेती किया करते थे। वे भेड़–बकरियाँ पालते थे। इसे नवपाषाण काल का सबसे पुराना गाँव माना जाता है। पुरातत्ववेत्ताओं को यहाँ की खुदाई में हिरन, सूअर, भेड़, बकरी तथा पशुओं हड्डियाँ मिली हैं। पुरातत्ववेत्ताओं को खुदाई में पक्की ईंटों से वर्गाकार तथा आयताकार मकानों के अवशेष प्राप्त हुए हुए हैं। मेहरगढ़ खुदाई में मिली कब्रों से पता चला है कि मृतक के साथ बकरी को भी दफनाया जाता था ताकि मृतक को भोजन प्राप्त हो सके।

(v) काँसा (कांस्य) टिन और ताँबे (ताम्र) की मिश्रधातु है। इस धातु से सर्वप्रथम औजार, हथियार तथा बर्तन बनाए गए। यह तभी संभव हो सका जब कॉपर (ताँबा) का आविष्कार हुआ और इसी कारण से इसे कांस्य युग को ताम्र युग कहा गया।

3. आठ पंक्तियों में उत्तर :

(i) नवपाषाण काल में बहुत–से किसान और चरवाहे झुंडों या समूहों में रहा करते थे, जिन्हें जनजाति कहा जाता था। सामान्यत: दो या तीन पीढ़ियाँ छोटे–छोटे गाँवों में रहा करती थीं और उनके मुख्य व्यवसाय शिकार करना, खाद्य वस्तुओं का संग्रह करना, खेती करना, मछली पकड़ना तथा पशुपालन थे। कृषि कार्य मुख्य रूप से महिलाओं पर निर्भर करता था। महिलाएँ सभी कृषि कार्य करती थीं। बच्चे फसलों की देखभाल करने, चिड़ियों को उड़ाने तथा जानवरों को भगाने के कार्य करके अपनी माताओं की मदद किया करते थे। महिलाएँ फसल को गहाने, भूसे से अलग करने तथा दानों

को पीसने जैसे कार्य भी किया करती थीं। पुरुष चरागाहों की तलाश करके पशुओं को चराया करते थे। सफाई, दूध दुहना तथा भोजन कराना आदि ऐसे कार्य थे जिन्हें स्त्री और पुरुष मिल-जुलकर किया करते थे। इसके अतिरिक्त वे बर्तन, टोकरियाँ, झोंपड़ियाँ तथा औजार बनाने जैसे कार्य भी करते थे। गायन, नृत्य, झोंपड़ियों तथा बर्तनों को सजाने जैसे कार्य भी स्त्री एवं पुरुष दोनों करते थे।

जनजातियाँ देवी और देवताओं की पूजा के लिए अपनी स्वयं की भाषाओं, संगीत, चित्रकारी, कहानियाँ आदि का प्रयोग करती थीं।

(ii) आदि मानव ने जंगली घास की भूमि को घास काटकर साफ किया और उस जमीन में पशुपालन के साथ-साथ उन बीजों की फसल बोनेल गा।र हनेव ेर्ा लएउ सनेझ ोंपड़ियाँब नाईंत थाझ ोंपड़ीव े आस-पास सब्जियाँ, दानों की फसलें तथा फलदार वृक्षों को उगाने लगा। पालतू पशुओं से मांस, दूध एवं खाल तथा गोबर मिला, जिससे वह ईंधन के लिए उपले तथा खाद बनाने लगा। इनके अतिरिक्त बैल, घोड़ा तथा ऊँट जैसे मजबूत जानवरों ने उसे एक स्थान से दूसरे स्थान के लिए बोझा ढोने तथा पकी हुई फसलों को घर लाने में सहायता प्रदान की। भेड़ तथा बकरी जैसे मवेशियों से उसे ऊन, खाल, मांस आदि प्राप्त हुआ, क्योंकि पशु दूध और भोजन (मांस) के अटूट स्रोत सिद्ध हुए। अत: उन्हें खाद्य भंडार के रूप में पुकारा गया। दानों को बीजों और भोजन के रूप में उपयोग में लाया जाता था।

(iii) दाओजली हादिंग पहाड़ी स्थल ब्रह्मपुत्र घाटी (असोम) में स्थित है, जो म्यांमार और चीन के मार्गों पर स्थित है। पुरातत्ववेत्ताओं को पत्थर से बने औजारों के अलावा ओखली और मूसल भी खुदाई में प्राप्त हुए हैं। संभवतया ओखली और मूसल भी दानों को कूटने के काम में लाए जाते थे तथा दाने खेत में उगाए जाते थे। 'जेडीट' नामक पत्थर चीन से लाया गया था, जो दाओजली हादिंग से प्राप्त

हुआ है। इसके अलावा जीवाश्म, लकड़ी से बने औजार तथा बर्तन भी यहाँ मिले हैं।

(iv) **नवपाषाण काल :** वह काल, जिसके दौरान शिकारी एवं भोजन संग्राहक से आदि मानव खाद्य उत्पादक बना, नवपाषाण काल कहलाया। इसकी अवधि 8000-4000 ई.पू. मानी गई है।

कृषि की शुरूआत और पशु पालन : नवपाषाण काल में मानव ने जंगल घास की भूमि की घास काटकर साफ किया और उस जमीन में पशुपालन के साथ-साथ उन बीजों की फसल बोने लगा। रहनेव ेर्ा लएउ सनेझ ोंपड़ियाँब नाईंत थाझ ोंपड़ीव ेअ ास-पास सब्जियाँ, दानों की फसलें तथा फलदार वृक्षों को उगाने लगा। पालतू पशुओं से मांस, दूध एवं खाल तथा गोबर मिला, जिससे वह ईंधन के लिए उपले (कंडे) तथा खाद बनाने लगा। बैल, घोड़ा तथा ऊँट जैसे मजबूत जानवरों ने उसे एक स्थान से दूसरे स्थान के लिए बोझा ढोने तथा पकी हुई फसलों को घर लाने में सहायता प्रदान की। भेड़ तथा बकरी जैसे मवेशियों से उसे ऊन, खाल, मांस आदि प्राप्त हुई। इन कारणों से पशुपालन की शुरूआत हुई।

पहिए और मिट्टी-पात्रों का आविष्कार : आदि मानव ने जंगल में गोल पत्थरों को जमीन पर लुढ़कते हुए देखा और उसका यह निरीक्षण पहिए के आविष्कार में बदल गया। पहिए की सहायता से आदि मानव मिट्टी के बर्तन बनाने लगा। यह पहिया कुम्हार का चाक कहलाया। उसने पहियों की सहायता से बैलगाड़ी का रथ तथा ऊन व कपास से धागा बनाने के लिए चरखे का निर्माण किया।

औजार : नवपाषाण कालीन मानव के औजार संख्या में अधिक तथा उपयोगी सुधारों से निर्मित थे। इस काल में भी औजार पत्थर से बनाए जाते थे। उन पर पॉलिश की जाती थी तथा वे तेज धार वाले व मानव की जरूरतों के अनुसार बनाए गए थे। दराँती (हँसिया), धनुष-बाण आदि सभी इस युग के महत्त्वपूर्ण औजार थे।

बर्तन : पुरातत्ववेत्ताओं को खुदाई में मिट्टी के बहुत-से बर्तन प्राप्त प्राप्त हुए हैं। इनमें कुछ बर्तनों पर सजावट की गई है तथा उनका उपयोग अनाज या भंडारण के लिए किया जाता होगा। कुछ बर्तनों को भोजन के लिए अनाज के दाने; जैसे–गेहूँ, चावल, मसूर तथा मांस पकाने के लिए प्रयोग किया जाता था।

रीति-रिवाज तथा प्रथाएँ : बहुत-से किसान और चरवाहे झुंडों या समूहों में रहा करते थे, जिन्हें जनजाति कहा जाता था। सामान्यत: दो या तीन पीढ़ियाँ छोटे-छोटे गाँवों में रहा करती थीं और उनके मुख्य व्यवसाय शिकार करना, खाद्य वस्तुओं का संग्रह करना, खेती करना, मछली पकड़ना तथा पशुपालन थे। कृषि कार्य मुख्य रूप से महिलाओं पर निर्भर करता था। बच्चे फसलों की देखभाल करते थे। पुरुष चरागाहों की तलाश करके पशुओं को चराया करते थे। गायन, नृत्य, झोंपड़ियों तथा बर्तनों को सजाने जैसे कार्य भी स्त्री एवं पुरुष दोनों करते थे। जनजातियाँ देवी और देवताओं की पूजा के लिए अपनी स्वयं की भाषाओं, संगीत, चित्रकारी, कहानियाँ आदि का प्रयोग करती थीं।

सुस्थापित जीवन का आरंभ : किसानों और चरवाहों ने गाँवों में प्रधान या मुखिया के स्वामित्व में अपने परिवारों में रहना शुरू कर दिया था। जमीन की उर्वरा शक्ति नष्ट होने पर किसान उस स्थान को छोड़कर अन्य स्थान के लिए प्रस्थान कर जाते थे। वहाँ खेती करके नए गाँव की स्थापना करते थे। इस प्रकार के नवपाषाण कालीन स्थल बुरजाहोम, मेहरगढ़, कोन्डिहवा, महागारा, हल्लूर, पायमपल्ली, चिन्द तथा दाओजली हादिंग में मिले हैं।

4. निम्नलिखित का उचित कारण दीजिए :

(i) जानवरों से दूध और भोजन (मांस) अटूट मात्रा में प्राप्त होते थे। इसी कारण जानवरों को भोजन का भंडार कहा जाता था।

(ii) नवपाषाणक ालीनम ानवन ेप शुओंक ेप ालतूब नानाप ारंभक र

दिया था क्योंकि पालतू पशुओं से मांस, दूध एवं खाल तथा गोबर मिला, जिससे वह ईंधन के लिए उपले (कंडों) तथा खाद बनाने लगे।

(iii) नवपाषाण काल में कृषि कार्य महिलाओं पर निर्भर था क्योंकि पुरुष चरागाहों की तलाश करके पशुओं को चराने जाया करते थे, जिसके कारण महिलाओं को कृषि से संबंधित सभी कार्य करने पड़ते थे।

(iv) काँसा (कांस्य) टिन और ताँबे (ताम्र) की मिश्रधातु है। इस धातु से सर्वप्रथम औजार, हथियार तथा बर्तन बनाए गए। यह तभी संभव हो सका जब कॉपर (ताँबा) का आविष्कार हुआ और इसी कारण से इस कांस्य युग को ताम्र युग कहा गया।

4 सिंधु घाटी की सभ्यता

रचनात्मक निर्धारण

1. सही विकल्प पर सही (✓) का निशान लगाइए :

(i) (a) ताँबा (ii) (c) पीपल की (iii) (a) धोती
(iv) (a) शहरी (v) (a) ईश्वर (vi) (b) गुजरात
(vii) (a) बंदरगाह

2. निम्नलिखित को सुमेल कीजिए :

'अ'	'ब'
ताँबा	राजस्थान और सोमान
टिन	अफगानिस्तान
सोना	कर्नाटक
कीमती पत्थर	गुजरात तथा ईरान

3. रिक्त स्थानों की पूर्ति कीजिए :

(i) डॉ. दयाराम साहनी (ii) प्रमाण
(iii) कालीबंगन (iv) चार
(v) ताँबे

4. निम्नलिखित प्रत्येक कथन का नाम लिखिए :

(i) सिंधु घाटी सभ्यता (ii) सिंध प्रांत
(iii) मोहनजोदड़ो (iv) कालीबंगन और लोथल
(v) पीपल

5. सत्य या असत्य बताइए :

(i) सत्य (ii) सत्य (iii) असत्य
(iv) सत्य (v) असत्य (vi) सत्य

संकलित निर्धारण

1. एक पंक्ति में उत्तर :

(i) भारत में हड़प्पा सभ्यता रोपड़ (पंजाब), कालीबंगन (राजस्थान), लोथल, रंगपुर और रोजदी (गुजरात); बनवाली (हरियाणा); कोटदीजी, मरी व चन्हूदड़ो (पाकिस्तान) तथा आलमगीरपुर (उत्तर प्रदेश) तथा इनके अतिरिक्त माण्डा (जम्मू एवं कश्मीर), दाइमाबाद (उत्तरी महाराष्ट्र) में पनपी।

(ii) सिंधु घाटी सभ्यता के लोग ताँबा धातु से अपने औजार और हथियार बनाते थे।

(iii) पीपल के वृक्ष की।

(iv) हड़प्पा सभ्यता के निवासियों को लोहे का ज्ञान नहीं था।

(v) हड़प्पास भ्यताव ेि नवासीअ न्नक ा भ ंडारणभ ूमिगतब ड़ेम ाटो (अन्नागार) में करते थे।

2. चार पंक्तियों में उत्तर :

(i) भारतीय पुरातत्ववेत्ता डॉ. दयाराम साहनी ने सिंधु घाटी सभ्यता (हड़प्पा सभ्यता) की खोज की। यह सभ्यता पाकिस्तान के

माँटगुमरी जिले में स्थित हड़प्पा नामक स्थान में रावी नदी के किनारे 1921 ई. में विद्यमान थी। बाद में 1922 ई. में पाकिस्तान के सिंध प्रांत के लरकाना जिले में स्थित मोहनजोदड़ो के भग्नावशेष डॉ. राखालदास बनर्जी के संरक्षण में की गई खुदाई में प्राप्त हुए। हड़प्पा और मोहनजोदड़ो सिंधु घाटी में अवस्थित हैं, इसीलिए इसे सिंधु घाटी की सभ्यता कहते हैं।

(ii) हड़प्पा सभ्यता में प्रत्येक नगर दो भागों में बँटा हुआ था—बड़ा तथा नीचे का भाग अर्थात् पश्चिमी भाग छोटा था। दूसरा भाग छोटा था परंतु निचले भाग की अपेक्षा ऊँचा था। नगर के चारों ओर पक्की ईंटों से बना हुआ परकोटा था। कुछ नगरों में विशेष उद्देश्यों हेतु विशेष प्रकार की इमारतें बनी थीं। नगर आयताकार खंडों में विभाजित थे तथा प्रत्येक गली में एक कुआँ होता था। मकानों की नींव चौड़ी और गहरी होती थी। अनेक इमारतों में कई मंजिलें भी पाई गई हैं। हड़प्पा लोथल और मोहनजोदड़ो में की गई खुदाई में बड़े अन्नागार भी मिले हैं।

(iii) लोथल मुख्य बंदरगाह था, जहाँ से व्यापार किया जाता था। गुजरात स्थित खम्भात की खाडी में लगी हुई साबरमती नदी की सहायक नदी के पास में लोथल नगर स्थित था। पत्थर, कवच, मनकों तथा धातु के महत्त्वपूर्ण कारखाने भी यहाँ स्थित थे। अनेक मुद्राएँ और मोहरें लोथल के भंडारगृहों से खुदाई में प्राप्त हुए हैं।

(iv) पुरातत्ववेत्ताओं द्वारा गुजरात में की गई खुदाई में धोलावीरा नगर का पता चला, जो कच्छ के रन में खादि बेयत में स्थित था। इस नगर के बसने का कारण यहाँ की उपजाऊ जमीन तथा ताजे पानी का बड़ी मात्रा में उपलब्ध होना था। हड़प्पा नगरों के दो विभागों की अपेक्षा धोलावीरा में तीन विभाग थे। प्रत्येक विभाग पत्थर की बड़ी दीवारोंअ ौरद रवाजोंस े ि घराह ोताथ ा।प ्रत्येकश ाहरस ार्वजनिक समारोहों के आयोजनों के लिए लंबे-चौड़े पार्कों से सुसज्जित था।

सफेद पत्थर की शिलाओं पर हड़प्पा लिपि वाला काष्ठीय लेखन देखा जा सकता है। हड़प्पा लेखों वाली मुद्राएँ भी धोलावीरा में पाई गई थीं।

(v) **हड़प्पा सभ्यता के निवासियों के आभूषण :** स्त्रियों द्वारा पहने जाने वाले आभूषणों में प्रमुख आभूषण चूड़ियाँ, कंगन, हार, कानों की बालियाँ आदि थे जबकि पुरुष अँगूठी तथा ताबीज पहनते थे। सोने-चाँदी से बने आभूषण धनी लोगों में तथा काँसा, ताँबा, मनके व हड्डियों से बने आभूषण गरीब लोगों में प्रचलित थे।

हड़प्पा सभ्यता के निवासियों की वेशभूषा : स्त्रियाँ शाल तथा छोटे लहँगे जैसे वस्त्र धारण करती थीं। पुरुष धोती पहनते थे जो बाएँ कंधे से दाएँ कंधे तक लपेटी जा सकती थीं। उनके वस्त्र सूती और ऊनी धागों से बने होते थे।

(vi) हड़प्पा सभ्यता के प्रत्येक नगर में जल निकासी की उचित व्यवस्था थी। अधिकतर नगरों में नालियाँ ढकी हुई थीं। प्रत्येक नाली में हल्का-सा ढलान दिया गया था ताकि पानी बिना रूकावट के आगे की ओर बह सके। एक गली के सभी घरों की नालियाँ मुख्य नाली से जुड़ी होती थीं, जो गंदे पानी को नगर से बाहर बहने वाले बड़े नाले में ले जाती थीं। थोड़ी-थोड़ी दूरी पर नालियों की सफाई करने के लिए निरीक्षण छिद्र बने थे।

(vii) हड़प्पा सभ्यता के निवासी लेखन कला से सुपरिचित थे। लगभग 550 मोहरों की लिखाई के आधार पर 386 चिह्नों की एक तालिका बना ली गई है। उस समय तुच्छ लेखक इसे लिखना जानते थे तथा मोहरों को तैयार करने में सहायता पहुँचाते थे। लिपि चित्रात्मक थी तथा मुद्राओं पर अंकित थी। इससे पता चलता है कि हड़प्पा सभ्यतावासी पढ़ना-लिखना जानते थे। परंतु यह लिपि अब तक नहीं पढ़ी जा सकी।

3. आठ पंक्ति में उत्तर :

(i) **सिंधु घाटी के समय सामाजिक दशा :** व्यवसाय के आधार पर

सिंधुघ ाटीस भ्यताव ेल ोगि नम्नलिखितच ारव र्गोंम ेंि वभाजित थे-

(1) **विद्वान :** यह समूह में ज्योतिषी, पुरोहित तथा वैद्य सम्मिलित थे। वे किले जैसी इमारतों में निवास करते थे।

(2) **अधिकारी :** इस समूह में राजकीय कर्मचारी तथा सिपाही सम्मिलित थे। वे लोग नगरों में निवास किया करते थे।

(3) **व्यापारी :** इस समूह में व्यापारी, उद्योगपति, कलाकार तथा शिल्पकारों को सम्मिलित किया गया था। ये लोग नगरों के निचले भाग में निवास करते थे।

(4) **श्रमिक :** इस वर्ग में श्रमिक, किसान तथा मछुआरे सम्मिलित थे। वे नगर के बाहर स्थित झोंपड़ियों में रहा करते थे।

सिंधुघ ाटीव ेस मयअ ार्थिकद शा: सिंधुवासियों का मुख्य व्यवसाय कृषि था, परंतु कपड़ा बुनना, मिट्टी के बर्तन बनाना, आभूषण,ि खलौनेब नाना,प त्थरक ाटना,म ोहरेंब नाना,ब ढ़ईगिरी तथा लुहारगिरी आदि अन्य महत्त्वपूर्ण व्यवसाय भी इस सभ्यता के समयप्र चलनम ेंथ ो।ि मट्टीव ेब र्तनब नानेक ाक लाि वकसित अवस्था में थी क्योंकि खुदाई में विभिन्न आकारों तथा नमूने के सजावटी बर्तन मिले हैं। चरने वाले पशुओं; जैसे-भेड़, बकरी तथा भैंसों का पालन भी उनका दूसरा महत्त्वपूर्ण व्यवसाय था। हड़प्पा सभ्यताक ाम ोहरेंउ ल्लेखनीयए वंम हत्त्वपूर्णथ ीं।इ सस मयम ें व्यापार की एक विकसित प्रणाली थी। मोहनजोदड़ो एक व्यापारिक केंद्र था और अनेक व्यापारी वहाँ रहा करते थे।

(ii) **हड़प्पा सभ्यता के निवासियों का प्रशासन :** सफाई, व्यापार एवं वाणिज्य, कर वसूली, कानून एवं शांति बनाने हेतु विभिन्न प्रकार के विभागों की स्थापना की गई थी। पुजारियों के समूह या धनी व्यापारियों के द्वारा संभवतया नगर प्रशासन का कार्य किया जाता था।

हड़प्पा सभ्यता के निवासयों के स्थल : भारत में हड़प्पा सभ्यता रोपड़ (पंजाब), कालीबंगन (राजस्थान), लोथल, रंगपुर और रोजदी (गुजरात); बनवाली (हरियाणा); कोटदीजी, मरी व चन्हूदड़ो (पाकिस्तान) तथा आलमगीरपुर (उत्तर प्रदेश) तथा इनके अतिरिक्त माण्डा (जम्मू एवं कश्मीर), दाइमाबाद (उत्तरी महाराष्ट्र) में पनपी।

हड़प्पा सभ्यता के निवासियों की पोशाक : स्त्रियाँ शाल तथा छोटे लहँगे जैसे वस्त्र धारण करती थीं। पुरुष धोती पहनते थे, जो बाएँ कंधे से दाएँ कंधे तक लपेटी जा सकती थीं। उनके वस्त्र सूती और ऊनी धागों से बने होते थे।

हड़प्पा सभ्यता के निवासियों का भोजन : हड़प्पावासी खाने-पीने के शौकीन थे। वे शाकाहारी और मांसाहारी दोनों ही प्रकार के भोजन ग्रहण करते थे। गेहूँ, जौ तथा खजूर से खाना तैयार किया जाता था। वे दूध, फल, सब्जियाँ, मांस, मछली तथा अंडों का प्रयोग भी करते थे।

(iii) **धोलावीरा :** पुरातत्ववेत्ताओं द्वारा गुजरात में की गई खुदाई में धोलावीरा नगर का पता चला, जो कच्छ के रन में खादि बेयत में स्थित था। इस नगर के बसने का कारण यहाँ की उपजाऊ जमीन तथा ताजे पानी का बड़ी मात्रा में उपलब्ध होना था। हड़प्पा नगरों के दो विभागों की अपेक्षा धोलावीरा में तीन विभाग थे। प्रत्येक विभाग पत्थर की बड़ी दीवारों और दरवाजों से घिरा होता था। प्रत्येक शहर सार्वजनिक समारोहों के आयोजनों के लिए लंबे-चौड़े पार्कों से सुसज्जित था। सफेद पत्थर की शिलाओं पर हड़प्पा लिपि वाला काष्ठीय लेखन देखा जा सकता है। हड़प्पा लेखों वाली मुद्राएँ भी धोलावीरा में पाई गई थीं।

लोथल : लोथल मुख्य बंदरगाह था, जहाँ से व्यापार किया जाता था। गुजरात स्थित खम्भात की खाडी में लगी हुई साबरमती नदी की

सहायकन दीव ेप ासम ेंल ेथलन गरि स्थतथ ाा।प त्थर,क वच, मनकों तथा धातु के महत्त्वपूर्ण कारखाने भी यहाँ स्थित थे। अनेक मुद्राएँ और मोहरें लोथल के भंडारगृहों से खुदाई में प्राप्त हुए हैं।

4. निम्नलिखित के उचित कारण दीजिए :

(i) सिंधु घाटी सभ्यता मुख्यत: शहरी सभ्यता थी क्योंकि विभिन्न स्थलों के खंडहर सिद्ध करते हैं कि लोग शहरों में निवास करते थे।

(ii) सिंधु घाटी की सभ्यता सर्वप्रथम पाकिस्तान में हड़प्पा नामक नगर में पनपी थी, इसीलिए इसे हड़प्पा सभ्यता भी कहा जाता है।

(iii) प्रत्येक घर में ढालयुक्त नालियाँ थीं ताकि पानी बिना रूकावट के आगे की ओर बह सके।

(iv) इस सभ्यता में पॉटरी विकसित अवस्था में थी क्योंकि खुदाई में विभिन्न आकारों तथा नमूनों के सजावटी बर्तन मिले हैं।

5 वैदिक काल (1500 ई.पू.-600 ई.पू)

रचनात्मक निर्धारण

1. सही विकल्प पर सही (✓) का निशान लगाइए :

(i) (a) ऋग्वेद (ii) (a) उत्तरी ध्रुव

(iii) (b) परिवार का मुखिया (iv) (a) सोम से

(v) (c) जल के देवता के रूप में (vi) (a) 1028

(vii) (c) 4 (viii) (c) श्रेष्ठिन

2. सत्य या असत्य बताइए :

(i) सत्य (ii) सत्य (iii) सत्य (iv) असत्य

(v) असत्य (vi) सत्य (vii) सत्य (viii) सत्य

(ix) असत्य

3. निम्नलिखित को सुमेल कीजिए :

'अ'	'ब'
ग्रामिणी	गाँव का मुखिया
कुलुप	परिवार का मुखिया
सभा	राजा पर नियंत्रण रखती थी
ऋग्वेद	प्राचीनतम वैदिक साहित्य
श्रेष्ठिन	व्यापारिक संगठन का अध्यक्ष
मेगालिथ	कांस्य युग

4. मैं कौन हूँ?

(i) ग्रामिणी (ii) सेनानी (iii) कुलुप

(iv) ऋग्वेद (v) सभा और समिति

संकलित निर्धारण

1. एक पंक्ति में उत्तर :

(i) वैदिक सभ्यता के स्रोत चार वेद हैं, जिनका नाम–ऋग्वेद, अथर्ववेद, यजुर्वेद तथा सामवेद हैं।

(ii) चारों वेदों के नाम ऋग्वेद, अथर्ववेद, यजुर्वेद तथा सामवेद हैं। प्राचीनतम वेद ऋग्वेद है।

(iii) सिंधु घाटी सभ्यता के पतन के पश्चात् वैदिक सभ्यता का काल प्रारंभ हुआ तथा इस काल के निवासी आर्य थे।

(iv) अनार्य जनों को दासों या दस्युओं के नाम से जाना जाता था।

(v) चारों वर्णों के नाम ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य तथा शूद्र हैं।

(vi) यज्ञ आदि विशेष अवसरों पर पिया जाने वाला पेय सोम था।

(vii) लोकमान्य तिलक के अनुसार उत्तरी ध्रुव से आए निवासी आर्य थे।

(viii) कबीले का मुख्य गोपति कहलाता था।

(ix) मानव जीवन के चार आश्रम ब्रह्मचर्याश्रम, गृहस्थाश्रम, वानप्रस्थ आश्रम, संन्यासाश्रम हैं।

(x) पूर्व वैदिक काल में प्रचलित स्वर्ण मुद्रा निष्क थी।

(xi) राजा, पुरोहित (पुजारी) तथा सेनानी राज्य के प्रमुख अधिकारी थे। इन्हें रत्निन कहा जाता था।

(xii) चरक एक वैद्य था, जिसने चरक संहिता की रचना की।

2. चार पंक्तियों में उत्तर :

(i) 'आर्य' शब्द का अर्थ है–श्रेष्ठ या कुलीन। भारतीय विद्वानों के अनुसार आर्यों का मूल निवास भारत था तथा पश्चिमी एिशया से स्थानांतरित होकर ये भारत के अन्य हिस्सों में चले गए थे। इसलिए इन्हें 'इंडो-आर्यन' भी कहा जाता है। कुछ भारतीय इतिहासकारों के अनुसार आरंभ में आर्य भारत में रहते थे। आर्य गेहूँ और जौ का प्रयोग करते थे।

(ii) यूरोपीय भाषाएँ; जैसे–अंग्रेजी, जर्मन, यूनानी, फ्रांसीसी, इटैलियन, स्पेनिश तथा अन्य भारतीय भाषाएँ; जैसे–हिंदी, असमी, गुजराती, कश्मीरी, सिंधी मिलकर भाषाओं का एक परिवार बनाती हैं, जिसे इण्डोयूरोपियन के नाम से जाना जाता है और संस्कृत भी इस परिवार का एक अंग है।

(iii) पूर्व वैदिक काल में स्त्रियों का सम्मान किया जाता था। लोपामुद्रा, घोषा, अपाला तथा विश्वधरा आदि स्त्रियाँ उस समय की विद्वान महिलाएँथ ीं। राज परिवारम ें बहुपत्नी प्रथा प्रचलितथ ी।अ नेक मामलों में पत्नी अपने पति पर निर्भर रहती थी। लड़की का जन्म बुरा नहीं माना जाता था।

(iv) पूर्व वैदिक काल में समाज चार वर्णों में विभाजित था–ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य और शूद्र। ब्राह्मण दान लेने और देने के काम में लगे हुए थे। क्षत्रिय बहादुर थे तथा राज्य की रक्षा का भार उन्हीं के कंधों पर था। वैश्य लोग खेती तथा व्यापार करते थे। शूद्रों का मुख्य कार्य इन तीनों वर्णों की सेवा करना था।

जाति प्रथा बहुत क्लिष्ट थी। समाज दो जातियों में बँटा हुआ

था–आर्य तथा अनार्य। आर्य, अनार्यों को घृणा की दृष्टि से देखते थे। इस काल में अंतर्जातीय विवाह भी प्रचलित थे।

(v) उत्तर वैदिक काल में जीवन की चार अवस्थाओं का वर्णन निम्नलिखित है–

(1) ब्रह्मचर्याश्रम : जन्म से लेकर 25 वर्ष तक की आयु को मनुष्य ब्रह्मचारी के रूप में व्यतीत करता था।

(2) गृहस्थाश्रम : 25 वर्ष ब्रह्मचर्याश्रम में रहने के पश्चात् मनुष्य विवाह के बंधन में बँधता था। वह 25 से 50 वर्ष की आयु होने तक अपने परिवार के साथ रहकर गृहस्थी बसाता था।

(3) वानप्रस्थ आश्रम : मनुष्य के जीवन की 50 से 75 वर्ष तक कीअ ायुक ीअ वधिव ानप्रस्थअ ाश्रमक हलातीथ ीा।ग ृहस्थक ी जिम्मेदारियों से छुटकारा पाने के लिए मनुष्य सपत्नीक वनों में निवास करने के लिए चला जाता था।

(4) सन्यांसाश्रम : 75 से 100 वर्ष की आयु की अवधि मनुष्य सन्यासाश्रम में व्यतीत करता था। वह सांसारिक कार्यों से स्वयं को पूर्णत: स्वतंत्र कर लेता था।

(vi) उत्तर वैदिक काल में राज्य एवं समाज पर राजा का नियंत्रण होता था तथा उसका पद वंशानुगत था। इस काल में कुरू, पंजाब,कोशल, काशी, विदेह आदि जैसे बड़े राज्यों की स्थापना हुई। राजा, पुरोहित (पुजारी) तथा सेनानी राज्य के प्रमुख अधिकारी थे। इन्हें रत्निन कहा जाता था। राजा स्वयं मुख्य न्यायाधीश होता था परंतु ब्राह्मणों का स्थान राजकीय कार्यों में महत्त्वपूर्ण था तथा वे काफी मामलों में हस्तक्षेप करते थे।

(vii) कांस्य युग में पत्थर के बड़े-बड़े टुकड़े, जिन्हें मेगालिथ्स कहा जाता था, 3000 वर्ष पूर्व लोगों ने मृतकों को दफन करने की जगह स्मारक के रूप में खड़े किए थे। सामान्यत: काले और लाल रंग के बर्तनों को मृतकों के साथ दफनाया जाता था। मृतकों की कब्रों से

लोहेक ीव ुल्हाड़ियाँअ ौरख ांजर,घ ोड़ोंव ेव ंकाल,प त्थरअ ौर सोने के आभूषण के अतिरिक्त घोड़े पर लगाए जाने वाले उपकरण आदि भी प्राप्त हुए हैं। वयस्क मृतकों को जमीन में दफनाया जाता था जबकि बड़ी उम्र के मृतकों को घर के आँगन में भोजन और पानी से भरे पात्रों के साथ दफना दिया जाता था।

(viii) मूल रूप से कांस्य युग के लोग खेती करते थे। वे खेतों में गेहूँ, जौ, चावल, दालें, मटर, ज्वार-बाजरा, सीसेम आदि उगाते थे। वे बेर, आँवला, जामुन, खजूर आदि फलों का उत्पादन भी करते थे। इसके अतिरिक्त पशुपालन भी उनका दूसरा महत्त्वपूर्ण व्यवसाय था। वे लोग भैंस, बकरी, भेड़, सूअर, मछली आदि पालते थे।

3. आठ पंक्तियों में उत्तर :

(i) सिंधु घाटी सभ्यता के पतन के पश्चात् वैदिक सभ्यता का काल प्रारंभ हुआ तथा इस काल के निवासी 'आर्य' कहलाए।

'आर्य' शब्द का अर्थ है–श्रेष्ठ या कुलीन। भारतीय विद्वानों के अनुसार आर्यों का मूल निवास भारत था तथा पश्चिमी एिशया से स्थानांतरित होकर ये भारत के अन्य हिस्सों में चले गए थे। इसलिए इन्हें 'इंडो-आर्यन' भी कहा जाता है। कुछ भारतीय इतिहासकारों के अनुसार आरंभ में आर्य भारत में रहते थे। आर्य गेहूँ और जौ का प्रयोग करते थे।

(ii) **पूर्व वैदिक काल में आर्यों की राजनीतिक दशा :** पूर्व वैदिक काल में अनेक जनजातीय समाज (कबीले) पाए जाते थे। इन्हें जन कहा जाता था। अनार्य जनों को दासों या दस्युओं के नाम से जाना जाता था। कबीले का मुखिया गोपति कहलाता था। गण, विधाता, सभा और समिति कबीलाई सभाएँ थीं। सभाएँ प्रशासनिक और सरकारी कार्यों को संपन्न करती थीं। ग्राम का मुखिया ग्रामीणी कहलाता था। पुरोहित, सेनानी और ग्रामीणी राजा की सहायता किया करते थे। पुरोहित या पुजारी को विशेष अधिकार दिया गया था क्योंकि वह राजा का सलाहकार, उपदेशक (गुरु), ऋषि और

मित्र था। वह युद्ध में राजा के साथ जाता था तथा देश की रक्षा तथा युद्ध में विजय के लिए जिम्मेदार था। राजा का चुनाव कुलजनों या विश से किया जाता था। सभा और समिति राजा की शक्तियों पर नियंत्रण रखती थीं। समिति से सभा छोटी होती थी। राजा भी समिति का सदस्य होता था। समिति का मुख्य कार्य सरकारी प्रश्नों को निर्णित करना तथा राजा की अवधि को निश्चित करना था।

पूर्व वैदिक काल में आर्यों की आर्थिक दशा : आर्य लोग गाँवों में निवास करते थे, इसीलिए उनकी आर्थिक दशा मुख्य रूप से खेतीप रअ ाधारितथ ीाव ेल ेागख ेातोंम ेंग ेहूँ,ज ौ,च ना,च ावल, सब्जियाँ, कपास तथा उड़द उगाते थे। पशुपालन भी उनका दूसरा महत्त्वपूर्ण व्यवसाय था। वे गाय, बकरी, बैल और घोड़े पालते थे। व्यापारियों को वणिक कहा जाता था। व्यापार में वस्तु विनिमय सामान्य प्रणाली थी। वस्तुओं का मूल्य गायों की संख्या में निश्चित होता था। निष्क नामक स्वर्ण मुद्रा प्रचलन में थी। व्यापार के लिए जहाजनुमा बड़ी नावों का प्रयोग किया जाता था।

रर्थ नर्माण,म छलीप कड़ना,ब ढ़ईगिरी,ब ुनाई,स् वर्णकारी,ब र्तन बनाना, पशुचारण आदि आर्यों के अन्य व्यवसाय थे। ब्राह्मण अनेकक र्मकांडोंअ ौरय ज्ञोंक ाअ ायोजनक रकेअ पनीज ीविका कमाते थे। शिक्षा का कार्य भी उनके द्वारा किया जाता था। वे मरीजों को औषधि देने का कार्य (वैद्यक) भी करते थे।

(iii) **उत्तर वैदिक काल में सामाजिक जीवन :** उत्तरकालीन आर्यों का सामाजिक जीवन अतिसरल तथा आडंबरविहीन था। गाँव शहरों में बदल गए तथा बड़े शहरों ने राज्यों का रूप ले लिया था। जाति व्यवस्था बहुत जटिल हो गई थी तथा पूरा समाज ब्राह्मण, क्षत्रिय और वैश्यों में बँटा हुआ था जबकि अनार्यों को शूद्रों में सम्मिलित किया गया था। समाज में स्त्रियों की दशा संतोषजनक नहीं थी। उच्च वर्ग के लोगों में बहुविवाह प्रथा प्रचलित थी। समाज में विधवा विवाह प्रथा भी प्रचलित थी। समाज में जीवन चार आश्रमों में विभाजित था—ब्रह्मचर्याश्रम, गृहस्थाश्रम, वानप्रस्थ आश्रम,

सन्यांसाश्रम।

उत्तर वैदिक काल में राजनैतिक जीवन : उत्तर वैदिक काल में राज्य एवं समाज पर राजा का नियंत्रण होता था तथा उसका पद वंशानुगत था। इस काल में कुरू, पंजाब,कोशल, काशी, विदेह आदि जैसे बड़े राज्यों की स्थापना हुई। राजा, पुरोहित (पुजारी) तथा सेनानी राज्य के प्रमुख अधिकारी थे। इन्हें रत्निन कहा जाता था। राजा स्वयं मुख्य न्यायाधीश होता था परंतु ब्राह्मणों का स्थान राजकीय कार्यों में महत्त्वपूर्ण था तथा वे काफी मामलों में हस्तक्षेप करते थे।

(iv) कांस्य युग में, पत्थर के बड़े-बड़े टुकड़े, जिन्हें मेगालिथ्स कहा जाता था, 3000 वर्ष पूर्व लोगों ने मृतकों को दफन करने की जगह स्मारक के रूप में खड़े किए थे। जमीन पर खड़ा हुआ अकेला बड़ा पत्थर या पत्थर के बड़े-बड़े टुकड़ों से बनाई गई वृत्ताकार रचना इस बात की संकेत थी कि वहा मृतकों को दफनाया गया है। सामान्यत: काले और लाल रंग के बर्तनों को मृतकों के साथ दफनाया जाता था। मृतकों की कब्रों से लोहे की कुल्हाड़ियाँ और घोड़ों के कंकाल, पत्थर और सोने के आभूषणों के अतिरिक्त घोड़े पर लगाए जाने वाले उपकरण आदि भी प्राप्त हुए हैं। उदाहरण के लिए, एक कंकाल के साथ सोने के 33 मनके, पत्थर के 2 मनके, ताँबे की चार चूड़ियाँ तथा एक शंख का कवच ब्रह्मगिरी से प्राप्त हुआ है जबकि कुछ नरकंकाल बर्तनों के साथ मिले हैं। इस बात से यह पता चलता है कि धनी और निर्धनों के मृतक संस्कारों में भी भेद रहा होगा।

वंश विशेष या परिवार विशेष के अपने अलग कब्रिस्तान रहे होंगे। कब्रिस्तानों में पत्थरों से बनी वृत्ताकार आकृतियाँ या जमीन में गड़े बड़े पत्थर पहचान के लिए लगाए गए थे ताकि वापस आने पर लोग उस जगह को पहचान सकें। वयस्क मृतकों को जमीन में दफनाया जाता था जबकि बड़ी उम्र के मृतकों को घर के आँगन में

भोजन और पानी से भरे पात्रों के साथ दफना दिया जाता था।

4. निम्नलिखित शब्दों की व्याख्या कीजिए :

(i) **बहुविवाह :** उच्च वर्ग के लोगों अथवा राजाओं द्वारा एक से अधिक विवाह करने की प्रचलित प्रथा।

(ii) **सूक्त :** स्तुतियाँ या शिष्ट कथन सूक्त कहलाते हैं।

(iii) **आर्य :** सिंधु घाटी सभ्यता के पतन के पश्चात् वैदिक सभ्यता का काल प्रारंभ हुआ तथा इस काल के निवासी आर्य थे।

(iv) **वर्ण :** समाज में विभाजित चार वर्ग वर्ण कहलाए। ये चार वर्ण थे–ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य और शूद्र।

(v) **जन :** किसी स्थान पर रहने वाले लोग जन कहलाते हैं।

6 भारत के प्राचीन राज्य (600 ई.पू.-100 ई.पू.)

रचनात्मक निर्धारण

1. सही विकल्प पर सही (✓) का निशान लगाइए :

(i) (a) एटा (यू.पी.) (ii) (b) गणराज्य

(iii) (c) 16 (iv) (a) मेरठ

(v) (a) भाग (vi) (a) पटना

(vii) (b) वज्जि (viii) (b) वैशाली

2. रिक्त स्थानों की पूर्ति कीजिए :

(i) वैदिक साहित्य (ii) खेती (iii) राजधानी

(iv) महावीर (v) महाजनपदों

3. निम्नलिखित को सुमेल कीजिए :

'अ'	'ब'
भाग	कर
जनपद	राज्य
संघ	समिति
वज्जि	गणराज्य
मगध	बलि

4. सत्य या असत्य बताइए :

(i) सत्य (ii) असत्य (iii) सत्य

(iv) सत्य (v) सत्य

संकलित निर्धारण

1. एक पंक्ति में उत्तर :

(i) गंगा के उत्तर का विशाल मैदान, पूर्वी उत्तर प्रदेश तथा उत्तरी बिहार में निवास करने वाली जातियों ने बड़े-बड़े राज्यों का निर्माण किया, जिन्हें जनपद कहते हैं तथा बड़े जनपदों को महाजनपद कहते हैं।

(ii) जनपद और महाजनपदोंके आय के स्रोत कर थे।

(iii) अनेक सदस्यों का संघ गण कहलाता है।

(iv) वह जनपद, जिसका वंशानुगत शासन होता है, राजतंत्र कहलाता है।

(v) अंग, मगध, वज्जि, कोशल, काशी।

(vi) सिकंदर महान, 2300 वर्ष पूर्व मकदूनिया (यूनान) का राजा था।

(vii) महाजनपदों की मुद्रा 'कर' के रूप में वसूली जाती थी।

2. चार पंक्तियों में उत्तर :

(i) ब्राह्मण, आरण्यक, वैदिक साहित्य तथा बौद्ध एवं जैन साहित्य जनपदों एवं महाजनपदों की जानकारी के स्रोत हैं। इसके अतिरिक्त, पुरातत्ववेत्ताओं को जनपदों तथा महाजनपदों के स्रोत पुराना किला (दिल्ली),ह स्तिनापुर(मेरठ)त थाए टाव ेf नकटअ तरंजीखेडा (उत्तर प्रदेश) में खुदाई में प्राप्त हुए थे।

(ii) महाजनपदों में शिल्प; जैसे–धातु कर्म, लकड़ी का कार्य, बर्तन बनाना तथा खेती करना आदि बहुत लोकप्रिय थे, जिन्होंने व्यापार को जन्म दिया। खेती में लकड़ी के हल की जगह लोहे के फलक वाले हल का प्रयोग होने लगा, जिससे अन्न का अधिक उत्पादन होनेल गा।म हाजनपदोंक ीअ ायक ाम ुख्यस ोतक रथ ा।अ पनी वित्तीय जरूरतों की पूर्ति के लिए राजा प्रजा से अनेक प्रकार के कर इकट्ठा करते थे।

(iii) जनपदों में कर के स्रोत निम्नलिखित थे–

(1) किसानों से उनकी उपज के 1/6 भाग की दर से कर वसूला जाता था, जिसे भाग या हिस्सा कहते थे।

(2)ि शल्पकारोंस ेभ ीक रव सूलाज ाताथ ा,प रंतुय हम ुद्राय ा नकदी के रूप में नहीं होता था। 'कर' के बदले लुहार या बुनकर को माह में एक दिन राजा के महल में कार्य करना पड़ता था।

(3)च रवाहोंय ाप शुपालकोंक ोभ ीर ाजाक ोप शुओंय ाअ पने उत्पादों को देकर राजा को कर चुकाना पड़ता था।

(4) व्यापारियों को भी क्रय-विक्रय पर कर देना होता था।

(5) शिकारियों और संग्राहकों को भी वन उत्पादों के रूप में राज्य को कर की अदायगी करनी पड़ती थी।

(iv) वह जनपद, जिसका शासक चुनाव के द्वारा बनता है, गणराज्य कहलाता है। एक गण में अनेक शासक होते थे तथा प्रत्येक शासक को राजा कहा जाता था। राज्य के विभिन्न कार्यों का निर्णय राजाओं की सभाओं द्वारा वाद-विवाद या विचार-विमर्श के माध्यम से किया जाता था, जबकि वह राज्य जहाँ एकमात्र वंश का शासक राजा बनता आया है, राजतंत्र कहलाता है।

(v) महाजनपदों के शासक अधिकांशत: प्रजातंत्रात्मक ढंग से शासन चलाते थे। अपने राज्यों की रक्षा करने के लिए उनके पास विशाल सेनाएँ होती थीं। महाजनपदों को नियंत्रित करने के लिए उनके पास

विभिन्न प्रकार के मंत्री होते थे। प्रशासन में ब्राह्मणों का महत्त्वपूर्ण स्थान था। राजा उन्हें कर मुक्त गाँव भेंट करता था। राजा के नियंत्रण में गाँव का प्रशासन गाँव का मुखिया चलाता था। महाजनपद के प्रशासन का केंद्र राजधानी नगर हुआ करता था।

3. आठ पंक्तियों में उत्तर :

(i) वज्जि एक गणसंघ था, जिसकी राजधानी वैशाली (बिहार) थी। इस पर एक वंश द्वारा शासन किया जाता था, जो कि एक परिवार के सदस्यों का एक संगठन था। एक गण में अनेक शासक होते थे तथा प्रत्येक शासक को राजा कहा जाता था। राजा लोग साथ मिलकर धार्मिक क्रियाओं के आयोजन को संपन्न करते थे। यदि कोई शत्रु राज्य पर आक्रमण करता था तो उसका मुकाबला करने के लिए राजा युद्ध में सैनिक व्यूह रचना करने के लिए सभा का आयोजन करताथ ा। स्त्रियाँ,द ास तथाक म्भकारइ नस भाओं में भाग नहीं ले सकते थे। महात्मा बुद्ध के बौद्ध धर्म तथा महावीर स्वामी के द्वारा जैन धर्म के नींव डालने के समय वज्जि एक संपन्न महाजनपद था। अजातशत्रु वज्जि पर अधिकार करना चाहता था, इसके लिए उसने अपने मंत्री वसाकार को बुद्ध से सलाह लेने भेजा। परंतु बुद्ध वज्जियों के पक्ष में बोले।

(ii) 2000 वर्ष पूर्व मगध (राजतंत्र) बिहार का एक महत्त्वपूर्ण महाजनपद बन चुका था। गंगा और सोन नदियाँ इससे होकर बहती थीं, जिनसे इस राज्य को फसलों की सिंचाई, पीने के लिए तथा यातायात की सुविधा हेतु पानी मिला करता था। मगध का बहुत बड़ा हिस्सा वनाच्छादित था। इन जंगलों में हाथियों का बसेरा था, जिनका उपयोग सेना के लिए किया जाता था। इसके अतिरिक्त वनों से जलाऊ लकड़ी, इमारती लकड़ी तथा जड़ी-बूटियाँ मिलती थीं। मगध में लौह अयस्क प्रचुर मात्रा में खनन किया जाता था, जिससे शिल्पकार औजार और हथियार बनाते थे।

मगध के प्रसिद्ध शासक बिम्बिसार और अजातशत्रु ने दूसरे जनपदों पर अधिकार करने का प्रयास किया था। मगध की राजधानी राजगृह से पाटलिपुत्र (पटना) बना दी गई थी।

(iii) गंगा के उत्तर का विशाल मैदान, पूर्वी उत्तर प्रदेश तथा उत्तरी बिहार में निवास करने वाली जातियों ने बड़े-बड़े राज्यों का निर्माण किया, जिन्हें जनपद कहते हैं तथा बड़े जनपदों को महाजनपद कहते हैं।

तत्कालीन भारत में 16 महाजनपद थे। उस समय लोगों का मुख्य व्यवसाय खेती था। इस काल में कृषि में महत्त्वपूर्ण परिवर्तन किए गए थे। लकड़ी के हल की जगह लोहे के फलक वाले हल का प्रयोग होने लगा, जिससे अन्न का अधिक उत्पादन होने लगा। लोग पशुओं और अन्य जानवरों को भी पालते थे।

शहरों का विकास : व्यापार, शिल्पकारी तथा प्रशासन के केंद्रों में से शहरों का उदय हुआ।

मृदा-बर्तन निर्माण : जनपदों एवं महाजनपदों में लोग मिट्टी (मृदा) से बर्तन बनाया करते थे, जिनका रंग भूरा एवं लाल होता था। इन बर्तनों का प्रयोग महत्त्वपूर्ण व्यक्तियों द्वारा या विशेष अवसरों पर भोजन परोसने के लिए किया जाता था।

मकान तथा इमारतें : अधिकांश महाजनपदों का प्रशासन राजधानी के द्वारा चलाया जाता था; जो लकड़ी, पत्थर और ईंटों से बनी विशाल चारदीवारी से घिरी रहती थी। दूसरे राजाओं के आक्रमणों से प्रजा की रक्षा हेतु किलों का निर्माण किया गया था। कुछ राजाओं ने अपनी शान और महानता दर्शाने हेतु किलों के अंदर विराट इमारतों का निर्माण भी कराया था।

राज्य की आय के स्रोत : बड़ी सेनाओं, किलों और इमारतों के रख-रखाव के लिए राजाओं को धन की बहुत जरूरत होती थी। इन वित्तीय जरूरतों की पूर्ति के लिए राजा प्रजा से अनेक प्रकार के

कर इकट्ठा करते थे।

प्रशासन : महाजनपदों के शासक अधिकांशत: प्रजातंत्रात्मक ढंग से शासन चलाते थे। अपने राज्यों की रक्षा करने के लिए उनके पास विशाल सेनाएँ होती थीं। महाजनपदों को नियंत्रित करने के लिए उनके पास विभिन्न प्रकार के मंत्री होते थे। प्रशासन में ब्राह्मणों का महत्त्वपूर्ण स्थान था। राजा उन्हें कर मुक्त गाँव भेंट करता था। राजा के नियंत्रण में गाँव का प्रशासन गाँव का मुखिया चलाता था। महाजनपद के प्रशासन का केंद्र राजधानी नगर हुआ करता था।

7 मौर्य साम्राज्य

रचनात्मक निर्धारण

1. सही विकल्प पर सही (✓) का निशान लगाइए :

(i) (c) कौटिल्य (ii) (a) बिंदुसार (iii) (d) चाणक्य
(iv) (a) मेगस्थनीज (v) (b) प्रांत से (vi) (a) अशोक महान
(vii) (c) 263 ई.पू. (viii) (b) सारनाथ।

2. रिक्त स्थानों की पूर्ति कीजिए :

(i) अंतिम (ii) घनानंद (iii) सुभद्रांगी और बिंदुसार
(iv) बौद्ध धर्म (v) राजकुमार (vi) स्तूपों, मठों तथा विहार

3. निम्नलिखित को सुमेल कीजिए :

'अ'	'ब'
चाणक्य	कौटिल्य
पाटलिपुत्र	राज्य
मगध	बिहार
कलिंग	उड़ीसा
अशोक स्तंभ	सारनाथ

शिलालेख कालसी (देहरादून)

4. निम्नलिखित प्रश्नों का उत्तर दीजिए :

(i) अशोक चक्र

(ii) वाराणसी के निकट सारनाथ।

(iii) वर्तमान में यह अशोक चक्र भारत का राष्ट्रीय चिह्न है।

(iv) उत्तर प्रदेश में वाराणसी के निकट सारनाथ स्थित स्तंभ के ऊपर चार शेरों को दर्शाया गया है, जो हमारा राष्ट्रीय प्रतीक है। इस स्तंभ को अशोक ने बनवाया था।

संकलित निर्धारण

1. एक पंक्ति में उत्तर :

(i) चंद्रगुप्त मौर्य नंद वंश के अंतिम शासक का पुत्र था।

(ii) कौटिल्य एक बुद्धिमान ब्राह्मण था, जिसे चाणक्य के नाम से भी जाना जाता है।

(iii) मेगस्थनीज सैल्युकस का राजदूत था।

(iv) अशोक के धम्म का अर्थ बौद्ध धर्म के परिष्कृत रूप से है। उसका धम्म अहिंसा, चरित्रता, प्रेम, दया, मान, सद्व्यवहार तथा सार्वभौमिक समानता पर आधारित था।

(v) सैल्युकस निकेटर सिकंदर महान का सेनापति था।

(vi) कलिंग की लड़ाई में अशोक विजयी हुआ।

(vii) अशोक ने बौद्ध धर्म के प्रचार-प्रसार हेतु अपने पुत्र महेन्द्र, पुत्री संघमित्रा तथा पोते को श्रीलंका भेजा था।

2. चार पंक्तियों में उत्तर :

(i) चंद्रगुप्त भारत के उत्तरी-पश्चिमी भाग पर शासन करने वाले शासक महापद्मनन्द की सेना में एक सिपाही था। महापद्मनंद ने चंद्रगुप्त को बहुत सताकर उसका दमन किया और उसे मृत्युदंड की सजा दी। इसी बीच चंद्रगुप्त मगध से भाग गया और उसने नंद वंश का नाश करने की कसम खाई। चंद्रगुप्त ने मगध से भागकर उत्तर

भारत में शरण ली, जहाँ उसकी भेंट कौटिल्य से हुई। नंद वंश के एक राजा घनानंद ने चाणक्य का घोर अपमान किया था, जिससे क्षुब्ध होकर उसने नंद वंश का सर्वनाश करने की प्रतिज्ञा की। इस प्रकार कौटिल्य ने अपनी बनाई हुई नीति से चंद्रगुप्त की मदद करके नंद वंश का नाश कर दिया तथा कौटिल्य की सहायता से चंद्रगुप्त मौर्य 321 ई.पू. में मगध के राजसिंहासन पर बैठा।

(ii) कलिंग की लड़ाई सम्राट अशोक तथा कलिंग की सेनाओं के बीच हुई और उसमें अशोक विजयी हुआ।

(iii) सैल्युकस, सिकंदर महान का सेनापति था। वह भारत के उत्तरी-पश्चिमी हिस्सों को विजित करना चाहता था, परंतु चंद्रगुप्त ने उस पर अपनी बड़ी सेना द्वारा आक्रमण करके उसे ऐसा करने से रोक दिया। इसमें सैल्युकस की हार हुई तथा बदले में उसने अपनी पुत्री हेलेन का विवाह चंद्रगुप्त से करवाया। इसके अतिरिक्त उसने हिंदुकुशप र्वतक ाअ पनार ाज्यच ंद्रगुप्तक ोस ंधिव ेम ाध्यमस े उपहार में दिया।

(iv) **अशोक का धम्म :** धम्म का अर्थ-धर्म या सार्वभौमिक धर्म या दूसरे शब्दों में बौद्ध धर्म के परिष्कृत रूप से है। उसका धम्म अहिंसा, चरित्रता, प्रेम, दया, मान, सद्व्यवहार तथा सार्वभौमिक समानता पर आधारित था। उसका धम्म बौद्ध धर्म की शिक्षाओं से प्रभावित था।

अशोक के धम्म की शिक्षाएँ-

(1) हमें अपने माता-पिता, गुरुजनों, बड़ों की अज्ञा का पालन, सेवा तथा सम्मान करना चाहिए।

(2) हमें अपने बड़ों के प्रति वफादार होना चाहिए।

(3) हमें जानवरों तथा पक्षियों के प्रति दयावान होना चाहिए।

(4) हमें घृणा नहीं करनी चाहिए।

(5) हमें व्यवहार में रूखा नहीं होना चाहिए तथा घमंड से दूर रहना

चाहिए।

(6) हमें अन्य धर्मों के विश्वासों को भी सहन करना चाहिए।

(v) अशोक ने अपने धम्म के प्रचार-प्रसार के लिए धर्म विभाग की स्थापना की तथा उसके प्रचार के लिए धर्माधिकारी, धर्म महामात्रों की नियुक्ति की जो जगह-जगह धर्म प्रचार का कार्य करते थे।

अशोक ने अपनी शिक्षाओं तथा संदेशों को शिलाओं और स्तंभों पर खुदवाया ताकि लोग उसकी मृत्यु के उपरांत भी उन्हें पढ़ सकें। उसने अपने अधिकारियों से यह भी कहा कि इन उपदेशों को उन लोगों को पढ़कर सुनाएँ जो अनपढ़ हैं।

अशोक ने अपने पुत्र महेन्द्र, पुत्री संघमित्रा तथा पोते को श्रीलंका अपने धम्म की शिक्षाओं के प्रसार के लिए भेजा। इन उपदेशों का प्रचार करने के लिए दूत सीरिया, मिस्र और यूनान भी भेजे गए। इसके अतिरिक्त उसने स्तूपों, धार्मिक स्मारकों तथा बौद्ध विहारों का निर्माण कराया।

3. आठ पंक्तियों में उत्तर :

(i) मौर्य काल में लोगों का मुख्य व्यवसाय खेती था। इसके अतिरिक्त व्यापार, धातु कर्म, बुनाई, पशुचारण तथा विभिन्न प्रकार की शिल्पकारी भी जीविका के साधन थे। मौर्य साम्राज्य में आय के मुख्य साधन विभिन्न प्रकार के कर थे। करों से प्राप्त धन को योजनाओं, विकास कार्यों, सरकारी कर्मचारियों के वेतन, दान आदि पर खर्च किया जाता था।

तक्षशिला, पाटलिपुत्र, उज्जैन और भड़ौच भारत में व्यापार के मुख्य केंद्र थे। जबकि रोम, मिस्र, चीन, श्रीलंका विदेश स्थित व्यापारिक केंद्र थे। मेगस्थनीज सैल्युकस का राजदूत था, जो लगभग 6 वर्ष तक चंद्रगुप्त मौर्य के दरबार में रहा। मेगस्थनीज के अनुसार, ''उस समय के महल सोने-चाँदी से बने थे तथा जिन अवसरों पर सम्राट प्रजा से मिलता था, वे आलीशान शाही जुलूसों के रूप में मनाए

जाते थे एवं राजा को सोने की पालकी में ले जाया जाता था।''

(ii) मौर्य साम्राज्य के पतन के निम्नलिखित कारण थे–

(1) अशोक के उत्तराधिकारी कमजोर साबित हुए। वे इस संपन्न और विशाल साम्राज्य को सँभाल न सके।

(2) अशोक की अहिंसा नीति के कारण उसके उत्तराधिकारी युद्ध न कर सके, जिससे छोटे राजाओं ने स्वयं को स्वतंत्र कर लिया।

(3) दरबार के षड्यंत्रों ने साम्राज्य को हिस्सों में विभाजित कर दिया।

(4) करों के भारी बोझ से प्रजा असंतुष्ट हो गई और इसीलिए प्रजा ने साम्राज्य के विरुद्ध विद्रोह कर दिया।

(5) धम्म के प्रचार-प्रसार पर धन दिल खोलकर खर्च किया गया, जिससे सरकारी कोष खाली हो गया। हिंदू, मौर्यों और शुंगों से नाराज थे और उन्होंने उनके विरूद्ध षड्यंत्र रचने शुरू कर दिए।

(6) साम्राज्य की विशालता भी उसके पतन का कारण बनी क्योंकि अशोक के उत्तराधिकारी इतने बड़े साम्राज्य पर नियंत्रण न रख सके। कानून और व्यवस्था को नहीं बनाए रखा जा सका और इसके दुष्परिणामस्वरूप साम्राज्य का पतन होता चला गया।

(iii) **मौर्य साम्राज्य का गुप्तचर विभाग :** राजा की गुप्तचर व्यवस्था में स्त्रियाँ तथा पुरुष दोनों ही थे। उनका मुख्य कार्य राजा को विभिन्न मामलों में साम्राज्य के विकास तथा प्रजा की राय के विषय में सूचना देना था।

मौर्य साम्राज्य की स्थापत्य कला : मौर्य शासकों को स्तूपों, मठों तथा विहारों के निर्माण का शौक था। मध्य प्रदेश में भोपाल के निकट स्थित साँची का महान स्तूप अशोक द्वारा बनवाया गया था। अशोक ने भारत में और एशिया में 8400 से ज्यादा स्तूप तथा विहार बनवाए थे। स्तूपों का संबंध भगवान बुद्ध से है।

अशोक ने चट्टानों और पत्थरों के स्तंभों पर बौद्ध धर्म की शिक्षाओं और उपदेशों को खुदवाया। शिलालेख ब्राह्मीलिपि में बौद्ध धर्म के सिद्धांतों को दर्शाते हैं। इन सिद्धांतों में महत्त्वपूर्ण विचार, विश्वास एवं सूचनाओं का उल्लेख है। उत्तर प्रदेश में वाराणसी के निकट सारनाथ्र स्थतरु तंभव ेऊ परच ारश ेरोंक ेद र्शायाग याहै,ज ो हमारा राष्ट्रीय प्रतीक है।

(iv) **मौर्य प्रशासन :** 'अर्थशास्त्र' और 'इण्डिका' के अनुसार राजा में सर्वोच्च सत्ता निहित थी। प्रांतों, जनपदों तथा गाँवों पर उसका सीधा नियंत्रण था। पूरा साम्राज्य प्रांतों में विभाजित था तथा प्रत्येक प्रांत पर राजकुमार का शासन होता था। प्रत्येक प्रांत जनपदों में विकसित होता था और प्रत्येक जनपद का प्रशासन प्रदेष्टा चलाता था। उसकी सहायताव ेर्ि लएय कतात थार ाजुकह ातेथ ोार ाजुकज मीनक ी नाप-तोल व सर्वेक्षण, राजस्व का संग्रह तथा रख-रखाव करता था। प्रत्येक जनपद गाँवों में बँटा था तथा प्रत्येक गाँव का प्रशासन ग्रामिक चलाता था। वह करों को इकट्ठा करता था तथा जमीन का लेखा-जोखा रखता था। मौर्यों की राजधानी पाटलिपुत्र का प्रशासन एक समिति के जिम्मे था। इसका अध्यक्ष मुख्य नागरिक कहलाता था, जिसकी सहायता 30 सदस्यों वाली नगर कौंसिल करती थी। पूरा नगर 6 समितियों में विभाजित था।

(v) अशोक ने बौद्ध धर्म के प्रचार-प्रसार के लिए धर्म विभाग की स्थापना की तथा अपनी शिक्षाओं तथा संदेशों को शिलाओं और स्तंभों पर खुदवाया। उसने अपने अधिकारियों से यह भी कहा कि इन उपदेशों को उन लोगों को पढ़कर सुनाएँ जो अनपढ़ हैं। अशोक ने अपने पुत्र, पुत्री तथा पोते को श्रीलंका अपने धम्म की शिक्षाओं के प्रसार के लिए भेजा। इन उपदेशों का प्रचार करने के लिए दूत सीरिया, मिस्र तथा यूनान भी भेजे गए। उसने स्तूपों, धार्मिक स्मारकोंत थाब ौद्धि वहारोंक ाि नर्माणक राया।उ सनेभ ोपालव े

पास मध्य प्रदेश में साँची का स्तूप बनवाया।

उपरोक्त के अतिरिक्त, अशोक ने प्रजा की भलाई के लिए सड़कें बनवाईं, कुएँ खुदवाए तथा यात्रियों के विश्राम के लिए सराएँ बनवाईं। उसने बीमार मनुष्यों और पशुओं के इलाज के लिए अस्पताल भी बनाए। इसीलिए उसे अशोक महान कहते हैं।

4. निम्नलिखित तिथियों का क्या महत्त्व है?

(i) **321 ई.पू. :** चाणक्य की सहायता से चंद्रगुप्त मौर्य मगध के राज सिंहासन पर बैठा।

(ii) **261 ई.पू. :** अशोक तथा कलिंग की सेनाओं के बीच लड़ाई छिड़ गई। इस युद्ध में अशोक ने कलिंग पर विजय प्राप्त की।

(iv) **273 ई.पू. :** बिंदुसार की मृत्यु के पश्चात् उसका दूसरा पुत्र अशोक मगध के सिंहासन पर बैठा।

8 गुप्त साम्राज्य (319 ई.पू.-550 ई.पू.)

रचनात्मक निर्धारण

1. सही विकल्प पर सही (✓) का निशान लगाइए :

(i) (a) श्रीगुप्त (ii) (b) पाटलिपुत्र (iii) (b) समुद्रगुप्त से

(iv) (b) समुद्रगुप्त (v) (b) चंद्रगुप्त द्वितीय (vi) (d) (a) तथा (b)

(vii) (a) पुलिस विभाग का (viii) (c) समुद्रगुप्त

2. निम्नलिखित को सुमेल कीजिए :

'अ'	'ब'
हरिषेण	समुद्रगुप्त का दरबारी कवि
फाह्यान	चीनी यात्री
कालिदास	संस्कृत का महान कवि

आर्यभट्ट	गणितज्ञ
चंद्रगुप्त द्वितीय	चंद्रगुप्त विक्रमादित्य
धन्वन्तरि	बौद्ध

3. सत्य या असत्य बताइए :

(i) सत्य (ii) असत्य (iii) सत्य

(iv) असत्य (v) सत्य (vi) असत्य

4. निम्नलिखित ऐतिहासिक घटनाओं को सही क्रम में व्यवस्थित कीजिए :

(v) श्रीगुप्त ने 320 ई. में गुप्त साम्राज्य की स्थापना की। (1)

(iv) गुप्त संवत का प्रारंभ। (2)

(iii) समुद्रगुप्त अपने पिता के बाद गद्दी पर बैठा। (3)

(i) कुमार गुप्त का राजगद्दी पर बैठना। (4)

(ii) स्कन्दगुप्त की मृत्यु। (5)

5. चित्र को देखिए और निम्न प्रश्नों का उत्तर दीजिए :

(i) अजंता की गुफाएँ

(ii) महाराष्ट्र के औरंगाबाद जिले में

(iii) अजंता की गुफाओं की दीवारों पर बनाई गई पेंटिंग, जिनमें भगवान बुद्ध के जीवन से संबंधित घटनाओं को दर्शाया गया है, सुंदर हैं। उनकी रंग योजना भी बहुत उत्कृष्ट एवं सुंदर है। इसी कारण ये गुफाएँ प्रसिद्ध हैं।

(iv) 28 गुफाएँ।

संकलित निर्धारण

1. एक पंक्ति में उत्तर :

(i) गुप्त साम्राज्य की स्थापना श्रीगुप्त ने 320 ई. में की थी।

(ii) चंद्रगुप्त प्रथम गुप्त साम्राज्य का प्रथम प्रसिद्ध शासक था।

(iii) तिगवा का विष्णु मंदिर एवं अजयगढ़ का पार्वती मंदिर।

(iv) अजंता की गुफाएँ महाराष्ट्र के औरंगाबाद जिले में हैं।

(v) फाह्यान चीनी यात्री था। वह 405 ई. में भारत भ्रमण पर आया था।

(vi) हूणों ने गुप्त साम्राज्य को नष्ट किया।

(vii) गुप्त वंश का अंतिम शासक बुद्धगुप्त था।

(vii) समुद्रगुप्त को भारत का नेपोलियन कहा जाता है।

2. चार पंक्तियों में उत्तर :

(i) समुद्रगुप्त की मृत्यु के बाद उसका पुत्र चंद्रगुप्त द्वितीय गुप्त साम्राज्य की गद्दी पर बैठा। वह चंद्रगुप्त विक्रमादित्य के नाम से प्रसिद्ध हुआ। वह केवल एक विजेता ही नहीं था बल्कि एक कूटनीतिज्ञ भी था। उसने मालवा और गुजरात के शक शासकों को पराजित किया जो लगभग 400 वर्षों से शासन कर रहे थे। शकों का विनाश करने के कारण उसने स्वयं को 'शकारी' और 'विक्रमादित्य' की उपाधियों से विभूषित किया। उसका विवाह नागवंशक ीक न्यास ेह ुआथ ाा।भ ाारतीयइ तिहासम ेंव हप्रसिद्ध न्यायाधीश के रूप में भी जाना गया।

(ii) स्कंदगुप्त कुमार गुप्त का पुत्र था। उसे मध्य एशिया की जनजाति हूणों के आक्रमण का सामना करना पड़ा। जहाँ भी हूण गए वहाँ उन्होंने अराजकता, अशांति और आगजनी फैला दी, परंतु गुप्त शासकों ने उन्हें ऐसा करने से रोक दिया। स्कंदगुप्त ने उन्हें 458 ई. में लड़ाई में पराजित किया। 467 ई. में स्कंदगुप्त की मृत्यु हुई।

(iii) चीनी यात्री फाह्यान ने 405 ई. में भारत का भ्रमण किया। उसने गुप्त काल में भारत की राजनीतिक, सामाजिक, आर्थिक और धार्मिक दशाओं का अध्ययन कर उनका वर्णन अपनी पुस्तक में किया है।

सामाजिक दशा : उसने लिखा है कि इस देश का सम्राट प्रजावत्सल है और प्रजा हर तरह से प्रसन्न और खुशहाल है। अधिकांशल ोगश ााकाहारीह ैंत थाअ हिंसाम ेंि वश्वासक रतेह ैं। लोगों का मुख्य व्यवसाय कृषि है।

धार्मिक दशा : गुप्तकाल में हिंदू धर्म बहुत फूला-फला। विष्णु तथा शिव को ईश्वर के रूप में दूर-दूर तक पूजा जाता था। गुप्त शासक विष्णु के उपासक थे। वे अश्वमेध तथा अन्य धार्मिक बलियों का आयोजन करते थे। समाज में ब्राह्मणों का स्थान सर्वोच्च था। बोधगया तथा कपिलवस्तु दो प्रसिद्ध बौद्ध धर्म स्थलों की यात्रा भी फाह्यान ने की थी।

आर्थिक दशा : गुप्तकाल में लोग संपन्न तथा समृद्ध थे। भड़ौच, ताम्रलिप्ति तथा उज्जैन व्यापार के प्रमुख केंद्र थे। चीन के साथ रेशम का व्यापार किया जाता था। किसानों से राजस्व इकट्ठा किया जाता था।

(iv) **गुप्तकाल के दौरान कला :** गुप्त राजाओं ने अनेक मंदिरों का निर्माण कराया। कला, पेंटिंग और शिल्प कला उन्नत अवस्था में थीं। कलाकारों ने सुंदर कलात्मक कृतियों का सृजन किया था। भूमरा का शिव मंदिर तथा बौद्ध, शैव, वैष्णव एवं हिंदू धर्म से संबंधित मूर्तियाँ इसी काल में बनाई गईं। मूर्ति निर्माण में सफेद संगमरमर तथा लाल पत्थर का प्रयोग किया गया है। महाराष्ट्र के औरंगाबाद जिले में अजंता की गुफाओं की दीवारों पर बनाई गई पेंटिंग, जिनमें भगवान बुद्ध के जीवन से संबंधित घटनाओं को दर्शाया गया है, बहुत प्रसिद्ध एवं सुंदर हैं।

गुप्तकाल के दौरान साहित्य : गुप्तकाल में साहित्य की उन्नति बड़े पैमाने पर हुई। चंद्रगुप्त विक्रमादित्य का दरबारी कवि कालिदास संस्कृत का महान कवि था। उसने संस्कृत साहित्य में अनेक प्रसिद्ध एवं महत्त्वपूर्ण ग्रंथों की रचना की। उसकी संस्कृत भाषा की उत्कृष्ट रचनाओं में अभिज्ञानाशाकुंतलम, मेघदूत, कुमारसम्भव, ऋतुसंहार, मालविकवग्निमित्र प्रमुख हैं।

(v) **गुप्तकाल में विज्ञान :** गुप्तकाल में विज्ञान की भी बहुत उन्नति हुई। गणित तथा औषधि विज्ञान के क्षेत्रों में बहुत खोजें हुईं।

आर्यभट्ट ने सिद्ध किया कि पृथ्वी सूर्य के चारों ओर अपने अक्ष पर घूमती है। उसने शून्य का भी आविष्कार किया, जिसने गणित में महत्त्वपूर्ण भूमिका अदा की। चंद्रगुप्त विक्रमादित्य के दरबार में नवरत्नों में वराहमिहिर नाम का वैज्ञानिक भी था। उसने पर्यावरण, जल एवं भूगर्भ संबंधी बहुत-से वैज्ञानिक प्रयोग एवं प्रेक्षण किए। धन्वन्तरि एक प्रसिद्ध एवं बुद्धिमान वैद्य था, जो अनेक बीमारियों का निदान करने की औषधि तैयार किया करता था।

गुप्तकाल में वास्तु कला (स्थापत्य कला) : देवगढ़ (झाँसी) स्थित दशावतार मंदिर में भगवान विष्णु के दशावतारों की मूर्तियाँ बनाई गई हैं। यह मंदिर अपनी सुंदरता एवं स्थापत्य कला के लिए जाना जाता है। इसके अतिरिक्त तिगवा का विष्णु मंदिर, अजयगढ़ का पार्वती मंदिर, भितरगाँव का मंदिर, कानपुर के निकट एहोल का मंदिर, चैत्य, विहार, गुफाएँ और स्तूप आदि अन्य स्थापत्य कला के नमूने हैं।

3. आठ पंक्तियों में उत्तर :

(i) फाह्यान एक चीनी यात्री था, जिसने चंद्रगुप्त विक्रमादित्य के शासन के समय 405 ई. में भारत का भ्रमण किया था। उसने गुप्त काल में राजनीतिक, सामाजिक, आर्थिक और धार्मिक दशाओं का अध्ययन किया, जिसका विवरण निम्नलिखित है–

सामाजिक दशा : फाह्यान ने लिखा है कि इस देश का सम्राट प्रजावत्सल है और प्रजा हर तरह से प्रसन्न और खुशहाल है। अधिकांश लोग शाकाहारी है तथा अहिंसा में विश्वास करते हैं। वे प्याज, लहसुन तथा शराब का सेवन नहीं करते हैं। लोगों का मुख्य व्यवसाय कृषि है। जाति व्यवस्था जटिल है तथा यात्रियों को भरपूर सम्मान मिलता है।

धार्मिक जीवन : गुप्तकाल में हिंदू धर्म बहुत फूला-फला। विष्णु तथा शिव को ईश्वर के रूप में दूर-दूर तक पूजा जाता था। गुप्त

शासक विष्णु के उपासक थे। वे अश्वमेध तथा अन्य धार्मिक बलियों का आयोजन करते थे। समाज में ब्राह्मणों का स्थान सर्वोच्च था। बोध गया तथा कपिलवस्तु दो प्रसिद्ध बौद्ध धर्म स्थलों की यात्रा भी फाह्यान ने की थी।

फाह्यान ने पाटलिपुत्र में बहुत बड़ा अस्पताल देखा था। इसका निर्माण किसी धनी आदमी ने करवाया था। अन्य बड़े शहरों में भी अस्पतालों का निर्माण कराया गया था। यहाँ मरीजों को नि:शुल्क दवाइयाँ और भोजन वितरित किया जाता था। शहर में अनेक संस्थाएँ थीं जो विकलांगों और निर्धनों को मदद एवं सेवाएँ प्रदान करती थीं। लोग दान देते थे तथा अहिंसा, सत्य का पालन करते थे।

आर्थिक जीवन : गुप्तकाल में लोग संपन्न तथा समृद्ध थे। भड़ौच, ताम्रलिप्ति तथा उज्जैन व्यापार के प्रमुख केंद्र थे। चीन के साथ रेशम का व्यापार किया जाता था। राजधानी नगर शहरो से जुड़े थे। किसानों से राजस्व इकट्ठा किया जाता था। दक्षिण-पूर्वी एशियाई देशों से रेशम, घोड़ों, नीलम तथा कीमती पत्थरों का आयात किया जाता था। मसाले, मोती तथा चंदन की लकड़ी का चीन, म्यांमार तथा कम्पूचिया को निर्यात किया जाता था। किसान गेहूँ, जौ, मक्का, मटर, सरसों तथा दालों की खेती करते थे।

(ii) गुप्त काल को भारतीय इतिहास का स्वर्ण युग निम्नलिखित कारणों से पुकारा जाता है–

संगीत : गुप्त शासक संगीत के शौकीन थे। कुछ सिक्कों पर समुद्रगुप्त को वीणा बजाते हुए दिखाया गया है। स्त्रियाँ नृत्य और संगीत को पसंद करती थीं।

कला : गुप्त राजाओं ने अनेक मंदिरों का निर्माण कराया। कला, पेंटिंग और शिल्प कला उन्नत अवस्था में थीं। कलाकारों ने सुंदर कलात्मक कृतियों का सृजन किया था। भूमरा का शिव मंदिर तथा बौद्ध, शैव, वैष्णव एवं हिंदू धर्म से संबंधित मूर्तियाँ इसी काल में

बनाई गईं। मूर्ति निर्माण में सफेद संगमरमर तथा लाल पत्थर का प्रयोग किया गया है। महाराष्ट्र के औरंगाबाद जिले में अजंता की गुफाओं की दीवारों पर बनाई गई पेंटिंग, जिनमें भगवान बुद्ध के जीवन से संबंधित घटनाओं को दर्शाया गया है, बहुत प्रसिद्ध एवं सुंदर हैं।

साहित्य : गुप्तकाल में साहित्य की उन्नति बड़े पैमाने पर हुई। चंद्रगुप्त विक्रमादित्य का दरबारी कवि कालिदास संस्कृत का महान कवि था। उसने संस्कृत साहित्य में अनेक प्रसिद्ध एवं महत्त्वपूर्ण ग्रंथों की रचना की। उसकी संस्कृत भाषा की उत्कृष्ट रचनाओं में अभिज्ञानाशाकुंतलम, मेघदूत, कुमारसम्भव, ऋतुसंहार, मालविकवग्निमित्र प्रमुख हैं।

स्थापत्य कला : देवगढ़ (झाँसी) स्थित दशावतार मंदिर में भगवान विष्णु के दशावतारों की मूर्तियाँ बनाई गई हैं। यह मंदिर अपनी सुंदरता एवं स्थापत्य कला के लिए जाना जाता है। इसके अतिरिक्त तिगवा का विष्णु मंदिर, अजयगढ़ का पार्वती मंदिर, भितरगाँव का मंदिर, कानपुर के निकट एहोल का मंदिर, चैत्य, विहार, गुफाएँ और स्तूप आदि अन्य स्थापत्य कला के नमूने हैं।

विज्ञान : गुप्तकाल में विज्ञान की भी बहुत उन्नति हुई। गणित तथा औषधि विज्ञान के क्षेत्रों में बहुत खोजें हुईं। आर्यभट्ट ने सिद्ध किया कि पृथ्वी सूर्य के चारों ओर अपने अक्ष पर घूमती है। उसने शून्य का भी आविष्कार किया, जिसने गणित में महत्त्वपूर्ण भूमिका अदा की। चंद्रगुप्त विक्रमादित्य के दरबार में नवरत्नों में वराहमिहिर नाम का वैज्ञानिक भी था। उसने पर्यावरण, जल एवं भूगर्भ संबंधी बहुत-से वैज्ञानिक प्रयोग एवं प्रेक्षण किए। धन्वन्तरि एक प्रसिद्ध एवं बुद्धिमान वैद्य था, जो अनेक बीमारियों का निदान करने की औषधि तैयार किया करता था।

9 गुप्त शासकों के बाद का भारत

रचनात्मक निर्धारण

1. सही विकल्प पर सही (✓) का निशान लगाइए :

(i) (c) प्रभाकरवर्धन (ii) (a) 606 ई.

(iii) (c) बाणभट्ट (iv) (a) कृष्ण प्रथम

(v) () राजतरंगिणी (vi) (b) पुलकेशिन द्वितीय का

(vii) (a) राजेन्द्र प्रथम

2. निम्नलिखित को सुमेल कीजिए :

'अ'	'ब'
नालंदा	प्राचीनकाल का एक विश्वविद्यालय
ह्वेनसांग	चीनी यात्री
कांचीपुरम	पल्लवों की राजधानी
एहोल	चालुक्यों की राजधानी
कन्नौज	हर्षवर्धन की राजधानी

3. सत्य या असत्य बताइए :

(i) सत्य (ii) सत्य (iii) सत्य (iv) असत्य

(v) सत्य (vi) असत्य

4. रिक्त स्थानों की पूर्ति कीजिए :

(ii) ह्वेनसांग (iii) शकों (iv) महाराष्ट्र

(v) कम्बोडिया (vi) अंकोरवाट का मंदिर

संकलित निर्धारण

1. एक पंक्ति में उत्तर :

(i) हर्षवर्धन वर्धन वंश का प्रसिद्ध और लोकप्रिय शासक था।

(ii) ह्वेनसांग एक चीनी यात्री था, जिसने हर्षवर्धन के समय भारत का भ्रमण किया।

(iii) पुलकेशिन द्वितीय, चालुक्य वंश का सबसे प्रसिद्ध एवं प्रतापी राजा था।

(iv) कांचीपुरम पल्लवों की राजधानी थी।

(v) बौद्ध धर्म का मंदिर : बोरोबुदूर।
हिंदू धर्म का मंदिर : अंकोरवाट का मंदिर।

(vi) पल्लव और चालुक्य हर्ष के समकालीन थे। ये दोनों वंश दक्षिण भारत के महत्त्वपूर्ण वंश थे।

(vii) चोलों के शासन में पूरे साम्राज्य को राष्ट्रम के नाम से जाना जाता था।

2. चार पंक्तियों में उत्तर :

(i) हर्षवर्धन ने मालवा, असम, बंगाल, वल्लभी (गुजरात) और मगध पर आक्रमण किए, जिनमें वह विजयी हुआ।

(ii) हर्षवर्धन स्वयं एक विद्वान एवं बुद्धिमान शासक था तथा विद्वानों का सम्मान करता था। चीनी यात्री ह्वेनसांग के अनुसार, हर्ष दयालु हृदय तथा प्रजा को प्रेम करने वाला सम्राट था। जिन राज्यों को हर्ष ने विजित किया था, उनके शासकों ने उसकी अधीनता स्वीकार कर ली थी। उसके साम्राज्य में अपराध कम थे तथा अपराधियों को कड़ा दंड दिया जाता था।
उसने बौद्ध भिक्षुओं तथा मठों को जमीन और धन दान दिए। प्रत्येक 5 वर्ष के अंतराल पर वह प्रयाग में लगने वाले मेले में दान दिया करता था।

(iii) हर्ष के शासनकाल में विश्वप्रसिद्ध नालंदा विश्वविद्यालय विद्या का एक उच्च कोटि का केंद्र था। उस समय 10,000 से भी अधिक विद्यार्थी इस विश्वविद्यालय में शिक्षा ग्रहण करते थे। इसकी आय के लिए हर्ष ने इसे 100 गाँव दान में दे दिए थे, जिनके राजस्व से इसका खर्च चलता था। यह बौद्ध साहित्य का एक अनूठा विद्या केंद्र था।

(iv) पल्लव तथा चालुक्य हर्ष के समकालीन थे। ये दोनों वंश दक्षिण भारतव ेम हत्त्वपूर्णव ंशथ ोाप ल्लवव ंशक ाम हेन्द्रव र्मनत था चालुक्य वंश का पुलकेशिन द्वितीय प्रसिद्ध शासकों में थे। उनके बीच सदैव संघर्ष चलता रहता था। यद्यपि दोनों वंश ब्राह्मण धर्म के अनुयायी थे तो भी लूट, सम्मान और क्षेत्रीय स्रोतों के लिए इनमें लड़ाइयाँ होना सामान्य बात थी। दोनों कृष्णा और तुंगभद्रा नदियों के दोआब तथा बंदरगाहों पर अपना अधिकार जमाने की कोशिश करते रहते थे। पल्लवों ने अपने साम्राज्य का विस्तार अपनी राजधानी कांचीपुरम के चारों ओर किया। एहोल चालुक्यों की राजधानी थी तथा वह वाणिज्य और व्यापार का महत्त्वपूर्ण केंद्र था।

(v) राष्ट्रकूट महाराष्ट्र के निवासी थे। दन्ती वर्मा, इंद्र प्रथम, गोविंद प्रथम, कर्क प्रथम तथा इंद्र द्वितीय इस वंश के महत्त्वपूर्ण शासकों में थे। ऐसा माना जाता है कि दंती दुर्ग ने इस वंश की स्थापना की थी। उसने चालुक्य नरेश कीर्तिवर्मा द्वितीय, को खानदोश में पराजित किया था तथा 750 ई. में सारे महाराष्ट्र को अपने अधिकार में ले लिया। उसकी मृत्यु के बाद उसका चाचा कृष्ण प्रथम राजा बना। वह केवल एक विजेता ही नहीं था, बल्कि एक महान निर्माता भी था। उसने एलौरा (महाराष्ट्र) में बहुत विशाल पत्थर की चट्टान को काटकर कैलाश मंदिर का निर्माण कराया, जिसमें कई मंजिलें हैं। राष्ट्रकूल वंश का अंतिम शासक कर्क द्वितीय (972 – 973 ई) था।

3. आठ पंक्तियों में उत्तर :

(i) ह्वेनसांग एक चीनी यात्री था, जिसने हर्षवर्धन के समय भारत का भ्रमण किया। वह भारत में 15 वर्ष तक रहा, जिसमें से 8 वर्ष उसने हर्षवर्धन के दरबार में व्यतीत किए। उसने भारत के राज्यों की राजधानियों का भ्रमण किया। उसने 'सूया–की' नामक पुस्तक की रचना की, जिसमें उसने तत्कालीन भारत की राजनीतिक, आर्थिक, सामाजिक और सांस्कृतिक दशाओं का वर्णन किया।

(ii) चोल वंश का सबसे शक्तिशाली राजा राजराजा (985–1014 ई.) था। उसने लंका तथा मालदीव द्वीप समूह के राजा महेन्द्र पंचम को हराया। उसकी मृत्यु के उपरांत उसका पुत्र राजेन्द्र प्रथम (1012–1044 ई.) 'गगईकोण्ड' चोल के नाम से सिंहासन पर बैठा। उसने लगभग 32 वर्ष तक शासन किया तथा चोल वंश को एक शक्तिशाली साम्राज्य का स्वरूप प्रदान किया।

चोलों का शासन प्रबंध सुव्यवस्थित तथा सुविकसित था। पूरे साम्राज्य को राष्ट्रम के नाम से जाना जाता था। चोल सिंचाई के लिए तालाबों की खुदाई करवाते थे तथा सिंचाई के पानी के बदले 'कर' वसूल करते थे। वे आर्थिक दृष्टि से आत्मनिर्भर थे।

(iii) चोल राजा राजेंद्र प्रथम के पास बड़ी और शक्तिशाली नौसेना थी। इसीलिए प्राचीनकाल में चोल वंश अपनी नौसेना के लिए विख्यात थे। उसने नौसेना की सहायता से लंका, निकोबार द्वीप, मलाया और मलाया द्वीपसमूह को विजित किया था। इसी बीच कुछ भारतीय व्यापारियों ने इन देशों की यात्राएँ की और वे सदा के लिए वहाँ बस गए। अपने संपर्क के कारण विदेशियों ने भारतीय रीति–रिवाजों और परंपराओं को अपना लिया। पल्लवों ने सुमात्रा में अपनी बस्तियाँ स्थापित कीं, जो भारतीय संस्कृति के प्रचार–प्रसार का केंद्र बन गया। भारतीय स्थानीय लोगों से घुल–मिल गए और इस प्रकार भारतीय कला और भाषा का विस्तार हुआ। इंडोनेशिया की भाषा में संस्कृत के अनेक शब्द हैं। रामायण को नाटक के रूप में भी इंडोनेशिया में मंचित किया जाता है। कम्बोडिया (कम्पूचिया) और चम्पा संस्कृत के केंद्र बन गए। कम्बोडिया स्थित अंकोरवाट का मंदिर ऐतिहासिक धरोहर है। यह मंदिर अपनी दीवारों पर की गई शिल्पकारी के लिए प्रसिद्ध है, जिसमें रामायण और महाभारत की कथाओं को पत्थरों पर उकेरा गया है।

10 भारत के प्रमुख धर्म

रचनात्मक निर्धारण

1. सही विकल्प पर सही (✓) का निशान लगाइए :

(i) (a) महावीर स्वामी	(ii) (c) कपिलवस्तु
(iii) (d) पीपल	(iv) (b) बौद्ध धर्म से
(v) (a) बैथलहम में	(vi) (a) 24
(vii) (a) बौद्ध धर्म	(viii) (c) सम्यक् ध्यान

2. निम्नलिखित को सुमेल कीजिए :

'अ'	'ब'
जैन धर्म	महावीर स्वामी
बौद्ध धर्म	भगवान बुद्ध
कपिलवस्तु	भगवान बुद्ध की जन्मस्थली
वैशाली	महावीर स्वामी की जन्मस्थली
हीनयान	बौद्ध धर्म का एक सम्प्रदाय
श्वेताम्बर	जैन धर्म का एक सम्प्रदाय
ईसाई धर्म	जीसस क्राइस्ट

3. रिक्त स्थानों की पूर्ति कीजिए :

(i) बुद्ध (ii) बुद्ध (iii) बिहार (iv) मैरी
(v) जैन धर्म

संकलित निर्धारण

1. एक पंक्ति में उत्तर :

(i) महावीर स्वामी जैन धर्म के संस्थापक थे और उनका जनम बिहार स्थित वैशाली में हुआ था।

(ii) भगवान बुद्ध बौद्ध धर्म के संस्थापक थे और उनका जन्म नेपाल में

लुम्बिनी वन के निकट कपिलवस्तु में हुआ था।

(iii) जैन धर्म के त्रिरत्न-सम्यक् ज्ञान, सम्यक् दर्शन और सम्यक् चरित्र।

(iv) पाँच महाव्रतों के नाम—अहिंसा, सत्य, अस्तेय, अपरिग्रह, बह्मचर्य।

(v) बोधगया में पीपल के पेड़ के नीचे भगवान बुद्ध को ज्ञान प्राप्त हुआ, जहाँ उन्हें यह पता चला कि मनुष्य अपने दु:खों से छुटकारा कैसे प्राप्त कर सकता है और वह वहीं से बुद्ध कहलाए। इसी कारण बोधगया प्रसिद्ध है।

(vi) महावीर स्वामी को प्राप्त ज्ञान 'कैवल्य' है।

2. चार पंक्तियों में उत्तर :

(i) सच्चे ज्ञान और शांति की तलाश में बुद्ध ने बहुत दिनों तक कठोर तपस्या की। इसके उपरांत वह बोधगया (बिहार) चले गए। जहाँ उन्होंने महान ऋषियों का सान्निध्य प्राप्त किया। बोधगया में पीपल के पेड़ के नीचे उन्हें ज्ञान प्राप्त हुआ। जहाँ उन्हें यह पता चला कि मनुष्य अपने दु:खों से छुटकारा कैसे प्राप्त कर सकता है और वह वहीं से बुद्ध कहलाए।

(ii) भगवान बुद्ध ने मनुष्यों के दु:खों का निवारण करने के लिए उन्हें अष्टांगिक मार्ग का उपदेश दिया। ये अष्टांगिक मार्ग निम्नलिखित हैं—

(1) सम्यक् दृष्टि	(5) सम्यक् जीविका
(2) सम्यक् संकल्प	(6) सम्यक् प्रयत्न
(3) सम्यक् वचन	(7) सम्यक् विचार
(4) सम्यक् कर्म	(8) सम्यक् स्मृति।

(iii) **श्वेताम्बरों तथा दिगाम्बरों के मध्य भेद :**

क्र.सं.	श्वेताम्बर	दिगाम्बर
1.	ये लोग नंगे नहीं रहते हैं तथा सफेद वस्त्र धारण करते हैं।	ये लोग नंगे रहते हैं।

2.	ये जैन धर्म की मूल शिक्षाओं में विश्वास नहीं करते हैं। इसके प्रवर्तक स्थूलभद्र थे।	ये जैन धर्म की मूल शिक्षाओं में विश्वास करते हैं। इसके प्रवर्तक बाहुभद्र थे।

(iv) **बौद्ध धर्म की शिक्षाएँ निम्नलिखित हैं–**

(1) वह भोजन, मनोरंजन और बलि के लिए पशु वध के विरुद्ध थे।

(2) उन्होंने जातिवाद का बहिष्कार किया तथा समानता के सिद्धांत पर जोर दिया।

(3) वह सत्य विचार के पक्ष में थे।

(4) वह विश्वास करते थे 'जैसे तुम बोओगे, वैसा तुम काटोगे'।

(5) वे दु:ख के पुनर्जन्म में विश्वास करते थे, आत्मा के पुनर्जन्म में नहीं।

(6) बुद्ध के अनुसार प्रत्येक वस्तु नश्वर है तथा समान रूप से परिवर्तनीय है।

(7) उन्होंने उपदेश दिया था कि मनुष्य को नृत्य, सुगंध, असमय भोजन ग्रहण, कोमल बिस्तर और सम्पत्ति परिग्रह का त्याग करना चाहिए।

(v) चार आर्य सत्य निम्नलिखित हैं–

(1) दु:ख है।

(2) दु:ख का कारण है।

(3) दु:ख के निवारण के उपाय हैं।

(4) दु:ख का निवारण अष्टांगिक मार्ग द्वारा संभव है।

3. आठ पंक्तियों में उत्तर :

(i) **बौद्ध धर्म की शिक्षाएँ निम्नलिखित हैं–**

(1) वह भोजन, मनोरंजन और बलि के लिए पशु वध के विरुद्ध थे।

(2) उन्होंने जातिवाद का बहिष्कार किया तथा समानता के सिद्धांत पर जोर दिया।

(3) वह सत्य विचार के पक्ष में थे।

(4) वह विश्वास करते थे 'जैसे तुम बोओगे, वैसा तुम काटोगे'।

(5) वे दु:ख के पुनर्जन्म में विश्वास करते थे, आत्मा के पुनर्जन्म में नहीं।

(6) बुद्ध के अनुसार प्रत्येक वस्तु नश्वर है तथा समान रूप से परिवर्तनीय है।

(7) उन्होंने उपदेश दिया था कि मनुष्य को नृत्य, सुगंध, असमय भोजन ग्रहण, कोमल बिस्तर और सम्पत्ति परिग्रह का त्याग करना चाहिए।

(ii) भारत में जैन और बौद्ध धर्म के साथ-साथ भगवान शिव, विष्णु और दुर्गा जैसी देवियों की मूर्तियों की पूजा-अर्चना हिंदू धर्म के अंतर्गत की जाने लगी। इन मूर्तियों की पूजा को भक्ति कहा गया। भक्ति से अभिप्राय सामान्यत: मनुष्य द्वारा अपने आराध्य देवता या देवी की मूर्ति के प्रति समर्पण है। हिंदुओं का पवित्र ग्रंथ भगवद्गीता भक्ति के विचार को परिलक्षित करता है। भक्ति मार्ग में लोग अपनी पसंद के देवता और देवी की हृदय से आराधना करते हैं। भक्त मूर्ति की पूजा करता है तथा मूर्ति मनुष्य, वृक्ष या पशु का रूप धारण कर लेती है। भक्ति करने वाला भक्त कहलाता है। लोग मंदिर में मूर्ति स्थापित कर ईश्वर की पूजा करते हैं। भक्त लोग मूर्ति के समक्ष घी, तेल आदि के दीपक तथा धूप जलाकर अपने आराध्य की पूजा मंत्र, भजन या गीत गाकर करते हैं।

(iii) बौद्ध धर्म की शिक्षाओं का माध्यम पालि भाषा थी। लोगों ने इसका अनुसरण दिल से किया और यह एक संगठित धर्म बन गया। इसीलिए इसका प्रसार-प्रचार दूर-दूर तक हुआ। यद्यपि उन दिनों संचार के साधनों का अभाव था तो भी चीन तथा दक्षिण-पूर्वी

एशिया के लोगों ने इसे मन से स्वीकार कर अपनाया।

धर्म की कुरीतियों और दोषों को दूर करने के लिए कनिष्क, अशोक,अ जातशत्रुअ ैरह र्षन ेअ पने-अपनेश ाासनकालम ेंच ार बौद्ध संगीतियों का आयोजन कराया। इन संगीतियों में विद्वान इकट्ठे हुए तथा बौद्ध धर्म के महत्त्वपूर्ण मुद्दों पर बहस और चर्चा की। लोग बोधिसत्वों की पूजा मध्य एशिया, चीन, जापान तथा कोरिया में करने लगे। अनेक भिक्षुओं ने बौद्ध धर्म का प्रसार पश्चिमी और दक्षिण भारत के भागों में किया। ये भिक्षुक पर्वतों की गुफाओं में निवास किया करते थे। इन गुफाओं को मठ गुफाओं के नाम से जाना जाता था। इनमें यात्राओं के दौरान व्यापारी और यात्री ठहरा करते थे।

बौद्ध धर्म का प्रचार एवं प्रसार श्रीलंका, म्यांमार, थाईलैंड और इंडोनेशिया में भी हुआ। 1600 वर्ष पूर्व फाह्यान, 1400 वर्ष पूर्व जुआनजंगत था1 450व र्षप ूर्वइ त्सिंगन ेम ठोंअ ैरब ौद्धम ंदिरों आदि का भ्रमण किया। वे लोग बौद्ध धर्म की विभिन्न पुस्तकों को अपने साथ अपने देश ले गए थे।

(iv) ईसाई धर्म के संस्थापक जीसस क्राइस्ट (ईसा मसीह) थे, जिनका जन्म बैथलहम, इजराइल में जेरूसलम के पास, लगभग 2100 वर्ष पूर्व हुआ था। ईसाइयों की पवित्र पुस्तक का नाम 'बाइबिल' है, जिसमें ईसा मसीह द्वारा दिए गए उपदेशों को संकलित किया गया है। क्रॉस ईसाइयों का पवित्र चिह्न है। ये लोग शांतिप्रिय होते हैं तथा हिंसा में विश्वास नहीं करते। प्रथम ईसाई उपदेशक पश्चिमी एशिया से उपमहाद्वीप के पश्चिमी तट पर पहुँचे थे।

ईसाई धर्म की शिक्षाएँ–

(1) हमें प्रेम और शांति से रहना चाहिए।

(2) हमें पशुओं और निर्धनों पर दया करनी चाहिए।

(3) ईश्वर के दर्शन के लिए हृदय पवित्र होना चाहिए।

(4) हम ईश्वर के पुत्र हैं। हमें दूसरों से प्रेम का व्यवहार करना चाहिए। हमें दूसरों के साथ ऐसा व्यवहार करना चाहिए जैसा कि हम दूसरों से अपने लिए चाहते हैं।

4. निम्नलिखित का उचित कारण दीजिए :

(i) महावीर स्वामी ने सत्य की खोज में 11 वर्षों तक कठिन तपस्या की थी।

(ii) अपनी संवेदी ग्रंथियों पर विजय प्राप्त करने के कारण वर्धमान को महावीर पुकारा गया।

(iii) गौतम बुद्ध ने 30 वर्ष की अवस्था में दु:खों के कारण का पता लगाने के लिए अपने महल, पिता, पुत्र और पत्नी को छोड़ दिया था।

(iv) बौद्ध धर्म के महत्त्वपूर्ण मुद्दों पर बहस और चर्चा करने के उद्देश्य से अशोक द्वारा बौद्ध संगीति का आयोजन कराया गया।

11 भारत का विदेशों से सांस्कृतिक संबंध

रचनात्मक निर्धारण

1. सही विकल्प पर सही (✓) का निशान लगाइए :

(i) (a) चैत्य के लिए (ii) (b) सिमुक

(iii) (d) शाकाला (iv) (a) 78 ई.

(v) (b) कश्मीर (vi) (c) रूद्रदमन

(vii) (c) चीन (viii) (a) कनिष्क

(ix) (b) कनिष्क

2. रिक्त स्थानों की पूर्ति कीजिए :

(i) बंदरगाह (ii) सिमुक (iii) 200 (iv) गांधार

3. निम्नलिखित को सुमेल कीजिए :

'अ'	'ब'
मिलिन्द पनहो	शक वंश का एक राजा
गांधार	कला का एक प्रसिद्ध केंद्र
महायान	बौद्ध धर्म का एक सम्प्रदाय
57 ई. पू.	मिनेण्डर
78 ई.	विक्रम संवत की उत्पत्ति हुई

4. सत्य या असत्य बताइए :

(i) असत्य (ii) सत्य (iii) असत्य

(iv) सत्य (v) असत्य (vi) असत्य

संकलित निर्धारण

1. एक पंक्ति में उत्तर :

(i) यवन, शक, पल्लव और कुषाण।

(ii) सिमुक सतवाहन वंश का संस्थापक था।

(iii) कार्ले चैत्य।

(iv) यवन शासकों में हिन्द-यवन शासक मिनाण्डर बहुत प्रसिद्ध शासक था।

(v) सुदर्शन झील काठियावाड़ (गुजरात) में है।

(vi) बौद्ध धर्म के सम्प्रदाय – महायान तथा हीनयान।

2. चार पंक्तियों में उत्तर :

(i) सतवाहन वंश का संस्थापक सिमुक था, लेकिन गौतमीपुत्र शातकर्णी इस वंश का महान शासक था। सतवाहनों के साम्राज्य में मध्य प्रदेश, महाराष्ट्र और गुजरात सम्मिलित थे। सतवाहनो ने शकों, यवनों और पल्लवों को हराया तथा अपने साम्राज्य का विस्तार किया। वे वैदिक धर्म के अनुयायी थे; परंतु वे धर्मनिरपेक्षता का पालन करते थे। इसीलिए उनके साम्राज्य में सभी धर्मों का सम्मान था। उन्होंने चैत्यों के निर्माण के लिए भूमि और गाँव दान कर दिए थे तथा ठोस शिलाओं को काटकर विहारों का निर्माण कराया था।

(ii) मिनाण्डर एक बहुत प्रसिद्ध यवन शासक था। उसे 'मिलिन्द' के नाम से भी जाना जाता था। मिनाण्डर ने मिलिन्दपनहो नामक ग्रंथ लिखा था।

(iii) यवनों के उपरांत शक भारत में आए। शकों का सबसे प्रसिद्ध एवं लोकप्रिय शासक रूद्रदमन था। शकों का साम्राज्य सिंध, कोंकण, नर्मदा घाटी, मालवा और गुजरात में फैला हुआ था।

शकों के कार्य :

(1) शकों ने काठियावाड़ (गुजरात) में सुदर्शन झील का जीर्णोद्धार कराया।

(2) शक राजा रूद्रदमन ने संस्कृत में एक लंबा लेख लिखा।

(iv) कनिष्क कुषाण वंश का सबसे प्रसिद्ध राजा था।

कनिष्क के शासनकाल में व्यापार : व्यापारिक केंद्र मुख्य रूप से शहर थे। इसीलिए शहरीकरण की प्रक्रिया अपने चरम स्तर पर थी। तक्षशिला, पेशावर तथा कनिष्कपुर शहरों की स्थापना कनिष्क द्वारा की गई थी। कुषाणों ने मध्य एशिया से चीन को निकालकर रोमन साम्राज्य को जाने वाले रेशम मार्ग पर कब्जा कर लिया था। इसने भारतीय व्यापार को नए अवसर सुलभ कराए और यह समृद्ध दशा में पहुँचा।

(v) कुषाणकाल में मथुरा और गांधार मूर्तिकला के दो महत्त्वपूर्ण केंद्र थे। मूतियाँ बनाने में गांधार में भूरा सलेटी पत्थर प्रयोग किया जाता था। गांधार उत्तर-पश्चिमी भारत में स्थित था तथा उसकी मूर्ति कला पर यूनान और रोम का प्रभाव था। भगवान बुद्ध की मूर्तियाँ यूनानी शैली में बनाई गईं।

3. आठ पंक्तियों में उत्तर :

(i) चीन से भूमध्य सागरीय क्षेत्र और रोम के बीच से निकलने वाला मार्ग, जिससे चीन रेशम ले जाया जाता था, रेशम मार्ग कहलाता था।

चीन ने सर्वप्रथम रेशम बनाने की विधि का आविष्कार किया। कुछ चीनवासी घोड़ों, ऊँटों तथा सिर पर रखकर अन्य देशों को कच्चा रेशम ले जाया करते थे। रेशमी धागा (रेशा) सबसे कीमती होता है, इसीलिए चीन के शासक ईरान और पश्चिमी एशिया के शासकों को रेशम उपहारस्वरूप भेंट किया करते थे। इस तरह से रेशम चीन से पश्चिम के अन्य देशों में पहुँचा। रेशम मार्ग लुटेरों के आक्रमणों तथा लूट के खतरों से भरा हुआ था। इसके अतिरिक्त व्यापारियों को उन देशों के शासकों को व्यापार कर अदा करना पड़ता था, जिससे रेशम मार्ग होकर गुजरता था। मध्य एशिया और उत्तर-पश्चिमी भारत पर कुषाण शासकों का शासन था और इन रेशम मार्गों पर लगभग 2000 वर्ष पूर्व इनका अधिकार था। कुषाण भारत में प्रथम ऐसे शासक थे, जिन्होंने सोने के सिक्के चलाए और व्यापारी रेशम मार्ग पर इनका प्रयोग किया करते थे।

(ii) **कुषाणों के समय वेशभूषा :** कुषाणों ने टोपी, कुर्ती और जूतों का उपयोग किया। इसके अतिरिक्त फैशन की दुनिया में उन्होंने लंबे कोट का चलन भी शुरू किया था।

व्यापार : रोमन साम्राज्य और मध्य एशिया से सोना बड़ी मात्रा में प्राप्त किया जाता था। काँच के बर्तनों के बनाने की तकनीक और अधिक विकसित दशा में पहुँच गई थी।

व्यापारिक केंद्र मुख्य रूप से शहर थे। इसीलिए शहरीकरण की प्रक्रिया अपने चरम स्तर पर थी। तक्षशिला, पेशावर तथा कनिष्कपुर शहरों की स्थापना कनिष्क द्वारा की गई थी। कुषाणों ने मध्य एशिया से चीन को निकालकर रोमन साम्राज्य को जाने वाले रेशम मार्ग पर कब्जा कर लिया था। इसने भारतीय व्यापार को नए अवसर सुलभ कराए और यह समृद्ध दशा में पहुँचा।

विज्ञान और तकनीकी : हिंद-यवनों के संपर्क द्वारा ज्योतिष और खगोलशास्त्र के क्षेत्रों में अथाह प्रगति हुई। भारतीयों को चिकित्सा

की यूनानी पद्धति का पता चला।

कनिष्क के शासनकाल में चरक एक प्रसिद्ध चिकित्सक था, जिसने 'चरक संहिता' नामक ग्रंथ की रचना की, जिसमें 600 से भी अधिक औषधियों का वर्णन किया गया है।

(iii) विदेशी आक्रांताओं की अपनी कोई भाषा-लिपि तथा सुपरिभाषित धर्म नहीं था, इसीलिए उन्होंने भारतीय संस्कृति की संकल्पना (विचार) को ग्रहण किया और इसने एक मिश्रित संस्कृति को जन्म दिया।

परिणामस्वरूप, आक्रांता भारत के अलग न होने वाले सामाजिक परिवेश में ढल गए। अब वे बहुत ही कम कुकृत्य करते थे। विचारों की आपसी अदल-बदल से रीति-रिवाजों, परंपराओं और समाज में व्याप्त धारणाओं में बदलाव आया तथा नई विचारधारा और संस्थाओं का विकास हुआ। विदेशी शासकों ने भारतीय कला, धर्म और साहित्य को संरक्षित किया और नए धर्म को स्वीकार करने वाली प्रजा ने वहीं उत्साह या उमंग दिखाई। बौद्ध धर्म चीन से जापान तथा कोरिया तक फैल गया। चीन ने बौद्ध चित्रकला भारत से सीखी। कनिष्क ने बौद्ध स्तूपों, चैत्यों तथा विहारों का निर्माण कराया। उसने बुद्ध तथा बोधिसत्वों की मूर्तियों को विदेश भिजवाया। इस प्रकार भारतीय संस्कृति लगातार एक पीढ़ी-से-दूसरी पीढ़ी तक दूर-दूर तक फैल गई।

12 प्राचीनकाल में व्यापार, शिल्पकला और नगर

रचनात्मक निर्धारण

1. सही विकल्प पर सही (✓) का निशान लगाइए :

(i) (b) पश्चिम बंगाल (ii) (b) उपहार (भेंट)

(iii) (c) निर्यात और आयात दोनों (iv) (b) पांण्डिचेरी में

(v) (a) गंगा पर (vi) (a) दोहरे हत्थेवाला जार

(vii) (b) गाँव का मुखिया।

2. रिक्त स्थानों की पूर्ति :

(i) शौचालयों (ii) कस्बों (iii) कीमती पत्थर

(iv) बढ़ावा (v) चद्रकेतुगढ़

3. सत्य या असत्य बताइए :

(i) सत्य (ii) सत्य (iii) असत्य

(iv) असत्य (v) असत्य (vi) सत्य

4. निम्नलिखित को सुमेल कीजिए :

'अ'	'ब'
छल्लों से बना कुँआ	पानी के निकास के लिए मिट्टी के छल्लों से बना कुआँ
श्रेणी	गिल्ड
अरिकमेडु	व्यापारिक केंद्र
मथुरा	कुषाणों की द्वितीय राजधानी
मुसलिन	एक प्रकार का महीन सूती वस्त्र
अरेटाइन	लाल रंग के मिट्टी के चमकीले बर्तन
भृगुकच्छ	बंदरगाह

संकलित निर्धारण

1. एक पंक्ति में उत्तर :

(i) **प्राचीनकाल के शिल्पकार :** पत्थर का काम करने वाले, बढ़ई, तेली, हाथी दाँत से चीजें बनाने वाले, जुलाहे, सुनार, धातुकर्मी, लुहार आदि।

(ii) **प्राचीनकाल के कुछ नगर :** पाटलिपुत्र, प्रयाग, उज्जैन, राजगृह, कौशाम्बी, श्रावस्ती, मथुरा और वाराणसी।

(iii) चंद्रकेतुगढ़ और भृगुकच्छ।

(iv) प्राचीन समय में व्यापारियों को श्रेणियों में वर्गीकृत किया गया था, जिन्हें व्यापारिक निगम कहते थे।

(v) चंद्रकेतुगढ़ और ताम्रलिप्ति।

(vi) ईरानियों और यूनानियों ने भारत में सर्वप्रथम धातु के सिक्के चलाए।

(vii) राजगृह (मगध), कौशाम्बी (वत्स) तथा श्रावस्ती (कोशल)।

2. चार पंक्तियों में उत्तर :

(i) प्राचीन भारत में कस्बों का नगर या महानगर कहा जाता था। व्यापारिक केंद्र, जहाँ व्यापारी और शिल्पकार निवास किया करते थे, साम्राज्य के व्यस्त बाजार स्थल बन गए थे। कुछ नगर नदियों के किनारे बसे थे, जहाँ से बंदरगाहों के माध्यम से व्यापारिक गतिविधियों का संचालन किया जाता था। राजधानी नगरों से साम्राज्य का प्रशासन चलाया जाता था।

(ii) प्राचीन समय में व्यापारियों को श्रेणियों में वर्गीकृत किया गया था, जिन्हें व्यापारिक निगम कहते थे। ये निगम पश्चिमी और दक्षिणी भारत में बनाए गए थे। ये ब्याज के रूप में कमाए गए धन को बौद्ध मठों को दान कर दिया करते थे। दक्षिण भारतीय व्यापारिक निगमों को निकम्मत्तर कहते थे।

(iii) चोल शासन में 1900-2200 वर्ष पूर्व के मध्य भारत के पूर्वी

समुद्री तट पर स्थित पॉण्डिचेरी में अरिकमेडु एक महत्त्वपूर्ण बंदरगाह था। यहाँ सुदूर विदेशों से लाकर जहाज माल उतारते थे। तट के निकट ईंटों से निर्मित एक विशाल माल का भंडारण करने हेतुप्रयोगक ीज ातीह ोगी।अ म्फोर(दोहरेह त्थेव ालेल बेज ार, जिनमें अनुमानतः शराब या तेल भरा जाता हो) तथा स्थानीय आकार वाले रोमन बर्तन भी अरिकमेडु में खुदाई में प्राप्त हुए हैं। यह व्यापार का एक महत्त्वपूर्ण केंद्र था, जिसका इटली के साथ व्यापार रहा होगा।

(iv) प्राचीनकालीन भारत में व्यापार का माध्यम सिक्के थे, जिनका प्रयोग व्यापारी माल खरीदने और बेचने में करते थे। वस्तुओं का मूल्य सिक्कों में चुकाया जाता था। भारत में सिक्कों को चलाने और जारी करने का श्रेय ईरानियों और यूनानियों को जाता था। छठी शताब्दी ई.पू. में भारत में चाँदी, ताँबे और काँसे के सिक्के बनाए जाते थे। मुहर लगे हुए सिक्के लगभग 500 वर्षों तक प्रयोग किए गए और इन्हें प्राचीनतम सिक्के माना जाता था।

(v) **प्राचीनकालीन भारत में आयात की जाने वाली वस्तुएँ :** सोना, चाँदी, हीरे, शराब तथा लैंप।

प्राचीनकालीन भारत में निर्यात की जाने वाली वस्तुएँ : मसाले, हीरे, नीलम, कीमती पत्थर, चूड़ियाँ।

3. आठ पंक्तियों में उत्तर :

(i) प्राचीनकालीन भारत में अनेक कलाकार; जैसे–पत्थर का काम करने वाले, बढ़ई, तेली, हाथी दाँत से चीजे बनाने वाले, जुलाहे, सुनार और धातुकर्मी आदि शहरों और गाँवों में अपने-अपने पुश्तैनी धंधों में लग रहे थे। पुरातत्ववेत्ताओं ने खुदाई स्थलों से लोहे के औजार, सिक्के, पकाई हुई ईंटे और बर्तन प्राप्त किए हैं। ये सभी वस्तुएँ इस बात की प्रमाण है कि उस समय इन वस्तुओं को बनाने वाले शिल्पकार थे। शिल्पकार वस्तओं को बनाने के लिए कच्चे

माल के स्रोतों के पास निवास किया करते थे। उदाहरण के लिए बढ़ई वनों के, कुम्हार नदियों और तालाबों के तथा धातुकर्मी खानों केि नकटब सकरप्जाव ेि लएक ार्मि कयाक रतेथ ो।उ नमेंस े अधिकतर उन कार्यों में लगे थे, जो किसानों और व्यापारियों के लिए महत्त्वपूर्ण चीजें बनाया करते थे।

(ii) पुरातत्ववेत्ताओं को उत्तर-पश्चिमी भारत के कुछ स्थानों से काली पॉलिश वाले बर्तन मिले हैं। ऐसा विश्वास किया जाता है कि व्यापारी इन बर्तनों को उनके निर्माण स्थलों से वहाँ लाए होंगे। बर्तनों के स्थानांतरण का मुख्य उद्देश्य उनकी बिक्री रहा होगा।

व्यापार की मुख्य वस्तुएँ सोना, मसाले, काली मिर्च और कीमती पत्थर रहे होंगे। व्यापारी इन वस्तुओं को जहाज में लादकर समुद्र पार रोम को तथा आगे काफिलों में ले गए होंगे। दक्षिण भारत में मिले सोने के रोमन सिक्के इस बात के प्रमाण हैं।

नदियाँ अंतर्देशीय व्यापार को बढ़ावा देती थीं। अधिकतर नगर नदियों के किनारे स्थित थे।

कौटिल्य के 'अर्थशास्त्र' के अनुसार उत्तरी और दक्षिणी भारत के मध्य हीरे, कीमती पत्थर, कवच या खोल, मोती और वस्त्रों का व्यापार होता था।

पूर्वी समुद्री तट पर स्थित ताम्रलिप्ति और चंद्रकेतुगढ़ तथा पश्चिमी समुद्रीत टप रि स्थतभ ड़ौच(भृगुकच्छअ ौरस ोपोरा(शुर्परका) विदेशी व्यापार के महत्त्वपूर्ण केंद्र थे। भारत का समुद्री व्यापार रोमन साम्राज्य और अरब देशों के साथ होता था।

इनके अतिरिक्त दक्षिण भारत स्थित तोंडी पुहार अरिकमेडु और करकई भी व्यापार के महत्त्वपूर्ण और प्रमुख केंद्र थे।

4. निम्नलिखित का कारण बताइए :

(i) बढ़ई जंगलों के निकट रहकर प्रजा के लिए शिल्पकारी का काम किया करते थे।

(ii) अरिकमेडु में वस्त्रों को रँगने के लिए निकट स्थानों में छोटे तालाब पाए गए हैं।

(iii) नदियाँ अंतर्देशीय व्यापार को बढ़ावा देती थीं। इसी कारण कुछ शहर नदियों के किनारे स्थित थे।

13 प्राचीन भारतीय स्थापत्य कला, चित्रकारी, विज्ञान एवं पुस्तकें

रचनात्मक निर्धारण

1. सही विकल्प पर सही (✓) का निशान लगाइए :

(i) (c) अशोक महान ने (ii) (a) सारनाथ

(iii) (a) बौद्ध धर्म का (iv) (a) 6

(v) (a) झाँसी (vi) (b) शिव

(vii) (b) कैलाश मंदिर (viii) (b) भारतीयों ने

(ix) (a) मेगस्थनीज ने (x) (c) तमिल कवि

2. निम्नलिखित को सुमेल कीजिए :

'अ'	'ब'
देवगढ़ मंदिर	झाँसी
भितरगाँव मंदिर	कानपुर
मेघदूत	कालिदास
मुद्राराक्षस	विशाखदत्त
साँची का स्तूप	मध्य प्रदेश

3. सत्य या असत्य बताइए :

(i) सत्य (ii) असत्य (iii) सत्य

(iv) असत्य (v) असत्य

4. मैं कौन हूँ?

(i) भरहुत का स्तूत (ii) भरहुत के स्तूप के प्रवेश द्वार

(iii) लौह स्तंभ (iv) दशावतार मंदिर

(v) अजंता की गुफाएँ (vi) कोणार्क का सूर्य मंदिर

संकलित निर्धारण

1. एक पंक्ति में उत्तर :

(i) अशोक महान ने।

(ii) वेद, महाभारत, गीता, ब्राह्मण ग्रंथ, उपनिषद्, पुराण आदि।

(iii) कालिदास, चंद्रगुप्त द्वितीय के नवरत्नों में एक था। उसके नाटकों के नाम–मेघदूत, कुमारसम्भव, अभिज्ञानशाकुन्तलम, ऋतुसंहार, मालविकाग्निमित्र आदि हैं।

(iv) चरक, प्राचीनकालीन भारत का एक प्रसिद्ध चिकित्सक एवं वैद्य था।

(v) आर्यभट्ट एक गणितज्ञ और खगोलशास्त्री था।

(vi) अजंता की गुफाएँ महाराष्ट्र में स्थित हैं।

(vii) कादम्बरी की रचना बाणभट्ट ने की।

(viii) कोणार्क का सूर्य मंदिर गंग वंश के शासक नरसिंह देव ने बनवाया।

(ix) लौह स्तंभ महरौली (दिल्ली) में स्थित है।

2. चार पंक्तियों में उत्तर :

(i) स्तूप एक टीला है। यह आकार में गोल, ऊँचा, बड़ा तथा छोटा हो सकता है। इसके केंद्र में रखा गया छोटे संदूक के आकार का संदूक इसका हृदय कहा जाता है, जिसमें भगवान बुद्ध, बौद्धिसत्वों या बौद्धभिक्षुओं के दाँत, हड्डियाँ या राख आदि सँजोकर रखे रहते थे। इसके अतिरिक्त, इसमें कीमती पत्थर और सिक्के भी रखे जाते थे। स्तूप का निर्माण ईंट-गारा से होता था तथा इसके चारों ओर पत्थर या लकड़ी की चारदीवारी बनी होती थी। चारदीवारी से लगा मार्ग प्रदक्षिणा पथ कहलाता था, जिसमें भक्तगतण स्तूप के दाएँ से बाएँ

ओर घूमकर मृत शरीरों के अवशेषों की पूजा करते हैं।

(ii) अशोक के शासनकाल में अनेक स्तंभों का निर्माण हुआ। प्रत्येक स्तंभ को पत्थर की एक ही चट्टान से काटकर बनाया गया है। स्तंभ की चोटी वाला भाग शीर्ष कहलाता है, जो सुंदर जानवरों की उत्कीर्ण प्रतिमाओं से सजा है।

(iii) दशावतार मंदिर, देवगढ़ (झाँसी), भितरगाँव का मंदिर, कानपुर; उत्तर प्रदेश में स्थित है। दशावतार मंदिर में भगवान विष्णु के दशावतारों की मूर्तियाँ बनी हुई हैं। मंदिर के प्रवेश द्वार पर स्तंभों पर गंगा और यमुना की मूर्तियों को स्थापित किया गया है। मंदिर अपनी कलात्मक रचनाओं और सुंदरता के लिए प्रसिद्ध हैं। मध्य प्रदेश में नागौर में स्थित भूमरा का शिव मंदिर, जिसके केवल भग्नावशेष ही बचे हैं, भी गुप्त शासकों ने बनवाया है। महाराष्ट्र में औरंगाबाद के निकट अजंता की गुफाओं के मंदिर भी विश्व प्रसिद्ध हैं।

(iv) चित्रकला का इतिहास पाषाण युग से ही विद्यमान है। अजंता की गुफाओं के भित्ति चित्रों में भगवान बुद्ध के जीवनवृत्त से संबंधित घटनाओं को दर्शाया गया है। रंग योजना तथा रंग आज भी अपनी चमक को बनाए हुए हैं। उन दिनों रंगों को पौधों और खनिजों से बनाया जाता था। इन चित्रों के कलाकार आज तक अज्ञात हैं।

(v) प्राचीनकाल में भारत के प्रसिद्ध वैज्ञानिकों में आर्यभट्ट तथा वराहमिहिर थे। आर्यभट्ट एक प्रसिद्ध गणितज्ञ और खगोलशास्त्री था, जिसने शून्य का आविष्कार किया तथा उसने सूर्य ग्रहण और चंद्र ग्रहण होने की व्याख्या भी दी। गुप्त वंश में चरक और धन्वन्तरि दो प्रसिद्ध वैद्य और चिकित्सक हुए हैं। उन्होंने अनेक रोगों का कारण और उनका निदान बताया। महरौली (दिल्ली) में चंद्रगुप्त द्वितीय द्वारा निर्मित लोहे की लाट बिना जंग लगे वर्षा और धूप में हजारों वर्षों से खड़ी हुई है, जो धातु विज्ञान का उत्कृष्ट उदाहरण हैं।

3. आठ पंक्तियों में उत्तर :

(i) **प्राचीनकालीन भारतीय स्थापत्य कला :**

स्तूप : स्तूप एक टीला है। यह आकार में गोल, ऊँचा, बड़ा तथा छोटा हो सकता है। इसके केंद्र में रखा गया छोटे संदूक के आकार का संदूक इसका हृदय कहा जाता है, जिसमें भगवान बुद्ध, बौद्धिसत्वों या बौद्धभिक्षुओं के दाँत, हड्डियाँ या राख आदि सँजोकर रखे रहते थे। इसके अतिरिक्त, इसमें कीमती पत्थर और सिक्के भी रखे जाते थे। स्तूप का निर्माण ईंट-गारा से होता था तथा इसके चारों ओर पत्थर या लकड़ी की चारदीवारी बनी होती थी। चारदीवारी से लगा मार्ग प्रदक्षिणा पथ कहलाता था, जिसमें भक्तगतण स्तूप के दाएँ से बाएँ ओर घूमकर मृत शरीरों के अवशेषों की पूजा करते हैं।

स्तंभ : अशोक के शासनकाल में अनेक स्तंभों का निर्माण हुआ। प्रत्येक स्तंभ को पत्थर की एक ही चट्टान से काटकर बनाया गया है। स्तंभ की चोटी वाला भाग शीर्ष कहलाता है, जो सुंदर जानवरों की उत्कीर्ण प्रतिमाओं से सजा है।

मठ : अशोक के शासनकाल में अनेक बौद्ध भिक्षुक बौद्ध धर्म के प्रचार के लिए विभिन्न स्थानों पर बने विशेष गुहों में रहा करते थे, जिन्हें मठ कहा जाता था। इन मठों को अनेक चट्टानों और खोखली गुफाओं को काटकर बनाया गया था। मठों और विहारों के समीप पूजा स्थलों को चैत्य कहा जाता था।

मंदिर : हिंदुओं के पूजा स्थलों को मंदिर या सिद्ध पीठ कहा जाता है। प्राचीनकाल में अनेक शासकों द्वारा अनेक देवी-देवताओं, विष्णु, शिव, ब्रह्मा, दुर्गा आदि के मंदिरों का निर्माण कराया गया। मंदिर के गर्भगृह में देवता या ईश्वर की मूर्ति स्थापित की जाती है, जो मंदिर का अति महत्त्वपूर्ण भाग कहलाता है।

चित्रकारी : चित्रकला का इतिहास पाषाण युग से ही विद्यमान है। अजंता की गुफाओं के भित्ति चित्रों में भगवान बुद्ध के जीवनवृत्त

से संबंधित घटनाओं को दर्शाया गया है। रंग योजना तथा रंग आज भी अपनी चमक को बनाए हुए हैं। उन दिनों रंगों को पौधों और खनिजों से बनाया जाता था। इन चित्रों के कलाकार आज तक अज्ञात हैं।

(ii) **प्राचीन भारत की साहित्यिक गतिविधियाँ :**प्राचीन भारत में अनेक लेखक तथा विद्वान हुए हैं। उन्होंने भारत को अपनी रचनाओं और कृतियों से साहित्य की दृष्टि से समृद्ध बनाया। उन्होंने संस्कृत और पालि भाषा में अनेक ग्रंथों की रचना की। वैदिक काल में वेद, महाभारत, गीता, ब्राह्मण ग्रंथ, उपनिषद्, पुराण आदि प्राचीन साहित्य का सृजन हुआ। कौटिल्य का 'अर्थशास्त्र' तथा मेगस्थनीज की 'इंडिका' मौर्यों के शासनकाल में लिखी गई। साहित्यिक उन्नति के कारण मौर्य शासनकाल को स्वर्ण काल कहा गया। इस समय की अधिकतर रचनाएँ संस्कृत में रची गई थीं। समुद्रगुप्त के दरबार में हरिषेण नामक कवि रहा करता था। चंद्रगुप्त द्वितीय के समय कालिदास, जिसे भारत का शैक्सपीयर कहा जाता है, उसके नवरत्नों में से एक था। उसने संस्कृत में अनेक महत्त्वपूर्ण एवं सारगर्भित ग्रंथों (नाटकों) की रचना की, जिनमें मेघदूत, कुमारसंभव, अभिज्ञानशाकुन्तलम्, ऋतुसंहार, मालविकाग्निमित्र आदि प्रमुख हैं। विष्णु गुप्त द्वारा रचित पंचतंत्र, शूद्रक का मृच्छकटिकम, संस्कृत व्याकरण पर पाणिनी द्वारा लिखी गई प्रसिद्ध पुस्तक अष्टध्यायी, विशाखादत्त की मुद्राराक्षस, अमरसिंह की अमरकोश आदि उस समय की प्रसिद्ध पुस्तकें हैं।

उपरोक्त के अतिरिक्त दंडी, सुबन्धु, भर्तृहरि, वात्स्यायन, कामन्द आदि ने भी अपनी साहित्यिक रचनाओं से गुप्त युग को समृद्ध किया।

हर्ष ने प्रियदर्शिका, रत्नावली और नागानंद नामक रचनाओं का सृजन किया। बाणभट्ट उसका दरबारी कवि था, जिसने हर्षचरित, चंडीशतक तथा कादम्बरी नामक ग्रंथों की रचना की। संगम साहित्य तोलकप्पियम (तमिल व्याकरण), जिसकी रचना तमिल

कवि तिरूवल्लुवर ने की, से निर्मित है। इसके अलावा उसने 'कुणाल' की भी रचना की थी।

प्राचीन भारत की वैज्ञानिक गतिविधियाँ : प्राचीनकाल में भारत के प्रसिद्ध वैज्ञानिकों में आर्यभट्ट तथा वराहमिहिर थे। आर्यभट्ट एक प्रसिद्ध गणितज्ञ और खगोलशास्त्री था, जिसने शून्य का आविष्कार किया तथा उसने सूर्य ग्रहण और चंद्र ग्रहण होने की व्याख्या भी दी। गुप्त वंश में चरक और धन्वन्तरि दो प्रसिद्ध वैद्य और चिकित्सक हुए हैं। उन्होंने अनेक रोगों का कारण और उनका निदान बताया। महरौली (दिल्ली) में चंद्रगुप्त द्वितीय द्वारा निर्मित लोहे की लाट बिना जंग लगे वर्षा और धूप में हजारों वर्षों से खड़ी हुई है, जो धातु विज्ञान का उत्कृष्ट उदाहरण हैं।

(iii) **गुप्त साम्राज्य में पुस्तकें :** प्राचीन भारत में अनेक लेखक तथा विद्वान हुए हैं। उन्होंने भारत को अपनी रचनाओं और कृतियों की दृष्टि से समृद्ध बनाया। उन्होंने संस्कृत और पालि भाषा में अनेक ग्रंथों की रचना की।

समुद्रगुप्त के दरबार में हरिषेण नामक कवि रहा करता था। चंद्रगुप्त द्वितीय के समय कालिदास, जिसे भारत का शेक्सपीयर कहा जाता है, उसके नवरत्नों में से एक था। उसने संस्कृत में अनेक महत्त्वपूर्ण एवं सारगर्भित ग्रंथों (नाटकों) की रचना की, जिनमें मेघदूत, कुमारसंभव, अभिज्ञानशाकुन्तलम्, ऋतुसंहार, मालविकाग्निमित्र आदि प्रमुख हैं।

विष्णु गुप्त द्वारा रचित पंचतंत्र, शूद्रक का मृच्छकटिकम, संस्कृत व्याकरण पर पाणिनी द्वारा लिखी गई प्रसिद्ध पुस्तक अष्टध्यायी, विशाखादत्त की मुद्राराक्षस, अमर सिंह की अमरकोश आदि उस समय की प्रसिद्ध पुस्तकें हैं।

उपरोक्त के अतिरिक्त दंडी सुबन्धु, भर्तृहरि वात्स्यायन, कामन्द, आदि ने भी अपनी साहित्यिक रचनाओं से गुप्त युग को समृद्ध किया है।

इकाई III : हमारा सामाजिक एवं राजनीतिक जीवन

1 विविधता के विषय में जानिए

रचनात्मक निर्धारण

1. सही विकल्प पर सही (✓) का निशान लगाइए :

(i) (d) 22 (ii) (d) पेगोडा (iii) (a) कश्मीरी

(iv) (c) केरल में (v) (d) ये सभी

2. रिक्त स्थानों की पूर्ति कीजिए :

(i) ठंड (ii) एकल (iii) धर्मों (iv) आय

3. सत्य या असत्य बताइए :

(i) सत्य (ii) सत्य (iii) असत्य (iv) सत्य

(v) सत्य (vi) सत्य

संकलित निर्धारण

1. एक पंक्ति में उत्तर :

(i) सजीवों और निर्जीवों के गुणों और अंतरों की श्रृंखला की मौजूदगी तथा उनकी गतिविधियों को विविधता कहते हैं।

(ii) भारत में 22 क्षेत्रीय भाषाएँ बोली जाती हैं।

(iii) बौद्धों का पूजास्थल पेगोडा कहलाता है।

(iv) राष्ट्रीय ध्वज।

2. चार पंक्तियों में उत्तर :

(i) **भारत में वेशभूषा के संदर्भ में विविधता :** गर्म क्षेत्रों के निवासी सूती वस्त्र पहनते हैं, जबकि पहाड़ों और ठंडे क्षेत्रों में निवास करने वालेल ोगऊ नीव स्त्रप हनतेह ैं।व ुछल ोगध ोती-कुर्तात ोव ुछ लोग कमीज-पैंट पहनते हैं। महिलाएँ साड़ी-ब्लाउज, कमीज-सलवार, कुर्ता-सलवार, सूट-सलवार, टॉप-जीन्स, स्कर्ट, कुर्ता-पायजामी आदि वस्त्र पहनती हैं। पश्मीना के शॉल जो बहुत

कीमती होते हैं, कश्मीर में तैयार किए जाते हैं। ये हमें ठंड से बचाते हैं। शीत ऋतु में कश्मीरी लोग फिरन नामक लंबी ऊनी शॉल पहनते हैं।

(ii) भारत में विभिन्न धर्मों के लोग निवास करते हैं। विभिन्न धर्मों को माननेव ालेल ोग ि वभिन्नत योहारोंक ोम नातेह ैं;ज ैसे-मुसलमान लोग ईद मनाते हैं तथा हिंदू लोग होली,दीपावली, रक्षा बंधन और दशहरा; जबकि ईसाई लोग क्रिसमस मनाते हैं। इसी प्रकार सिक्ख लोग गुरुपर्व और बैसाखी के त्योहार मनाते हैं। इसके अतिरिक्त, हमारे देश में लोग फसली त्योहारों को भी मनाते हैं; जैसे-पंजाबी लोहड़ी, असमी बिहू तथा केरलवासी ओणम मनाते हैं। इस प्रकार त्योहारों में भी विविधता दिखलाई पड़ती है।

(iii) **भू-आकृतियों के संदर्भ में भारत में विविधता :** जम्मू एवं कश्मीर, हिमाचल प्रदेश और उत्तराखंड के कुछ भागों को छोड़कर ये प्रदेश पूर्णतया पहाड़ों में से हैं। उच्च भागों में निवास करने वाले लोगों को ठंड का सामना करना पड़ता है। उसके विपरीत, राजस्थान और गुजरात के कुछ रेतीले हिस्सों में निवास करने वाले लोग गर्म जलवायु का सामना करते हैं। ये रेगिस्तानी राज्य हैं। जो लोग पठारी भूमि पर निवास करते हैं, उनका जीवन उपरोक्त दोनों के मुकाबले सुखद होता है।

3. आठ पंक्तियों में उत्तर :

(i) **भारतीय विविधता में वेशभूषा :** गर्म क्षेत्रों के निवासी सूती वस्त्र पहनते हैं, जबकि पहाड़ों और ठंडे क्षेत्रों में निवास करने वाले लोग ऊनी वस्त्र पहनते हैं। कुछ लोग धोती-कुर्ता तो कुछ लोग कमीज-पैंट पहनते हैं। महिलाएँ साड़ी-ब्लाउज, कमीज-सलवार, कुर्ता-सलवार, सूट-सलवार, टॉप-जीन्स, स्कर्ट, कुर्ता-पायजामी आदि वस्त्र पहनती हैं। पश्मीना के शॉल जो बहुत कीमती होते हैं, कश्मीर में तैयार किए जाते हैं। ये हमें ठंड से बचाते हैं। शीत ऋतु में

कश्मीरी लोग फिरन नामक लंबी ऊनी शॉल पहनते हैं।

भोजन : द क्षिणभ ारतव ेअ धिकांशल ोगम ांसाहारीह ैं,ज बकि इसके विपरीत, उत्तर भारत के लोग शाकाहारी हैं और अपने भोजन में गेहूँ, मक्का, दाल, हरी सब्जियों तथा दूध का सेवन पसंद करते हैं। दक्षिण भारतीय किसान चावल की खेती करते हैं तथा समुद्र तट और नदियों से मछलियाँ पकड़ते हैं। यह सब जलवायु परिवर्तन के कारण होता है।

परिवार : भारत में दो प्रकार के परिवार पाए जाते हैं। प्रथम प्रकार का परिवार एकल परिवार (न्यूक्लियर फैमिली) होता है, जिसमें माता-पिता तथा उनके बच्चे होते हैं। दूसरा, संयुक्त परिवार होता है, जिसमें माता-पिता, चाचा-चाची, उनके बच्चे, ताऊ-ताई व उनके बच्चे, दादा-दादी आदि सदस्य होते हैं। एकल परिवार सीमित तथा संयुक्त परिवार बड़ा होता है। एकल परिवार शहरों में तथा संयुक्त परिवार अधिकतर गाँवों में पाए जाते हैं।

(ii) भारत में विभिन्न जातियों, कुलों, वंशों, धर्मों के लोग निवास करते हैं, फिर भी सभी भारतीय कहलाते हैं। ये सभी लोग राष्ट्रीय एकता के प्रति वचनबद्ध हैं। प्राचीनकाल से ही सभी शासकों ने भारत की राजनीतिक एकता को अखंड रखने के लिए प्रयास किए हैं।

अपनी आर्थिक विविधताओं के होते हुए भी सभी भारतवासियों की वित्तीय समस्याएँ समान हैं। भारत को अंग्रेजी शासन से स्वतंत्रता दिलाने में हिंदुओं, सिक्खों, मुसलमानों, स्त्रियों, पुरुषों, छात्र-छात्राओं, धनी और निर्धनों ने एक साथ आंदोलनों में हिस्सा लिया।

एक धर्म के दुकानदार अन्य धर्मों के लोगों को उनकी जरूरतों की चीजें अपनी दुकानों में बिना किसी भेदभाव के बेचते हैं तथा ग्राहक उनसे बिना धर्म को बीच में लाए खरीदते हैं।

भारत में अनेक स्थान ऐसे हैं, जहाँ मंदिरों और मसजिदों की

उभयनिष्ठ दीवारें हैं। अलग-अलग धर्मों के राजमिस्त्री अलग-अलग धर्मों के पूजास्थलों का निर्माण करते चले आ रहे हैं। सभी भारतवासी पवित्र नदियों और तालाबों में स्नान करते हैं। एक धर्म के लोग दूसरे धर्म के लोगों को शादी-विवाह, जन्मदिन पार्टी, स्वागत समारोहों तथा उद्घाटन समारोहों में आमंत्रित करते हैं।

विभिन्न विविधताओं के होते हुए भी हमारी संस्कृति भारतीय संस्कृतिक हलातीह ैा।स भीभ ारतीयर ाष्ट्रीयत योहारों;ज ैसे–1 5 अगस्त (स्वतंत्रता दिवस), 26 जनवरी (गणतंत्र दिवस), गांधी जयंती आदि को बिना किसी भेदभाव के मनाते हैं।

हमारा तरंगा,र ाष्ट्रीयभ वजत थार ाष्ट्रीयग ानह मारीए कताअ ौर संस्कृति के प्रतीक चिह्न हैं और हम इनका सम्मान करते हैं। इस प्रकार हम कह सकते हैं कि भारत सामाजिक, राजनीतिक, धार्मिक और सांस्कृतिक रूप से एक है।

4. निम्नलिखित युग्मों में अंतर स्पष्ट कीजिए :

(i) एकल परिवार और संयुक्त परिवार :

क्र.सं.	एकल परिवार	संयुक्त परिवार
1.	एकल परिवार में माता-पिता तथा उनके बच्चे होते हैं।	संयुक्त परिवार में माता-पिता, चाचा-चाची, उनके बच्चे, ताऊ-ताई व उनके बच्चे, दादा-दादी आदि सदस्य होते हैं।
2.	एकल परिवार सीमित होते हैं।	संयुक्त परिवार बड़े होते हैं।
3.	एकल परिवार शहरों में पाए जाते हैं।	संयुक्त परिवार अधिकतर गाँवों में पाए जाते हैं।

(ii) क्षेत्रीय भाषा और राष्ट्रीय भाषा

क्र.सं.	क्षेत्रीय भाषा	राष्ट्रीय भाषा
1.	किसी क्षेत्र विशेष में बोली जाने वाली भाषा क्षेत्रीय भाषा कहलाती है।	किसी राष्ट्र की मातृभाषा राष्ट्रीय भाषा कहलाती है।
2.	भारत में 22 क्षेत्रीय भाषाएँ हैं।	भारत की राष्ट्रीय भाषा हिंदी है।

(iii) राष्ट्रीय त्योहार और धार्मिक त्योहार

क्र.सं.	राष्ट्रीय त्योहार	धार्मिक त्योहार
1.	संपूर्ण राष्ट्र में राष्ट्रीयता से संबंधित मनाए जाने वाले त्योहार राष्ट्रीय त्योहार कहलाते हैं।	किसी धर्म विशेष से संबंधित त्योहार धार्मिक त्योहार कहलाते हैं।
2.	भारत के मुख्य राष्ट्रीय त्योहार स्वतंत्रता दिवस, गणतंत्र दिवस, गांधी जयंती हैं।	भारत में मनाए जाने वाले प्रमुख धार्मिक त्योहार होली, दशहरा, ईद, क्रिसमस, दीवाली, रक्षाबंधन, गुरुपर्व आदि हैं।

(iv) एकता और अनेकता

एकता	अनेकता
अनेक विभिन्नताओं के होते हुए भी सभी मनुष्यों का एक साथ मिलकर रहना एकता कहलाता है।	अनेक विभिन्निताओं का होना; जैसे–विभिन्न धर्म, कुल, वंश, जाति आदि अनेकता कहलाता है।

5. निम्नलिखित के उचित कारण बताइए :

(i) क्योंकि हिमाचल प्रदेश एक पहाड़ी क्षेत्र है, जहाँ ठंड की शुरूआत नवंबर माह से ही हो जाती है, जबकि बिहार एक मैदानी क्षेत्र है, जहाँ नवंबर में भी थोड़ी गर्मी महसूस की जाती है।

(ii) दक्षिण भारत के लोग समुद्र तट व नदियों से मछली व अन्य समुद्री जीव पकड़ते हैं। इसी कारण दक्षिण भारत के लोग मुख्यत: मांसाहारी हैं।

(iii) पंजाबक ीप्रति० यक्तिअ ायभ ाारतम ेंस र्वाधिकह ोनेक ाक ारण पंजाब की उपजाऊ जमीन और बड़े पैमाने पर औद्योगीकरण है।

2 विविधता और भेदभाव

रचनात्मक निर्धारण

1. सही विकल्प पर सही (✓) का निशान लगाइए :

(i) (d) ये सभी (ii) विविधता (iii) (d) ये सभी

(iv) ((c) भारतीय संविधान की प्रारूप समिति के अध्यक्ष

(v) (a) 6 (vi) (b) 14

2. सत्य या असत्य बताइए :

(i) सत्य (ii) सत्य (iii) सत्य (iv) असत्य

3. रिक्त स्थानों की पूर्ति कीजिए :

(i) कम (ii) अंग्रेजी (iii) अपरिवर्तनीयता

(iv) निवासी (v) माहर (vi) क्षेत्र

संकलित निर्धारण

1. एक पंक्ति में उत्तर :

(i) दूसरे लोगों को अपने से कमतर आँकना भ्रांत धारणा कहलाती है।

(ii) किसी समूह के सभी लोगों को प्रतिरूप प्रदान करना अपरिवर्तनीयता कहलाती है।

(iii) जाति,व ंश,ध र्म,क्ष ेत्र,ि लंगअ ौर वत्तीय स्थितिव ेअ ाधारप र किए गए व्यवहार को भेदभाव कहते हैं।

(iv) नीची जाति के लोगों को दलित कहा जाता है।

(v) डॉ. भीमराव अंबेडकर।

(vi) छह मूल अधिकार।

2. चार पंक्तियों में उत्तर :

(i) दूसरे लोगों को अपने मुकाबले कम आँकना भ्रांत धारणा कहलाती है। धर्म, विश्वास, त्वचा का वर्ण, भोजन, भाषाएँ, वस्त्र तथा क्षेत्रीय निवास सभी भ्रांत धारणा के महत्त्वपूर्ण कारक हैं। इसका कारण यह है कि हम इन सबको लेकर दूसरों के विषय में नकारात्मक या सकारात्मक सोचते हैं।

(ii) जाति,व ंश,ध र्म,क्ष ेत्र,ि लंगअ ौर वत्तीय स्थितिव ेअ ाधारप र किए गए व्यवहार को भेदभाव कहते हैं।

भेदभाव का मुख्य स्रोत विविधता है। भेदभाव की उत्पत्ति का कारण लोगों का अपरिवर्तनीयता तथा भ्रांत धारणा के आधार पर व्यवहार करना है। हमारा समाज आज भी भेदभाव से ग्रस्त है। जाति, वर्ग, वित्तीय स्थिति और असमानता भेदभाव के महत्त्वपूर्ण कारक हैं।

(iii) हमारे देश में निर्धन और धनी सभी प्रकार के लोग निवास करते हैं। इसका कारण संपत्ति और जमीन का असमान बँटवारा है। यही असमानता कहलाती है। गरीबी असमानता का मुख्य कारक है। जिन व्यक्तियों के पास आय के ठोस एवं निरंतर स्रोत नहीं होते, वे गरीब हैं और वे अपनी मूल आवश्यकताओं रोटी, कपड़ा और मकान की पूर्ति करने में असमर्थ हैं और यही कारण है कि वे स्कूलों, रेस्टोरेंटों, कार्यालयों, अस्पतालों, पूजास्थलों और सार्वजनिक स्थलों पर

भेदभाव का सामना करते हैं।

3. आठ पंक्तियों में उत्तर :

(i) वे लोग, जो अपनी जीविका बढ़ईगिरी, पॉटरी, बुनाई, कृषि, मत्स्य पालन आदि से कमाते हैं; हमेशा कपड़े धोने वालों, बाल काटने वालों, सफाई करने वालों, पन्नी चुनने वालों, गली-गली सब्जियाँ बेचने वालों के मुकाबले ज्यादा अच्छे समझे जाते हैं। दूसरी ओर, उच्च व्यवसायी; जैसे—अध्यापक, डॉक्टर, इंजीनियर, वैज्ञानिक, ऑफिसर के मुकाबले उपरोक्त सभी व्यवसायी कम प्रतिष्ठित समझे जाते हैं। व्यापारी लोग इन सभी के मुकाबले ज्यादा प्रतिष्ठित माने जाते हैं। यही व्यावसायिक भेदभाव है।

(ii) हमारे देश में निर्धन और धनी सभी प्रकार के लोग निवास करते हैं। इसका कारण संपत्ति और जमीन का असमान बँटवारा है। यही असमानता कहलाती है। गरीबी असमानता का मुख्य कारक है। जिन व्यक्तियों के पास आय के ठोस एवं निरंतर स्रोत नहीं होते, वे गरीब हैं और वे अपनी मूल आवश्यकताओं रोटी, कपड़ा और मकान की पूर्ति करने में असमर्थ हैं और यही कारण है कि वे स्कूलों, रेस्टोरेंटों, कार्यालयों, अस्पतालों, पूजास्थलों और सार्वजनिक स्थलों पर भेदभाव का सामना करते हैं।

हम असमानता को मिटाने के लिए निम्नलिखित कदम उठा सकते हैं—

(1) जाति, लिंग, क्षेत्र तथा समुदाय के आधार पर किसी भी नागरिक के साथ असमानता का व्यवहार नहीं करेंगे।

(2) 14 वर्ष से कम आयु के बच्चों को कारखानों, खानों और खतरनाक स्थानों पर काम करने से रोका जाएगा।

(3) मूल अधिकारों की रक्षा के लिए न्यायालयों की मदद लेंगे।

(4) सार्वजनिक स्थलों पर की जाने वाली असमानता व भेदभाव को रोकेंगे।

3 हमारी सरकार

रचनात्मक निर्धारण

1. सही विकल्प पर सही (✓) का निशान लगाइए :

(i) (a) 3 (ii) (b) डॉ. आर.डब्लू. गिलक्रिस्ट

(iii) (d) सीले (iv) (c) जर्मन (v) (a) 1920 ई.

(vi) (a) संसदीय।

2. सत्य या असत्य बताइए :

(i) सत्य (ii) असत्य (iii) असत्य (iv) असत्य

(v) सत्य

3. निम्नलिखित को सुमेल कीजिए :

'अ'	'ब'
राजतंत्र	जापान
तानाशाह	अडोल्फ हिटलर
मताधिकार	वयस्क
कनाडा	प्रजातंत्र
प्रथम विश्वयुद्ध	1914 ई.
यू.के में महिलाओं का प्रथम बार मताधिकार प्रदान किया गया	1928 ई.

4. रिक्त स्थानों की पूर्ति कीजिए :

(i) सरकार (ii) तीन (iii) कानून (iv) चुनाव

(v) बाध्य (vi) अधिकार

संकलित निर्धारण

1. एक पंक्ति में उत्तर :

(i) सरकार एक संवैधानिक संस्था है, जो राष्ट्र का या राज्य का शासन चलाती है।

(ii) सरकार का कोई एक कार्य कानून निर्माण है।

(iii) सरकार के तीन स्तर होते हैं।

(iv) सरकार अनेक प्रकार की होती हैं; जैसे–प्रजातंत्र, अल्पतंत्र, राजतंत्र, संघात्मक, अध्यक्षात्मक, तानाशाही आदि।

(v) सन् 1920 में।

2. चार पंक्तियों में उत्तर :

(i) सरकार के अनेक रूप हैं–प्रजातंत्र, राजतंत्र, अल्पतंत्र, तानाशाही आदि।

प्रजातंत्र :प्रजातंत्र(लोकतंत्र)ज नताक ा,ज नताव ेनि लएत था जनता के द्वारा शासन है।

राजतंत्र: जब निर्णय लेने की सभी शक्तियाँ राजा या रानी में निहित होती हैं, तो सरकार को राजतंत्र कहा जाता है।

तानाशाही : जब सारी शक्तियाँ एक ही व्यक्ति के हाथों में निहित होती हैं तो सरकार का स्वरूप तानाशाही कहलाता है।

(ii) राज्य के कार्यों को संपन्न करने के लिए तथा आम लोगों की भलाई के लिए हमें सरकार की आवश्यकता पड़ती है। इसके अतिरिक्त, राज्य को महत्त्वपूर्ण निर्णय लेने में, जनता की परेशानियाँ कम करने, सड़कों, अस्पतालों, विद्यालयों, पुलों, बेरोजगारों को रोजगार सृजन के लिए, शांति, कानून और व्यवस्था बनाए रखने के लिए, जनता को चिकित्सा सुविधाएँ उपलब्ध कराने, प्राकृतिक आपदाओं के समय बचाव कार्य करने के लिए, गरीबी उन्मूलन के लिए आदि कार्यों के लिए हमें सरकार की आवश्यकता होती है।

(iii) प्रत्येक वयस्क को मत डालने के अधिकार से अभिप्राय है–सार्वभौमिक वयस्क मताधिकार। स्वतंत्रता प्राप्ति से पूर्व मत देने का अधिकार केवल उन लोगों को था, जिनके पास धन-संपत्ति और शिक्षा होती थी। निर्धनों और महिलाओं को मताधिकार प्राप्त

नहीं था। बहुत ही कम लोगों को मताधिकार के द्वारा सरकार बनाने का अवसर प्राप्त था। इस असंवैधानिक प्रक्रिया से गांधी जी और अनेक बुद्धिजीवियों को आघात लगा, और इसीलिए उन्होंने इस अनुचित प्रक्रिया का विरोध किया तथा सार्वभौमिक वयस्क मताधिकार की माँग की।

(iv) जब सारी शक्तियाँ एक ही व्यक्ति के हाथों में निहित होती हैं, तो सरकार का स्वरूप तानाशाह सरकार कहलाता है। तानाशाह किसी भी प्रश्न का उत्तर देने के लिए बाध्य नहीं होता है। वह अपने निर्णयों को बलपूर्वक लागू कराता है। उदाहरण के लिए, जर्मनी का शासक अडोल्फ हिटलर ऐसा ही तानाशाह था।

3. आठ पंक्तियों में उत्तर :

(i) प्रजातांत्रिक सरकार के संसदात्मक तथा अध्यक्षात्मक रूपों में अंतर

क्र.सं.	संसदात्मक सरकार	अध्यक्षात्मक सरकार
1.	सारी कार्यकारी शक्तियाँ संसद में निहित होती हैं।	शासन की मुख्य शक्ति राष्ट्रपति में निहित होती है।
2.	प्रधानमंत्री तथा मंत्रिपरिषद् के सभी सदस्य संसद सदस्य कहलाते हैं तथा ये मिलकर सरकार चलाते हैं।	इस प्रकार की सरकार में कार्यकारिणी तथा व्यवस्थापिका दोनों एक-दूसरे से बिलकुल पृथक् होती हैं। देश का राष्ट्रपति सरकार का मुखिया होता है।
3.	इस प्रकार की सरकार भारत, इंग्लैंड, कनाडा तथा ऑस्ट्रेलिया में पाई जाती हैं।	संयुक्त राज्य अमेरिका में इसी प्रकार की सरकार है।

(ii) **राजतंत्र:** जब निर्णय लेने की सभी शक्तियाँ राजा या रानी में निहित होती हैं तो सरकार को राजतंत्र कहा जाता है। राजा शासन के

मामलों में सलाहकारों की परामर्श ले सकता है, लेकिन अंतिम निर्णय उसी का होता है।

तानाशाही : जब सारी शक्तियाँ एक ही व्यक्ति के हाथों में निहित होती हैं, तो सरकार का स्वरूप तानाशाह सरकार कहलाता है। तानाशाह किसी भी प्रश्न का उत्तर देने के लिए बाध्य नहीं होता है। वह अपने निर्णयों को बलपूर्वक लागू कराता है। उदाहरण के लिए, जर्मनी का शासक अडोल्फ हिटलर ऐसा ही तानाशाह था।

प्रजातंत्र :प्ज़ातंत्र(लोकतंत्र)ज नताक ।,ज नताव र्ा लएत था जनता के द्वारा शासन है। प्रजातंत्र में सरकार का निर्माण चुनाव के द्वाराह ोताह ै।ज नताअ पनेच हेतेन ेताओंक ेास ार्वजनिकव यस्क मताधिकार के आधार पर वोट देती है।

4 प्रजातंत्रात्मक सरकार के प्रमुख तत्त्व

रचनात्मक निर्धारण

1. सही विकल्प पर सही (✓) का निशान लगाइए :

(i) (b) 5 वर्ष (ii) (c) यू.एस.ए. (iii) (d) ये सभी
(iv) (a) संविधान द्वारा

2. रिक्त स्थानों की पूर्ति कीजिए :

(i) प्रजातंत्र (ii) 5 (iii) सरकार
(iv) जुलूस (v) पुलिस

3. सत्य या असत्य बताइए :

(i) सत्य (ii) असत्य (iii) सत्य
(iv) असत्य (v) सत्य

4. (i) धरना देना (ii) नारेबाजी (iii) रैलियाँ निकालकर
(iv) हस्ताक्षर अभियान

संकलित निर्धारण

1. एक पंक्ति में उत्तर :

(i) **प्रजातंत्र :** प्रजातंत्र जनता का, जनता के लिए तथा जनता के द्वारा शासन है।

प्रजातंत्रस रकार: सरकार का निर्माण करने के लिए देश के मतदाता मतदान के द्वारा प्रतिनिधियों का चुनाव करते हैं। ये निर्वाचित सदस्य सरकार का गठन करते हैं। इस तरह निर्मित सरकार को प्रजातांत्रिक सरकार कहते हैं।

(ii) सहभागिता और स्वतंत्रता।

(iii) सरकार के कार्यों और नीतियों की आलोचना करने के लिए हड़ताल की जाती है।

2. चार पंक्तियों में उत्तर :

(i) सरकार का निर्माण करने के लिए देश के मतदाता मतदान के द्वारा प्रतिनिधियोंक ाच ुनावक रतेह ैं।य ेि नर्वाचितस दस्यस रकारक ा गठनक रतेह ैं।इ सत रहि नर्मितस रकारक ोप जातांत्रिकस रकार कहते हैं।

प्रजातांत्रिक सरकार जनता की सरकार है। सहभागिता और स्वतंत्रता प्रजातांत्रिक सरकार के दो महत्त्वपूर्ण कारक हैं।

(ii) हमारे देश में सरकार 5 वर्ष तक कार्य करती है। इस प्रकार लोग प्रजातांत्रिक शासन में निर्वाचन में भाग लेते हैं और इस प्रक्रिया को सहभागिता कहते हैं। मतदान के अतिरिक्त लोग समाचार-पत्रों, रैलियाँ निकालकर, हड़ताल तथा हस्ताक्षर अभियानों के द्वारा सरकार के कार्यों और नीतियों की आलोचना करके सरकार की प्रक्रिया में सहभागिता करते हैं। सामाजिक आंदोलन भी लोगों की सहभागिता के साधन हैं।

(iii) सरकार के गलत कार्यों का विरोध समाचार-पत्रों, रैलियाँ निकालकर, हड़ताल, मीडिया तथा हस्ताक्षर अभियानों के द्वारा

करेंगे। सामाजिक आंदोलनों के द्वारा भी सरकार के गलत कार्यों का विरोध किया जा सकता है।

3. आठ पंक्तियों में उत्तर :

(i) धार्मिक जुलूस, शोभायात्राएँ और समारोहों का आयोजन विवादों के स्रोत हो सकते हैं। कभी-कभी किसी धर्म विशेष की शोभा यात्रा किसी अन्य धर्म को मानने वाले लोगों की गली से गुजरती है, जिससे अनायास ही तनाव या विवाद बढ़ जाता है। जुलूस या शोभा यात्रा पर लोग पत्थर फेंक सकते हैं या हिंसा भड़का सकते हैं। ऐसे में पुलिस शांति व्यवस्था कायम करने में अहम भूमिका निभाती है। जब किसी नदी का जल दो या तीन राज्यों से होकर बहता है तो जल का बँटवारा विवाद का कारण बनता है। उदाहरण के लिए- दक्षिण भारत में कावेरी नदी कर्नाटक और तमिलनाडु राज्यों से होकर बहती है और जल का बँटवारा इन राज्यों के मध्य विवाद का कारण बना, जिसे केंद्र सरकार ने निपटाया।

(ii) भारत में अनेक जातियों, धर्मों, वर्गों, क्षेत्रों और वित्तीय विभिन्नताओं के लोग निवास करते हैं। असमानता और भेदभाव का आधार भी उपरोक्त कारक हैं और ये कारक ही विवादों की जड़ हैं। उदाहरण के लिए, व्यापारी वर्ग श्रमिकों से अक्सर दुर्व्यवहार करते हैं तथा उन्हें उपेक्षा की दृष्टि से देखते हैं। कभी-कभी लोग उग्र हो सकते हैं और इसीलिए वे अपने मध्य विवादों को हल करने की कोशिश करते हैं। इस मामले में सरकार भी विवादों को सुलझाने में प्रभावी कदम उठाती है। इसके साथ-साथ सरकार की यह नैतिक जिम्मेदारी भी है। भारतीय संविधान में दिए गए नियम-कानून सरकार और जनता को इन विवादों को हल करने में हर संभव मदद करते हैं।

4. ऐसा क्यों है?

(i) यदि सरकार अपने द्वारा किए गए वायदों को पूरा नहीं कर पाती या

शासन चलाने में अक्षम सिद्ध होती है तो आगामी चुनाव में प्रजा वर्तमान सरकार को बदल देती है।

(ii) सरकारी नीतियों की आलोचना करके जनता गलत कार्यों के प्रति सरकार को आगाह करती है तथा इसे सुधारने का अवसर प्रदान करती है।

(iii) भारतीय संविधान में देश के नागरिकों के लिए समानता और न्याय का प्रावधान है। अत: बिना समानता के न्याय नहीं मिल सकता।

5 ग्रामीण भारत में स्थानीय स्वशासन

रचनात्मक निर्धारण

1. सही विकल्प पर सही (✓) का निशान लगाइए :

(i) (d) 3 (ii) (d) ये सभी (iii) (a) 5 वर्ष

(iv) (c) 250 रुपए (v) (c) ब्लॉक प्रमुख

(vi) (c) जिला विद्यालय निरीक्षक (vii) (a) 2005

2. निम्नलिखित को सुमेल कीजिए :

'अ'	'ब'
सरपंच	ग्राम पंचायत का मुखिया
बी.डी.ओ.	ब्लॉक समिति में सरकारी प्रतिनिधि
सचिव	ग्राम पंचायत में सरकारी प्रतिनिधि
प्रमुख	ब्लॉक समिति का प्रधान
अध्यक्ष	जिला परिषद्
पटवारी	भूमि का लेखा-जोखा रखता है

3. रिक्त स्थानों की पूर्ति कीजिए :

(i) नींव (ii) मीटिंग (iv) 500

(v) 10 लाख

संकलित निर्धारण

1. एक पंक्ति में उत्तर :

(i) अपनी समस्याओं पर विचार करने के लिए तथा उनका समाधान खोजने के लिए एक स्थान के लोग एक साथ इकट्ठा होते हैं और मिलजुलकर निर्णय लेते हैं। इसे स्थानीय स्वशासन कहते हैं।

(ii) गाँव का प्रत्येक वयस्क व्यक्ति ग्राम सभा का सदस्य बन सकता है।

(iii) पंचायत सचिव।

(iv) खंड विकास अधिकारी।

(v) जिला परिषद् का कार्यकाल 5 वर्ष है।

(vi) खंड विकास अधिकारी।

(vii) महापौर (मेयर)।

(viii) जिलाधीश अथवा डिप्टी कमिश्नर अथवा कलक्टर।

2. चार पंक्तियों में उत्तर :

(i) गाँव का प्रत्येक वयस्क ग्राम सभा का सदस्य होता है। ग्राम सभा के सदस्य पंचों और सरपंचों का चुनाव करते हैं। परंतु गाँव की जनसंख्या 1000 से कम नहीं होनी चाहिए। यह 5 वर्ष तक कार्य करती है।

(ii) **ग्राम पंचायत के कार्य :**

(1) सार्वजनिक मार्गों, सड़कों का निर्माण, मरम्मत तथा रख-रखाव।

(2) स्ट्रीट लाइट, सफाई, अस्पताल, जलापूर्ति, जल निकासी, तालाबों का निर्माण, प्राथमिक शिक्षा, मेलों तथा पैठ बाजार आदि की व्यवस्था करना।

(3) जन्म तथा मृत्यु का ब्यौरा रखना।

(4) सहकारी खेती तथा कृषि के विकास के लिए प्रयास करना।

(5) ग्राम सभा की संपत्ति; जैसे-तालाब, नाले, नलों, पंचायत

भवन, बीज गोदाम, सहकारी समिति आदि की देखभाल एवं रख-रखाव करना।

(iii) **ब्लॉक समिति के कार्य**

(1) ब्लॉक में स्थित सभी ग्राम सभाओं के द्वारा किए गए कार्यों का पर्यवेक्षण ब्लॉक समिति करती है।

(2) सरकार के द्वारा संचालित ग्रामीण विकास योजनाओं और कार्यक्रमों को लागू करना भी ब्लॉक समिति के कार्यों में सम्मिलित है। उदाहरण के लिए, आँगनवाड़ी, प्रौढ़ शिक्षा केंद्रों की स्थापना, शोधित बीजों का वितरण, कृषि के औजार, रासायनिक खाद आदि को किसानों को उपलब्ध कराना आदि ऐसे ही कार्य हैं।

(3) इनके अतिरिक्त ब्लॉक स्तर पर कुटीर एवं लघु उद्योगों की स्थापना, मुर्गी पालन, सूअर पालन, रेशम उत्पादन, मत्स्य पालन तथा शिल्प केंद्रों की स्थापना कराना भी ब्लॉक समिति के ही कार्य हैं।

(iv) **नगर निगम की आय के स्रोत :**

(1) यह गृहकर, दुकानों तथा कारखानों तथा अपने क्षेत्र की अपनी सम्पत्तियों पर टैक्स वसूलता है।

(2) यह बिजली व पानी की पूर्ति पर बिल की राशि वसूलता है।

(3) यह सड़कों और पुलों से टोल टैक्स वसूलता है।

(4) यह नगर में बाहर से आने वाले सामान पर चुंगी वसूलता है।

(5) यह मेलों, बाजारों, प्रदर्शनियों, सर्कस, व्यापार मेलों से कर इकट्ठा करता है।

(6) यह राज्य तथा केंद्र सरकारों से अनुदान राशि भी प्राप्त करता है।

(v) **ग्राम पंचायत की आय के स्रोत :**

(1) यह घरों, बाजारों, मेलों आदि पर टैक्स (कर) वसूल करती है।

(2) यह सामुदायिक कार्यों के लिए दान प्राप्त करती है।

(3) यह राज्य सरकार से आर्थिक सहायता प्राप्त करती है।

(4) यह कमीशन एजेंटों, दलालों, व्यापारियों तथा लाइसेंसधारकों से फीस वसूल करती है।

(vi) जिन नगरों की जनसंख्या 10 लाख से अधिक है, वहाँ का प्रशासन नगर निगम के द्वारा संचालित होता है। प्रत्येक नगर वार्डों में बँटा होता है तथा कई वार्डों के निवासी मतदान द्वारा पार्षदों (सभासदों) का चुनाव करते हैं। वार्डों के मतदाता ही नगर निगम के अध्यक्ष का चुनाव करते हैं। नगर निगम के अध्यक्ष को महापौर (मेयर) कहते हैं। नगर निगम के कुछ सदस्यों को राज्य सरकार मनोनीत करती है। इनके अतिरिक्त संबंधित चुनाव क्षेत्रों के विधायक और सांसद भी नगर निगम के सदस्य होते हैं। प्रत्येक नगर निगम में राज्य सरकार एक निगमायुक्त या मुख्य नगर निगम अधिकारी की नियुक्ति करती है।

3. आठ पंक्तियों में उत्तर :

(i) **पंचायती राज व्यवस्था :** पंचायतों द्वारा स्थानीय प्रशासन की व्यवस्था, पंचायती राज व्यवस्था कहलाती है। पंचायती राज व्यवस्था के तीन स्तर हैं-(a) गाँव स्तर पर पंचायत, (b) खंड (ब्लॉक) स्तर पर पंचायत, (c) जिला स्तर पर पंचायत।

(अ) ग्राम पंचायत : इसके अंतर्गत ग्राम सभा, ग्राम पंचायत और न्याय पंचायतों की व्यवस्था है।

ग्राम सभा : गाँव का प्रत्येक वयस्क व्यक्ति ग्राम सभा का सदस्य होता है। यह 5 वर्ष तक कार्य करती है।

ग्राम पंचायत : ग्राम पंचायत का मुखिया ग्राम का प्रधान होता है, जिसका चुनाव ग्राम सभा के सदस्य मतदान के द्वारा करते हैं।

न्याय पंचायत : इसे गाँव की अदालत कहते हैं। इसके मुखिया को सरपंच तथा सदस्यों को पंच कहते हैं। ग्राम सभा इनका चुनाव

करती है।

(ब) ब्लॉक समिति : खंड (ब्लॉक) स्तर पर स्थानीय स्वशासित संस्थाएँ ब्लॉक समिति या पंचायत समिति कहलाती हैं। यह स्थानीय स्वशासन का मध्य स्तर है। एक ब्लॉक समिति में कई ग्राम सभा और ग्राम पंचायतों को सम्मिलित किया जाता है। ब्लॉक समिति का कार्यकाल 5 वर्ष का होता है। खंड के प्रशासनिक अधिकारी को खंड विकास अधिकारी कहते हैं।

(स) जिला परिषद : यह पंचायती राज व्यवस्था का तीसरा एवं महत्त्वपूर्ण स्तर है। जिले की सारी पंचायत समितियाँ जिला परिषद में सम्मिलित होती हैं। इसीलिए यह स्थानीय स्वशासन का सर्वोच्च स्तर है। इसका कार्यकाल 5 वर्ष है।

(ii) **जिला परिषद के कार्य :**

(1)प ंचायतस मितियोंअ ौरि जलेव ेक ार्योंक ास र्वेक्षणक रना तथा यह पंचायत समिति की योजनाओं की समन्वयकर्ता तथा संघटन कर्ता भी है।

(2) यह राज्य सरकार से मिली धनराशि को जिले और पंचायत समितियों को उपलब्ध कराती है।

(3) जिला परिषद पंचायत समितियों के वार्षिक बजट का भी अनुमोदन करती है।

आय के साधन : इसकी आय का मुख्य स्रोत सरकारी सहायता होती है।

(1) यह ट्रस्टों पर कर लगाती है तथा अनुदान प्राप्त करती है।

(2) यह राज्य एवं केंद्र सरकारों से वित्तीय सहायता प्राप्त करती है।

(iii) **नगर निगम के कार्य :**

(1) शहर में शांति बनाए रखने तथा नगर के महत्त्वपूर्ण मुद्दों पर चर्चा और बहस करने के लिए नगर निगम की बैठकों की अध्यक्षता

महापौर करता है।

(2) कूड़े को इकट्ठा करने और उसका निस्तरण करने के लिए सफाई की व्यवस्था करना।

(3) नगर में जन्म और मृत्यु का लेखा-जोखा रखना तथा जन्म और मृत्यु प्रमाण-पत्र जारी करना।

(4) श्मशान भूमियों, कब्रिस्तानों, तथा विद्युत शमन गृहों का रख-रखाव।

(5) जलापूर्ति, विद्युत पूर्ति, खाद्यान्न पूर्ति, पुस्तकालय, अस्पताल, डिस्पेंसरी, शिशु कल्याण केंद्रों की स्थापना, अनाथालयों, सार्वजनिक पार्कों, चिड़ियाघरों, सार्वजनिक उद्यानों, रैनबसेरो, प्राथमिक विद्यालयों आदि की स्थापना।

(6) यह पुलों, सड़कों, प्रकाश लैंपों (स्ट्रीट लाइट) आदि की मरम्मत कराता है।

(7) सार्वजनिक शौचालयों, मूत्रालयों, प्रसाधन स्थानों, बाजारों, पुलों, सड़कों आदि का निर्माण कराता है।

(8) यह अग्निशमन सेवा, अवैधानिक व्यापार पर रोक तथा अनिवार्य शिक्षा का प्रबंध करता है।

(iv) जिले का सर्वोच्च अधिकारी जिलाधीश होता है। उसे डिप्टी कमिश्नर या कलक्टर भी कहते हैं। वह आई.ए.एस. ऑफिसर होता है। वह अपने अधीनस्थ अधिकारियों; जैसे-तहसीलदार, नायब तहसीलदार, जो भूमि और राजस्व का लेखा-जोखा रखते हैं, की सहायता से राजस्व इकट्ठा करता है। प्रत्येक जिला उपखंडों, तहसीलों और परगनों में बँटा होता है। पटवारी या लेखपाल तहसील के राजस्व अधिकारियों को भू-राजस्व इकट्ठा करने में सहायता प्रदान करता है। वह अपने क्षेत्र के गाँवों की भूमि का लेखा-जोखा रखता है। उपखंड का प्रधान एस.डी.एम. या डिप्टी कलक्टर होता है, जो अपने मंडल का प्रशासन देखता है।

4. निम्नलिखित में अंतर स्पष्ट कीजिए :

(i) ग्राम सभा और ग्राम पंचायत

ग्राम सभा	ग्राम पंचायत
गाँव का प्रत्येक वयस्क व्यक्ति ग्राम सभा का सदस्य होता है। ग्राम सभा के सदस्य पंचों और सरपंच का चुनाव करते हैं।	ग्राम पंचायत का मुखिया ग्राम प्रधान होता है, जिसका चुनाव ग्राम सभा के सदस्य मतदान के द्वारा करते हैं।

(ii) ग्राम पंचायत और न्याय पंचायत

क्र.सं.	ग्राम पंचायत	न्याय पंचायत
1.	ग्राम पंचायत का मुखिया ग्राम का प्रधान होता है।	न्याय पंचायत के मुखिया को सरपंच तथा सदस्यों को पंच कहते हैं।
2.	ग्राम पंचायत का मुखिया प्रत्येक ग्राम सभा की मीटिंग बुलाता है।	यह ग्रामीणों के मुकदमों की सुनवाई करती है तथा अपना फैसला सुनाती है।

(iii) जिला परिषद और न्याय पंचायत

क्र.सं.	जिला परिषद	न्याय पंचायत
1.	यह पंचायती राजव्यवस्था का तीसरा एवं महत्त्वपूर्ण स्तर है।	ग्राम पंचायत के अंतर्गत इसकी व्यवस्था होती है।
2.	जिले की सारी पंचायत समितियाँ जिला परिषद में सम्मिलित होती हैं।	इसे गाँव की अदालत भी कहते हैं।

6 ग्रामीण और शहरी भारत में जीविकोपार्जन के साधन

रचनात्मक निर्धारण

1. सही विकल्प पर सही (✓) का निशान लगाइए :

(i) (a) कृषि कार्यों में (ii) (c) कुटीर उद्योग

(iii) (a) सार्वजनिक उद्योग (iv) (a) मत्स्य पालन से

2. रिक्त स्थानों की पूर्ति कीजिए :

(i) पाए जाते (ii) 70 (iii) मांस और चमड़ा

(iv) किसानों की सहायता

3. निम्नलिखित को सुमेल कीजिए :

'अ'	'ब'
मधुमक्खी	कुटीर उद्योग
भारत संचार निगम लिमिटेड	सार्वजनिक क्षेत्र
टाटा स्टील लिमिटेड	निजी क्षेत्र
पशुपालन	पशुओं का पालन
दूधिया	स्वरोजगार

4. सत्य या असत्य बताइए :

(i) सत्य (ii) सत्य (iii) सत्य

(iv) सत्य (v) असत्य

संकलित निर्धारण

1. एक पंक्ति में उत्तर :

(i) आजीविका से तात्पर्य रोजी-रोटी से है।

(ii) ग्रामीण भारत में आजीविका के साधन कृषि, पशुपालन, शिल्पकारी तथा कुटीर उद्योग-धंधे हैं।

(iii) शहरी भारत में आजीविका के साधन सरकारी नौकरियाँ, व्यापार, ट्रेडिंग, शिल्पकारी तथा यातायात आदि चलाना है।

(iv) प्रवासन वह प्रक्रिया है, जिसमें लोग नौकरी या व्यवसाय की तलाश में एक स्थान से दूसरे स्थान पर जाते हैं।

(v) भारतीय रेलवे, भारत हैवी इलैक्ट्रिकल्स लिमिटेड, बी.एस.एन.एल.।

2. चार पंक्तियों में उत्तर :

(i) अनाज, सब्जियाँ, चारे की फसलें तथा अन्य विभिन्न प्रकार की फसलें आदि को किसानों द्वारा बड़े-बड़े खेतों पर जोता जाता है व इनकी खेती की जाती है, जिसे कृषि कहते हैं।

(ii) शहरों में आजीविका कमाने के लिए किए जाने वाले काम-धंधे, व्यवसाय, नौकरी आदि शहरी रोजगार कहलाते हैं। कुछ शहरी रोजगार निम्नलिखित हैं—

सार्वजनिक क्षेत्र : एम.टी.एन.एल., बी.एस.एन.एल., गेल, भारतीय रेलवे आदि।

निजी क्षेत्र : भारत में अनेक निजी उद्योग, कारखाने, कंपनियाँ, फर्म विभिन्न प्रकार के सामानों का निर्माण करते हैं, जिनमें कई करोड़ लोगों को रोजगार मिला है।

सरकारी सेवाएँ : सरकारी नौकरियों; जैसे—अध्यापक, इंजीनियर, चिकित्सक, नर्स, क्लर्क, इंस्पेक्टर, बैंक मैनेजर आदि।

स्वरोजगार : इसके अंतर्गत व्यापार, ट्रेडिंग, रिक्शा, ताँगा, ऑटो चलाना, दूधिया, समाचार पत्र बेचना, मजदूरी करना आदि कार्य आते हैं।

(iii) गाँव में आजीविका कमाने के लिए किए जाने वाले काम-धंधे; जैसे—कृषि, पशुपालन, शिल्पकारी, कुटीर उद्योग-धंधे आदि ग्रामीण रोजगार हैं।

(iv) अपने स्वयं के कार्यों से आजीविका कमाने वाले लोग स्वरोजगार की श्रेणी में आते हैं। वे विभिन्न प्रकार के व्यापार और ट्रेडिंग में

लगे हुए हैं। इस प्रकार के लोग रेस्टोरेंट, ढाबे, दुकानें, छोटी-छोटी वस्तुएँ बनाने आदि के कार्यों में लगे हुए हैं। बहुत-से शिल्पकार अपने घरों में या दुकान पर दैनिक उपयोग की अनेक चीजों का निर्माण करते हैं। रिक्शा, ताँगा, ऑटो चलाने वाले, फेरी वाले, दूधिया, समाचार-पत्र बेचने वाले, राजमिस्त्री, मजदूर, दूसरों की सेवा करके अपनी रोजी-रोटी कमाते हैं।

(v) जब लोग रोजगार की तलाश में एक स्थान से दूसरे स्थान पर जाते हैं तो यह प्रक्रिया प्रवासन कहलाती है। उदाहरण के लिए, गाँव में निवास करने वाले राजमिस्त्री को गाँव में लगातार मकान निर्माण का काम नहीं मिलता है। इसलिए उसे काम की तलाश में शहरों की ओर उन्मुख होना पड़ता है। इससे तात्पर्य है कि वह गाँव से शहर की ओर प्रवास करता है, वह शहर में धन कमाता है तो गाँव में निवास करने वाले अपने परिवार को पैसा भेजता रहता है। प्रवास करने वाले व्यक्तियों को प्रवासी कहते हैं।

3. आठ पंक्तियों में उत्तर :

(i) **ग्रामीण भारत में रोजगार के साधन :**

कृषि : भारत की 70 प्रतिशत से भी ज्यादा जनसंख्या कृषि कार्य में लगी हुई है। कृषि भारत का मुख्य तथा महत्त्वपूर्ण व्यवसाय है। भारत में बड़े किसान, मझले किसान, लघु किसान तथा सीमित जोत वाले किसान हैं। किसान अनाज, सब्जियाँ और चारे की फसलों की खेती करते हैं।

पशुपालन : लगभग भारत में हर राज्य में लोग गाय, भैंस, बकरियाँ दूध के लिए तथा भेड़, ऊँट, याक, खरगोश ऊन प्राप्त करने के लिए पालते हैं। उत्तर भारत में मैदानी भागों और पहाड़ी भागों में दुग्ध व्यवसाय एक प्रमुख व्यवसाय है।

कुछ लोग अपनी जीविका पशुओं की पीठ पर या पशु गाड़ी आदि से खींचकर सामान को इधर-उधर पहुँचाते हैं। कुछ व्यक्ति अपनी

रोजी-रोटी जानवरों से प्राप्त अंडे, मांस और चमड़ा बेचकर कमाते हैं।

मछली पकड़ना : नदियों, समुद्रों, सागरों और झीलों के किनारे या तालाबों, नहरों आदि के पास निवास करने वाले लोग मछली पकड़कर, उसे बेचकर अपनी रोजी-रोटी कमाते हैं।

वनोत्पादों को इकट्ठा करना : वनों में या वनों के पास निवास करने वाली जातियाँ वनोत्पादों; जैसे–शहद, गोंद, लाख, फूल, पत्ते, जड़ी-बूटियाँ, इमारती लकड़ी तथा जलाऊ लकड़ी आदि को इकट्ठा करके बाजार में बेचकर अपनी आजीविका चलाते हैं।

क्राफ्ट (शिल्प) तथा कुटीर उद्योग : गाँवों में कुछ लोग किसानों की सहायता के लिए कार्य करते हैं। वे शिल्पकार, बढ़ई, लुहार, कुम्हार, मोची, दर्जी, सुनार, नाई, बुनकर आदि हैं।

कुटीर उद्योगों; जैसे–टोकरी बनाना, गुड़ बनाना, ताड़ी बनाना, खांडसारी उद्योग, खड्डी पर कपड़ा बुनना आदि से ग्रामीण अपनी आजीविका चलाते हैं।

(ii) **शहरी भारत में रोजगार के साधन :**

सार्वजनिक क्षेत्र : भारतीय रेलवे, एम.टी.एन.एल., बी.एस.एन.एल., भारत हैवी इलैक्ट्रिकल्स लिमिटेड, भारत इलैक्ट्रोनिक्स लिमिटेड, भारत पेट्रोलियम तेल एवं प्राकृतिक गैस लिमिटेड, गेल, आदि बहुत-से लोगों को रोजगार उपलब्ध कराते हैं।

निजी क्षेत्र : भारतमें अनेक निजी उद्योग, कारखाने, कंपनियाँ, फर्म विभिन्न प्रकार के सामानों का निर्माण करते हैं, जिनमें कई करोड़ लोगों को रोजगार मिला है।

सरकारी सेवाएँ : राज्य सरकारें तथा केंद्रीय सरकार देश में विभिन्न विभागों में लोगों को नौकरियाँ प्रदान करती हैं। अध्यापक, इंजीनियर, चिकित्सक, नर्स, क्लर्क, ड्राइवर, सिपाही, पॉयलट, आई.ए.एस., आई.एफ. एस., बैंक मैनेजर, डाकघरों, रेलवे आदि में

विभिन्न पदों पर आसीन कर्मचारी सरकारी कर्मचारियों की श्रेणी में आते हैं।

स्वरोजगार : अपने स्वयं के कार्यों से आजीविका कमाने वाले लोग स्वरोजगार की श्रेणी में आते हैं। वे विभिन्न प्रकार के व्यापार और ट्रेडिंग में लगे हुए हैं। इस प्रकार के लोग रेस्टोरेंट, ढाबे, दुकानें, छोटी-छोटी वस्तुएँ बनाने आदि के कार्यों में लगे हुए हैं। रिक्शा, ताँगा चलाने वाले, फेरीवाले, दूधिया, समाचार-पत्र बेचने वाले, राजमिस्त्री, मजदूर, दूसरों की सेवा करके अपनी रोजी-रोटी कमाते हैं।

4. निम्नलिखित का उचित कारण दीजिए :

(i) क्योंकि ग्रामीण क्षेत्रों में खेती के लिए समतल व उपजाऊ भूमि की भरमार है तथा यह भारत का मुख्य तथा महत्त्वपूर्ण व्यवसाय है।

(ii) क्योंकि भारत के उत्तरी मैदानों के निवासी अधिकतर गाय, भैंस तथा बकरियाँ पालते हैं।

(iii) क्योंकि जलराशियों के निकट निवास करने वाले लोग मछली खाना पसंद करते हैं। अत: यहाँ के निवासी मत्स्य पालन करके अपनी जीविका चलाते हैं।

(iv) काम की तलाश में ग्रामीण शहरों की ओर पलायान करते हैं।

आदर्श प्रश्न-पत्र-I

रचनात्मक निर्धारण

1. सही विकल्प पर सही (✓) का निशान लगाइए :

(i) (a) 8 (ii) (a) पैमाना (iii) (c) मध्य प्रदेश में

(iv) (a) लघु आकार के त्रिकोणीय औजार

(iv) (a) नवपाषाण युग (vi) (c) केरल में

(vii) (a) 6

2. निम्नलिखित को सही मिलान कीजिए :

'अ'	'ब'
सबसे बड़ा ग्रह	बृहस्पति
हेरोडेट्स	इतिहास का जनक
भूमध्य रेखा	0° अक्षांश
कांस्य पाषाण युग	ताम्रयुग
ताँबा	राजस्थान तथा ओमान

3. खाली स्थान भरिए :

(i) अक्ष (ii) चित्रांकन (iii) एकल

(iv) कपियों (v) धर्मनिरपेक्ष देश

4. सत्य या असत्य बताइए :

(i) सत्य (ii) सत्य (iii) असत्य

(iv) सत्य (v) असत्य

संकलित निर्धारण

1. एक पंक्ति में उत्तर :

(i) सबसे छोटा ग्रह बुध है।

(ii) हेरोडोटस को इतिहास का जनक कहा जाता है।

(iii) भारत में 22 क्षेत्रीय भाषाएँ बोली जाती हैं।

(iv) डॉ. भीमराव अंबेडकर।

(v) मानचित्रप रि कन्हींद ोि बंदुओंव ेब ीचक ीद ूरीअ ैरप ृथ्वीव े धरातल पर उन्हीं दो बिंदुओं के बीच की वास्तविक दूरी का अनुपात पैमाना कहलाता है।

2. 5 पंक्तियों में उत्तर :

(i) पृथ्वी के उपग्रह का नाम चंद्रमा है। चंद्रमा पृथ्वी के काफी समीप है, इसलिए हम इसे स्पष्ट रूप से देख सकते हैं। चंद्रमा पृथ्वी का पूरा एक चक्कर लगाने में लगभग 271/3 दिन का समय लेता है। चंद्रमा पर कोई हवा और पानी नहीं है, इसलिए वहाँ कोई वातावरण भी नहीं है। इसका धरातल चट्टानों के टुकड़ों तथा धूल से आच्छादित है।

(ii) भारत में विभिन्न धर्मों के लोग निवास करते हैं। विभिन्न धर्मों को माननेव ालेल ोगि वभिन्नत योहारोंक ेम नातेह ैं;ज ैसे–मुसलमान लोग ईद मनाते हैं तथा हिंदू लोग होली,दीपावली, रक्षा बंधन और दशहरा; जबकि ईसाई लोग क्रिसमस मनाते हैं। इसी प्रकार सिक्ख लोग गुरुपर्व और बैसाखी के त्योहार मनाते हैं। इसके अतिरिक्त, हमारे देश में लोग फसली त्योहारों को भी मनाते हैं; जैसे–पंजाबी लोहड़ी, असमी बिहू तथा केरलवासी ओणम मनाते हैं। इस प्रकार त्योहारों में भी विविधता दिखलाई पड़ती है।

(iii) राज्य के कार्यों को संपन्न करने के लिए तथा आम लोगों की भलाई के लिए हमें सरकार की आवश्यकता पड़ती है। इसके अतिरिक्त, राज्य को महत्त्वपूर्ण निर्णय लेने में, जनता की परेशानियाँ कम करने, सड़कों, अस्पतालों, विद्यालयों, पुलों, बेरोजगारों को रोजगार सृजन के लिए, शांति, कानून और व्यवस्था बनाए रखने के लिए, जनता को चिकित्सा सुविधाएँ उपलब्ध कराने, प्राकृतिक आपदाओं के समय बचाव कार्य करने के लिए, गरीबी उन्मूलन के लिए आदि कार्यों के लिए हमें सरकार की आवश्यकता होती है।

(iv) उत्तरी ध्रुव और दक्षिणी ध्रुव के मध्य सभी क्षैतिज रेखाएँ अक्षांशीय

रेखाएँ हैं तथा ये सभी भूमध्य रेखा के समानान्तर हैं। इसीलिए इन्हें अक्षांशीय रेखाएँ कहते हैं। अक्षांशीय रेखाएँ दो प्रकार की होती हैं–प्रथम उत्तरी अक्षांश रेखाएँ; दूसरी, दक्षिणी अक्षांश रेखाएँ।

3. 10 या 12 पंक्तियों में उत्तर :

(i) **सिंधु घाटी के समय सामाजिक दशा :** व्यवसाय के आधार पर सिंधुघ ाटीस भ्यताव ेल ोर्ग नम्नलिखितच ारव र्गोंम ें वभाजित थे–

(1) विद्वान : यह समूह में ज्योतिषी, पुरोहित तथा वैद्य सम्मिलित थे। वे किले जैसी इमारतों में निवास करते थे।

(2) अधिकारी : इस समूह में राजकीय कर्मचारी तथा सिपाही सम्मिलित थे। वे लोग नगरों में निवास किया करते थे।

(3) व्यापारी : इस समूह में व्यापारी, उद्योगपति, कलाकार तथा शिल्पकारों को सम्मिलित किया गया था। ये लोग नगरों के निचले भाग में निवास करते थे।

(4) श्रमिक : इस वर्ग में श्रमिक, किसान तथा मछुआरे सम्मिलित थे। वे नगर के बाहर स्थित झोंपड़ियों में रहा करते थे।

सिंधुघ ाटीव ेस मयअ ार्थिकद शा: सिंधुवासियों का मुख्य व्यवसाय कृषि था, परंतु कपड़ा बुनना, मिट्टी के बर्तन बनाना, आभूषण,ि खलौनेब नाना,प त्थरक ाटना,म ोहरेंब नाना,ब ढ़ईगिरी तथा लुहारगिरी आदि अन्य महत्त्वपूर्ण व्यवसाय भी इस सभ्यता के समयप्र चलनम ेंथ ो।ि मट्टीव ेब र्तनब नानेक ीक लाि वकसित अवस्था में थी क्योंकि खुदाई में विभिन्न आकारों तथा नमूने के सजावटी बर्तन मिले हैं। चरने वाले पशुओं; जैसे–भेड़, बकरी तथा भैंसों का पालन भी उनका दूसरा महत्त्वपूर्ण व्यवसाय था। हड़प्पा सभ्यताक ीम ोहरेंउ ल्लेखनीयए वंम हत्त्वपूर्णथ ीं।इ सस मयम ें व्यापार की एक विकसित प्रणाली थी। मोहनजोदड़ो एक व्यापारिक केंद्र था और अनेक व्यापारी वहाँ रहा करते थे।

(ii) विश्व में तीन उष्ण कटिबंध पाए जाते हैं, जिनका वर्णन निम्नलिखित है–

(क) अत्युष्ण कटिबंध : कर्क रेखा और मकर रेखा के मध्य भाग में वर्षभर सूर्य की किरणें सीधी पड़ती हैं, जिससे यह भाग अत्यधिक गर्मी प्राप्त करता है और अत्युष्ण कटिबंध कहलाता है। इसे उष्ण कटिबंध के नाम से भी जानते हैं।

(ख) शीतोष्ण कटिबंध : सूर्य की किरणें, उत्तरी गोलार्द्ध में कर्क रेखा, से उत्तरी ध्रुव वृत्त तक तथा दक्षिणी गोलार्द्ध में मकर रेखा से दक्षिणी ध्रुव वृत्त तक कभी भी लम्बवत् नहीं पड़ती, जिसके कारण इन भागों का ताप स्थिर रहता है और इस भाग को शीतोष्ण कटिबंध कहते हैं।

(ग) शीत कटिबंध : उत्तरी ध्रुव और दक्षिणी ध्रुव के भागों के समीप 66½° अक्षांश रेखा से ध्रुवों तथा सूर्य की किरणें बहुत तिरछी पड़ती हैं, जिससे यह क्षेत्र बर्फ से जमा रहता है तथा जलवायु शीत होती है। इन्हें शीत कटिबंध के नाम से जाना जाता है।

(iii) **राजतंत्र:** जब निर्णय लेने की सभी शक्तियाँ राजा या रानी में निहित होती हैं तो सरकार को राजतंत्र कहा जाता है। राजा शासन के मामलों में सलाहकारों की परामर्श ले सकता है, लेकिन अंतिम निर्णय उसी का होता है।

तानाशाही : जब सारी शक्तियाँ एक ही व्यक्ति के हाथों में निहित होती हैं, तो सरकार का स्वरूप तानाशाह सरकार कहलाता है। तानाशाह किसी भी प्रश्न का उत्तर देने के लिए बाध्य नहीं होता है। वह अपने निर्णयों को बलपूर्वक लागू कराता है। उदाहरण के लिए, जर्मनी का शासक अडोल्फ हिटलर ऐसा ही तानाशाह था।

प्रजातंत्र :प्र जातंत्र(लोकतंत्र)ज नताक ा,ज नताव ेलिएत था जनता के द्वारा शासन है। प्रजातंत्र में सरकार का निर्माण चुनाव के द्वाराह ोताह ै।ज नताअ पनेच हेतेन ेताओंक ोस ार्वजनिकव यस्क मताधिकार के आधार पर वोट देती है।

आदर्श प्रश्न-पत्र-II

रचनात्मक निर्धारण

1. सही विकल्प पर सही (✓) का निशान लगाइए :

(i) (d) निकिल तथा लोहा (ii) (a) पैमाना

(iii) (c) 360 (iv) (a) 21 जून को

(iv) (b) शहरी

2. सत्य या असत्य बताइए :

(i) सत्य (ii) सत्य (iii) असत्य

(iv) सत्य (v) असत्य

3. रिक्त स्थानों की पूर्ति कीजिए :

(i) सात (ii) ताप्ती (iii) महावीर

(iv) प्रजा (v) 70

4. निम्नलिखित को समझाइए :

(i) **मानक समय :** विशेष देशांतर के स्थानीय समय को मानक समय कहते हैं।

(ii) **लोथल :** हड़प्पा सभ्यता में गुजरात में लोथल मुख्य तथा महत्त्वपूर्ण बंदरगाह था।

(iii) **बहुविवाह :**उ च्चव र्गव ेल ोगोंअ थवार ाजाओंद ्वाराए कस े अधिक विवाह करने की प्रथा प्रचलित थी।

(iv) **ग्रामसभा :** ग्राम सभा की व्यवस्था ग्राम पंचायत के अंतर्गत होती है। गाँव का प्रत्येक वयस्क व्यक्ति ग्राम सभा का सदस्य होता है।

(v) **प्रवर्जन :** वह प्रक्रिया, जिसमें लोग नौकरी या व्यवसाय की तलाश में एक स्थान से दूसरे स्थान पर जाते हैं।

संकलित निर्धारण

1. एक पंक्ति में उत्तर :

(i) पृथ्वी 24 घंटे में अपनी धुरी पर एक पूरा चक्कर लगाती है, जिसे

पृथ्वी का घूर्णन कहते हैं।

(ii) क

(iii) सबसे प्राचीन वेद ऋग्वेद है।

(iv) वह जनपद, जिसका वंशानुगत शासन होता है, राजतंत्र कहलाता है।

(v) मेगस्थनीज सैल्युकस का राजदूत था।

(vi) सरकार के तीन स्तर होते हैं।

2. 5 पंक्तियों में उत्तर :

(i) पृथ्वी एक प्रकाशहीन ग्रह है, जो सूर्य के प्रकाश से प्रकाशित होती है। चूँकि यह अपनी धुरी पर घूमती है, इसलिए इसका जो आधा भाग सूर्य के सामने पड़ता है, वह प्रकाशित होता है तथा यह घटना दिन कहलाती है। इसके विपरीत, जिस आधे भाग पर प्रकाश नहीं पड़ता, वहाँ अंधेरा होता है तथा यह घटना रात कहलाती है। यह भौगोलिक प्रक्रिया लगातार चलती रहती है तथा दिन के पश्चात् रात तथा रात के पश्चात् दिन होता रहता है।

(ii) महाद्वीपों के चारों ओर स्थित विशाल जलराशि को महासागर कहते हैं। महासागरों में विश्व में विद्यमान कुल जल का 97 प्रतिशत भाग पायाज ाताह ै।प ृथ्वीप र प ाँचम हासागरह ैं,ि जनकेन ाम–प्रशांत महासागर, हिंद महासागर, अटलांटिक महासागर, आर्कटिक महासागरत थाअ ंटार्कटिकम हासागरह ै।प ्रशांतम हासागरि वश्व का सबसे बड़ा और सबसे गहरा महासागर है।

(iii) पूर्व वैदिक काल में समाज चार वर्णों में विभाजित था–ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य और शूद्र। ब्राह्मण दान लेने और देने के काम में लगे हुए थे। क्षत्रिय बहादुर थे तथा राज्य की रक्षा का भार उन्हीं के कंधों पर था। वैश्य लोग खेती तथा व्यापार करते थे। शूद्रों का मुख्य कार्य इन तीनों वर्णों की सेवा करना था।

जाति प्रथा बहुत क्लिष्ट थी। समाज दो जातियों में बँटा हुआ था–आर्य तथा अनार्य। आर्य, अनार्यों को घृणा की दृष्टि से देखते थे। इस काल में अंतर्जातीय विवाह भी प्रचलित थे।

(iv) महाजनपदों के शासक अधिकांशत: प्रजातंत्रात्मक ढंग से शासन चलाते थे। अपने राज्यों की रक्षा करने के लिए उनके पास विशाल सेनाएँ होती थीं। महाजनपदों को नियंत्रित करने के लिए उनके पास विभिन्न प्रकार के मंत्री होते थे। प्रशासन में ब्राह्मणों का महत्त्वपूर्ण स्थान था। राजा उन्हें कर मुक्त गाँव भेंट करता था। राजा के नियंत्रण में गाँव का प्रशासन गाँव का मुखिया चलाता था। महाजनपद के प्रशासन का केंद्र राजधानी नगर हुआ करता था।

(v) सरकार का निर्माण करने के लिए देश के मतदाता मतदान के द्वारा प्रतिनिधियोंक ाच ुनावक रतेह ैं।य ेि नर्वाचितस दस्यस रकारक ा गठनक रतेह ैं।इ सत रहि नर्मितस रकारक ोप जातांत्रिकस रकार कहते हैं।

प्रजातांत्रिक सरकार जनता की सरकार है। सहभागिता और स्वतंत्रता प्रजातांत्रिक सरकार के दो महत्त्वपूर्ण कारक हैं।

3. 10 या 12 पंक्तियों में उत्तर :

(i) वायु में विभिन्न घनत्वों के कारण वायुमंडल को कई परतों में बाँटा गया है। वायुमंडल की चार स्पष्ट परतें निम्नलिखित हैं–

(क) क्षोभमंडल : यह परत धरातल के सबसे निकट की परत है तथा इसका विस्तार समुद्र तल से ऊपर की ओर 15 किमी तक है। इसमें जलवावाष्प, धूल कण तथा आर्द्रता आदि सीमित हैं।

(ख) समतापमंडल : यह परत समुद्र तल से 15 किमी तथा 50 किमी की ऊँचाई के बीच विस्तृत है। इसमें कोई जलवाष्प, धूल कण एवं बादल आदि नहीं पाए जाते। इसे ओजोन गैस की अधिकता के कारण ओजोन संपन्न परत भी कहते हैं।

(ग) आयनमंडल : य हप रतब हिर्मंडलअ ौरस मतापमंडलव ेके बीच स्थित है। यह परत 60 किमी से 400 किमी की ऊँचाई तक सीमित है।

(घ)त ापमंडल: यह आयनमंडल के बीच की परत है तथा

इसका तापमान 100° से. से अधिक होता है।

(ii) मौर्य काल में लोगों का मुख्य व्यवसाय खेती था। इसके अतिरिक्त व्यापार, धातु कर्म, बुनाई, पशुचारण तथा विभिन्न प्रकार की शिल्पकारी भी जीविका के साधन थे। मौर्य साम्राज्य में आय के मुख्य साधन विभिन्न प्रकार के कर थे। करों से प्राप्त धन को योजनाओं, विकास कार्यों, सरकारी कर्मचारियों के वेतन, दान आदि पर खर्च किया जाता था।

तक्षशिला, पाटलिपुत्र, उज्जैन और भड़ौच भारत में व्यापार के मुख्य केंद्र थे। जबकि रोम, मिस्र, चीन, श्रीलंका विदेश स्थित व्यापारिक केंद्र थे। मेगस्थनीज सैल्युकस का राजदूत था, जो लगभग 6 वर्ष तक चंद्रगुप्त मौर्य के दरबार में रहा। मेगस्थनीज के अनुसार, ''उस समय के महल सोने-चाँदी से बने थे तथा जिन अवसरों पर सम्राट प्रजा से मिलता था, वे आलीशान शाही जुलूसों के रूप में मनाए जाते थे एवं राजा को सोने की पालकी में ले जाया जाता था।''

(iii) धार्मिक जुलूस, शोभायात्राएँ और समारोहों का आयोजन विवादों के स्रोत हो सकते हैं। कभी-कभी किसी धर्म विशेष की शोभा यात्रा किसी अन्य धर्म को मानने वाले लोगों की गली से गुजरती है, जिससे अनायास ही तनाव या विवाद बढ़ जाता है। जुलूस या शोभा यात्रा पर लोग पत्थर फेंक सकते हैं या हिंसा भड़का सकते हैं। ऐसे में पुलिस शांति व्यवस्था कायम करने में अहम भूमिका निभाती है। जब किसी नदी का जल दो या तीन राज्यों से होकर बहता है तो जल का बँटवारा विवाद का कारण बनता है। उदाहरण के लिए- दक्षिण भारत में कावेरी नदी कर्नाटक और तमिलनाडु राज्यों से होकर बहती है और जल का बँटवारा इन राज्यों के मध्य विवाद का कारण बना, जिसे केंद्र सरकार ने निपटाया।

आदर्श प्रश्न-पत्र-III

रचनात्मक निर्धारण

1. सही विकल्प पर सही (✓) का निशान लगाइए :

(i) (b) 364 1/4 (ii) (b) के-2 (iii) (a) ऋग्वेद

(iv) (c) 263 ई.पू. (v) () न

(vi) (b) डॉ. आर. डब्ल्यू गिलक्रिस्ट

(vii) (a) 2005

2. निम्नलिखित को सही मिलान कीजिए :

'अ'	'ब'
सुंदरवन	भारत का सबसे बड़ा डेल्टा
लू	बहुत गर्म व शुष्क हवा
जैन धर्म	महावीर स्वामी
साँची का स्तूप	मध्य प्रदेश
बी.डी.ओ.	ब्लॉक समिति का प्रधान

3. खाली स्थान भरिए :

(i) मालवा (ii) सुंदरवन (iii) मैरी

(iv) सिमुक (v) आधारित

4. ऐसा क्यों है? :

(i) राष्ट्रीय पशु 'बाघ' के संरक्षण के लिए भारत सरकार ने 1973 ई. में बाघ परियोजना को शुरू किया था।

(ii) इस सभ्यता में पॉटरी विकसित अवस्था में थी, क्योंकि खुदाई में विभिन्न आकारों तथा नमूनों के सजावटी बर्तन मिले हैं।

(iii) अरिकमेदु में वस्त्रों को रँगने के लिए, निकट स्थानों में छोटे तालाब पाए गए हैं।

(iv) काम की तलाश में ग्रामीण शहरों की ओर पलायान करते हैं।

5. निम्नलिखित में विभेद कीजिए :

(i) अयनकाल और विषुव

अयनकाल	विषुवकाल
वह समय जब सूर्य भूमध्य रेखा से अधिकतम दूरी पर रहता है, अयनकाल कहलाता है।	21 मार्च तथा 23 सितंबर की तिथियाँ जब दिन-रात समान अवधि के होते हैं, विषुव कहलाता है।

(ii) श्वेताम्बर और दिगाम्बर

क्र.सं.	श्वेताम्बर	दिगाम्बर
1.	ये लोग नंगे नहीं रहते हैं तथा सफेद वस्त्र धारण करते हैं।	ये लोग नंगे रहते हैं।
2.	ये जैन धर्म की मूल शिक्षाओं में विश्वास नहीं करते हैं।	ये जैन धर्म की मूल शिक्षाओं में विश्वास करते हैं।
3.	इसके प्रवर्तक स्थूलभद्र थे।	इसके प्रवर्तक बाहुभद्र थे।

(iii) एकता और अनेकता

एकता	अनेकता
अनेक विभिन्नताओं के होते हुए भी सभी मनुष्यों का एक साथ मिलकर रहना एकता कहलाता है।	अनेक विभिन्निताओं का होना; जैसे-विभिन्न धर्म, कुल, वंश, जाति आदि अनेकता कहलाता है।

(iv) ग्राम सभा और ग्राम पंचायत

ग्राम सभा	ग्राम पंचायत
गाँव का प्रत्येक वयस्क व्यक्ति ग्राम सभा का सदस्य होता है। ग्राम सभा के सदस्य पंचों और सरपंच का चुनाव करते हैं।	ग्राम पंचायत का मुखिया ग्राम प्रधान होता है, जिसका चुनाव ग्राम सभा के सदस्य मतदान के द्वारा करते हैं।

संकलित निर्धारण

1. एक पंक्ति में उत्तर :

(i) के-2

(ii) **मौसम :** वायुमंडल में प्रतिदिन होने वाले परिवर्तन को मौसम कहते हैं।

जलवायु : किसी क्षेत्र विशेष की अधिक लंबी अवधि की वायुदशाओं; जैसे–तापमान, वायुदाब, वायु वेग, दिशा, बादल, धूप, वर्षा तथा आर्द्रता की औसत अवस्था जलवायु कहलाती है।

(iii) फाह्यान चीनी यात्री था। वह 405 ई. में भारत भ्रमण पर आया था।

(iv) जैन धर्म के त्रिरत्न–सम्यक् ज्ञान, सम्यक् दर्शन और सम्यक् चरित्र।

(v) अपनी समस्याओं पर विचार करने के लिए तथा उनका समाधान खोजने के लिए लोग एक साथ इकट्ठा होते हैं और मिल-जुलकर निर्णय लेते हैं। इसे स्थानीय स्वशासन कहते हैं।

2. 5 पंक्तियों में उत्तर :

(i) भारत के पश्चिम में बहुत विस्तृत रेगिस्तान है। इसे थार का रेगिस्तान कहते हैं। इसका निर्माण सूखे और गर्म रेत से हुआ है। वनस्पति के नाम पर यहाँ अधिकतर कँटीली झाड़ियाँ पाई जाती हैं। यह बहुत ही कम उपजाऊ है, इसीलिए जनसंख्या का घनत्व निम्न है।

(ii) सदाबहार वन सदा हरे-भरे बने रहते हैं तथा वृक्षों की सघनता के कारण सूर्य की किरणें धरातल तक नहीं पहुँचतीं तथा यहाँ वार्षिक वर्षा का औसत लगभग 200 सेमी है। इसलिए इन वनों को उष्ण कटिबंधीय वन कहा जाता है।

(iii) भगवान बुद्ध ने मनुष्यों के दु:खों का निवारण करने के लिए उन्हें अष्टांगिक मार्ग का उपदेश दिया। ये अष्टांगिक मार्ग निम्नलिखित हैं–

(1) सम्यक् दृष्टि (5) सम्यक् जीविका
(2) सम्यक् संकल्प (6) सम्यक् प्रयत्न
(3) सम्यक् वचन (7) सम्यक् विचार
(4) सम्यक् कर्म (8) सम्यक् स्मृति।

(iv) **गुप्तकाल में साहित्य :** गुप्तकाल में साहित्य की उन्नति बड़े पैमाने पर हुई। चंद्रगुप्त विक्रमादित्य का दरबारी कवि कालिदास संस्कृत का महान कवि था। उसने संस्कृत साहित्य में अनेक प्रसिद्ध एवं महत्त्वपूर्ण ग्रंथों की रचना की। उसकी संस्कृत भाषा की उत्कृष्ट रचनाओं में अभिज्ञानाशाकुंतलम, मेघदूत, कुमारसम्भव, ऋतुसंहार, मालविकवग्निमित्र प्रमुख हैं।

गुप्तकाल में विज्ञान : गुप्तकाल में विज्ञान की भी बहुत उन्नति हुई। गणित तथा औषधि विज्ञान के क्षेत्रों में बहुत खोजें हुईं। आर्यभट्ट ने सिद्ध किया कि पृथ्वी सूर्य के चारों ओर अपने अक्ष पर घूमती है। उसने शून्य का भी आविष्कार किया, जिसने गणित में महत्त्वपूर्ण भूमिका अदा की। चंद्रगुप्त विक्रमादित्य के दरबार में नवरत्नों में वराहमिहिर नाम का वैज्ञानिक भी था। उसने पर्यावरण, जल एवं भूगर्भ संबंधी बहुत-से वैज्ञानिक प्रयोग एवं प्रेक्षण किए। धन्वन्तरि एक प्रसिद्ध एवं बुद्धिमान वैद्य था, जो अनेक बीमारियों का निदान करने की औषधि तैयार किया करता था।

(v) **ग्राम पंचायत के कार्य :**

(1) सार्वजनिक मार्गों, सड़कों का निर्माण, मरम्मत तथा रख-रखाव।

(2) स्ट्रीट लाइट, सफाई, अस्पताल, जलापूर्ति, जल निकासी, तालाबों का निर्माण, प्राथमिक शिक्षा, मेलों तथा पैठ बाजार आदि की व्यवस्था करना।

(3) जन्म तथा मृत्यु का ब्यौरा रखना।

(4) सहकारी खेती तथा कृषि के विकास के लिए प्रयास करना।

(5) ग्राम सभा की संपत्ति; जैसे–तालाब, नाले, नलों, पंचायत भवन, बीज गोदाम, सहकारी समिति आदि की देखभाल एवं रख-रखाव करना।

3. 10 या 12 पंक्तियों में उत्तर :

(i) समुद्र के पश्चिमी और पूर्वी तटों के समीप प्रायद्वीप भारत में समुद्री लहरों की क्रिया तथा नदियों द्वारा लाए गए निक्षेपों से निर्मित मैदान तटीय मैदान कहलाते हैं। ये तटीय मैदान पश्चिमी घाट के पश्चिमी में तथा पूर्वी घाट के पूर्व में स्थित हैं। पश्चिमी तटीय मैदान गुजरात, कोंकण, मालाबार तथा कच्छ की दलदली भूमि में फैले हुए हैं। पूर्वी तटीय मैदान पश्चिमी तटीय मैदान की अपेक्षा ज्यादा चौड़े हैं तथा गंगा के मुहाने से कुमारी अंतरीप तक फैले हैं। महानदी, गोदावरी, कृष्णा आदि नदियाँ इसके निचले भाग में बहकर डेल्टाओं का निर्माण करती हैं। चिल्का तथा पुलीकट झीलें, जो लैगूनों के अच्छे उदाहरण हैं, भी इसी मैदान में स्थित हैं। उत्तरी बंगाल इसका उत्तरी भाग तथा दक्षिणी भाग कोरोमंडल तट कहलाता है।

(ii) **बौद्ध धर्म की शिक्षाएँ निम्नलिखित हैं–**

(1) वह भोजन, मनोरंजन और बलि के लिए पशु वध के विरुद्ध थे।

(2) उन्होंने जातिवाद का बहिष्कार किया तथा समानता के सिद्धांत

पर जोर दिया।

(3) वह सत्य विचार के पक्ष में थे।

(4) वह विश्वास करते थे 'जैसे तुम बोओगे, वैसा तुम काटोगे'।

(5) वे दु:ख के पुनर्जन्म में विश्वास करते थे, आत्मा के पुनर्जन्म में नहीं।

(6) बुद्ध के अनुसार प्रत्येक वस्तु नश्वर है तथा समान रूप से परिवर्तनीय है।

(7) उन्होंने उपदेश दिया था कि मनुष्य को नृत्य, सुगंध, असमय भोजन ग्रहण, कोमल बिस्तर और सम्पत्ति परिग्रह का त्याग करना चाहिए।

(iii) **पंचायती राज व्यवस्था :** पंचायतों द्वारा स्थानीय प्रशासन की व्यवस्था, पंचायती राज व्यवस्था कहलाती है। पंचायती राज व्यवस्था के तीन स्तर हैं–(a) गाँव स्तर पर पंचायत, (b) खंड (ब्लॉक) स्तर पर पंचायत, (c) जिला स्तर पर पंचायत।

(अ) ग्राम पंचायत : इसके अंतर्गत ग्राम सभा, ग्राम पंचायत और न्याय पंचायतों की व्यवस्था है।

ग्राम सभा : गाँव का प्रत्येक वयस्क व्यक्ति ग्राम सभा का सदस्य होता है। यह 5 वर्ष तक कार्य करती है।

ग्राम पंचायत : ग्राम पंचायत का मुखिया ग्राम का प्रधान होता है, जिसका चुनाव ग्राम सभा के सदस्य मतदान के द्वारा करते हैं।

न्याय पंचायत : इसे गाँव की अदालत कहते हैं। इसके मुखिया को सरपंच तथा सदस्यों को पंच कहते हैं। ग्राम सभा इनका चुनाव करती है।

(ब) ब्लॉक समिति : खंड (ब्लॉक) स्तर पर स्थानीय स्वशासित संस्थाएँ ब्लॉक समिति या पंचायत समिति कहलाती हैं। यह स्थानीय स्वशासन का मध्य स्तर है। एक ब्लॉक समिति में कई ग्राम सभा और ग्राम पंचायतों को सम्मिलित किया जाता है। ब्लॉक समिति का

कार्यकाल 5 वर्ष का होता है। खंड के प्रशासनिक अधिकारी को खंड विकास अधिकारी कहते हैं।

(स) जिला परिषद : यह पंचायती राज व्यवस्था का तीसरा एवं महत्त्वपूर्ण स्तर है। जिले की सारी पंचायत समितियाँ जिला परिषद में सम्मिलित होती हैं। इसीलिए यह स्थानीय स्वशासन का सर्वोच्च स्तर है। इसका कार्यकाल 5 वर्ष है।

4. भारत के पड़ोसी देशों को पहचानिए और उनका नाम लिखिए :

नेपाल, म्यांमार, पाकिस्तान, भूटान, अफगानिस्तान, श्रीलंका, थाइलैंड, चीन, बांग्लादेश।